हर आन कस की दीर[illegible]दीन
पस अज् मर्ग बर मन कुनद आफरीन

(हर वह व्यक्ति जो साहित्य को परखने की दृष्टि
रखता है, वह मेरे मरने के बाद भी मेरे
कृत्य की प्रशसा अवश्य करेगा।)

विश्व के महान् कवि और चितक
फिरदौसी का जन्म ईरान के एक
खेती करने वाले परिवार मे १०वी शती
मे हुआ था। वह प्रखर मेधा के धनी थे।
उन्होंने शाहनामा जैसे महाकाव्य
की रचना की। ६०,००० शेरो की
यह कालजयी कृति आज लगभग हजार
साल बाद भी विश्व भर मे चर्चित
है और इसके बृहदाकार के
कारण इसकी तुलना होमर के
'इलियड' तथा महर्षि वेद व्यास के महाभारत
से की जा सकती है। शाहनामा मे
इसानियत, श्रेष्ठ जीवन, गुण-अवगुण तथा
स्त्री जाति के पक्ष मे विचार दिए गए हैं।
हिन्दी की प्रख्यात लेखिका नासिरा
शर्मा ने सरस और रोचक शैली मे
फिरदौसी तथा 'शाहनामा के परिचय दिये हैं।

विश्व चिंतन सीरीज

प्लेटो संवाद	प्रस्तुति बद्रीनाथ कौल
नीत्शे जरथुस्त्र ने कहा	प्रस्तुति मुद्राराक्षस
मकियावेली शासक	प्रस्तुति शशिप्रभ
शेख सादी गुलिस्तां	प्रस्तुति रामकिशोर सक्सेना
सार्त्र शब्दों का मसीहा	लेखन डा॰ प्रभा खेतान
कन्फ्यूशियस महान् गुरु	लेखन डा॰ विनय
खलील जिब्रान पैगम्बर	प्रस्तुति डा॰ नीलिमा सिंह
बर्ट्रेंड रसल युगद्रष्टा	प्रस्तुति डा॰ दुर्गा पत
थोरो वाल्डेन	प्रस्तुति डा॰ रामचन्द्र तिवारी
	डा॰ सुदर्शन पुरी
फिरदौसी शाहनामा	प्रस्तुति नासिरा शर्मा

हिन्द पॉकेट बुक्स

फ़िरदौसी

शाहनामा

प्रस्तुति : नासिरा शर्मा

भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

फिरदौसी शाहनामा
(जीवन व चिंतन)

प्रथम संस्करण १९९०
प्रकाशक
हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
पो० बॉक्स—६०२०
शाहदरा दिल्ली ११००३२
मुद्रक
जैन कम्पोजिंग एजेन्सी
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

FIRDAUSI (Life and thought)
by NASIRA SHARMA

ISBN—81-246-0147 9

अनुक्रम

फ़िरदौसी
जीवन और शाहनामा

जिस शायर को समय ने नकारते हुए तूस के क़ब्रिस्तान मे दफन होने की इजाजत महज इसलिए नही दी कि वह काफिर शिया है, हज़ार वर्ष बाद आज उसकी आरामगाह पर दर्शको का मेला लगा हुआ है। साठ हज़ार शेरो को महाकाव्य मे ढालने वाला अबू अल कासिम हसन बिन अली तूसी (फिरदौसी) एक खुशहाल खेतिहर परिवार (३२३ हिज्री कमरी) मे पैदा हुआ था। इसीलिए शाहनामा की कई दास्तानो के शुरू मे फिरदौसी अपने लिए दहकान (ग्रामवासी) शब्द का प्रयोग करते हुए लिखते हैं कि अब इस दहकान से यह कहानी सुनो।

जो कहानी फिरदौसी कविता द्वारा शाहनामा के काव्यखण्डो मे निरन्तर सुनाते चले जाते हैं, वह वास्तव मे ईरान का इतिहास है जिसके आरम्भ मे उन्होने खुदा की तारीफ की है और उसकी बनाई चीज़ो जैसे चन्द्र एव सूर्य की प्रशसा की है। पैगम्बर और उनके मित्रो का ज़िक्र किया और इसके बाद बताया कि शाहनामा रचने का खयाल उनको क्योकर आया। इस बात की व्याख्या करते हुए वह ईरान के प्रसिद्ध कवि दकीकी का ज़िक्र करना नही भूलते हैं जिन्होने शाहनामा को 'गशतासब नामा' के नाम से लिखना शुरू किया था, मगर अपने ही गुलाम के हाथो कत्ल हो जाने के कारण वह काम अधूरा छूट गया। उसको जब फिरदौसी ने पढा तो उस काम को पूरा करने का प्रण किया। इसके बाद अबू मंसूर बिन मोहम्मद और सुल्तान महमूद के प्रशसा-गान के बाद वास्तव मे शाहनामा की शुरु-

आत होती है जिसका शीर्षक है 'ईरान का पहला बादशाह क्यूमर्स जिसका राज तीस वर्षों तक चला' यानी शाहनामा की शुरुआत ईरानी नस्ल के आरम्भ से होकर सासानी काल के पतन पर जाकर समाप्त होती है।

शाहनामा को तीन भागो मे बाटा जा सकता है। पहला वह जो लोक-साहित्य पर आधारित है, दूसरा वह जो काल्पनिक अफसानो पर है और तीसरा वह जो ईरान का इतिहास है। इस महाकाव्य मे फिरदौसी को अमर बनाने वाली कालजयी रचनाए हैं जो आज बार-बार पढी और गाई जाती है। जिसमे दास्तान ए-बीजन व मनीजा, सियावुश व सुदाबे, रदाबे व जालजर, रुस्तम व सोहराब, शतरज की पैदाइश, शाह बहराम के किस्से, सिकन्दर व कैद, जहाक व कावेह आहगर इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

अरबो की सत्ता का ध्वज जब ईरान पर फहराने लगा, तो ईरानी बुद्धिजीवियो के सामने भारी सकट आन खडा हुआ कि आखिर इस विदेशी सत्ता के साथ, वे कैसा व्यवहार करें। इसी मुद्दे पर ईरानी बुद्धिजीवी वर्ग दो भागो मे बट गया। एक वर्ग वह था जो अरबी भाषा के बढते सरोकार को पूर्णतया दरबार, धार्मिक स्थलो और जनसमुदाय मे पनपता देख रहा था और सोच रहा था कि इस तरह से ईरानी भाषा और साहित्य का कोई नामलेवा नही बचेगा। शायद ईरानी विचार की भी गुजाइश बाकी नहीं बचेगी और अरबी भाषा के साथ अरब विचार भी ईरानी दिल व दिमाग पर छा जायेंगे। इसलिए जरूरी है कि भाषा के झगडे मे न पडकर ईरानी सोच को जीवित रखा जाए। इस वर्ग के ईरानी लेखक बडी सख्या मे अरबी भाषा मे अपना लेखन-कार्य करने लगे और दरबार एव विभिन्न स्थलो पर महत्त्वपूर्ण पद भी पाने लगे।

दूसरा वर्ग पूर्ण रूप मे अरब सत्ता मे बेज़ार था। वह उसकी तरफ पीठ घुमाकर अपनी भाषा-साहित्य के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो उठा। ईरानी संस्कृति और इतिहास को बचाने और सजोने की तीव्र इच्छा उसमे मचल उठी। सत्ता के विरोध मे वह तलवार लेकर खडा तो नही हो सकता था मगर वर्तमान को नकारते हुए भविष्य के लिए जरूर कुछ रच सकता था। इस श्रेणी के बुद्धिजीवियो मे सबसे पहला नाम है फिरदौसी का जिन्होंने स्वय स्वीकार किया है कि—

बसी रज मे बुर्दम दर इन साल सी
अजम जिन्दा करदम बेदिन पारसी

यानी तीस वर्ष की अनथक कोशिशो से मैंने यह महाकाव्य रचा है और फारसी ने अजम (गूगा) को अमर बना दिया है। यहा अजम शब्द की व्याख्या करना जरूरी हो जाता है। अरबी भाषा का उच्चारण चूकि हलक पर ज़ोर देकर होता है, तो उसकी ध्वनि मे एक तेज़ी और भारीपन होता है जबकि फारसी भाषा मे उच्चारण करते हुए अधिकतर जीभ के मध्य भाग और नोक का प्रयोग होता है जिससे शब्द मुलायम व सुरीली ध्वनि लिए निकलते है। इतनी मद्धिम ध्वनि सुनने की आदत चूकि अरबो को नही थी, इसलिए उन्होंने उपेक्षा भाव से ईरानियो को गूगा कहना शुरू कर दिया था।

फिरदौसी आगे कहते हैं कि—

न मीरम अज़ इन, पस की मन जिन्देअम
कि तुख्मे सुखन रा पराकन्दे अम

यानी मैं कभी मरूगा नही, क्योकि मैंने फारसी शायरी के जो बीज बिखेरे है, वे दुनिया के रहने तक लहलहाते रहेगे और मैं उनके कारण सदा जीवित रहूगा।

□□

खुरासान प्रात की राजधानी मशहद से कुछ दूर पर नीशापुर मे फिरदौसी तूसी की कब्र थी। मशहद पहुचकर आरामगाह ए-फिरदौसी पर जाना न हो सके, एसा तो हो नही सकता था। इसलिए ईरान तूर की बस पर बैठी मैं (१९७६ मे) उस महान् कवि के बारे मे सोच रही थी जिसके सदर्भ म कई ददनाक कहानिया मशहूर हैं, जिन्हे शाहनामा पर काम करने वाले शोधकर्ता अपनी-अपनी दृष्टि से उद्धत करते रहते हैं। जैसे सुल्तान महमूद ने फिरदौसी को अपने वायदे के मुताबिक प्रत्येक शेर पर सोने की दीनार नही दी, जिससे फिरदौसी रुष्ट हुए और क्रोध म आकर उन्होने सुल्तान की निदा-गाथा लिख डाली। मगर उनके दोस्त न उसको फाड डाला और उनके शत्रुओ का रचाया षडयत्र कामयाब नही होने दिया। शाह तक उनकी रसाई कराई गई। कुछ का कहना है कि सुल्तान ने फिरदौसी को इतना कम धन दिया कि उनके आत्म-सम्मान को गहरी चोट

लगी। दुखी से वह हमामखाने गये और बदन की मालिश करने वाले को उसकी मजदूरी मे वह धन दे दिया। नहा धोकर वह हमामखाने से अपने एक मित्र के घर गए और बाकी के दिन वही काट दिए।

कुछ शोधकर्ताओ का लिखना है कि फिरदौसी ने चालीस वर्ष की आयु मे (३८० हिज्री कमरी मे) शाहनामा रचना आरम्भ किया और ४०० हिज्री कमरी मे उसे समाप्त किया। वे ३६३ हिज्री कमरी म सुल्तान महमूद के दरबार मे हाजिर हुए। यह वह दौर था, जब फिरदौसी न अपनी जमा पूजी शाहनामा लिखने मे खर्च कर दी थी और दाने-दाने को मोहताज हो गए थे। उस समय उनको अपनी गरीबी से छुटकारा पाने की केवल एक राह नजर आई कि शाहनामा को वह महमूद बिन नासिर उद्दीन सुबुक्तगीन के नाम कर दें। वह सुल्तान महमूद के पहले वजीर, अहमद इसफरायनी के जरिए दरबार म पहुचे। सुल्तान सुन्नी था और शाहनामा शिया शाहो के *प्रशंसा-गान* से भरा हुआ था। यह देखकर सुल्तान की भवो पर बल पड गए और उसने अत्यधिक उपेक्षा भाव स सोने की दीनार की जगह दरहम दी। फिरदौसी के आक्रोश ने उन्हे गजनी शहर छोडने पर मजबूर कर दिया और वह खुरासान चले गए। उन्होने छ मास इस्माइल वराक के यहा गुजारे जो अजरकी नामक कवि के पिता थे। उसके बाद वह तबरिस्तान की तरफ बढ गए। आलबावन्द के हाकिम के पास गए और वहा जाकर एक लम्बी हज्व (निंदा कविता) लिखी। चूकि आलबावन्द का हाकिम फिरदौसी की इज्जत करता था इसलिए उसने वह हज्व फिरदौसी से खरीद ली और उसको धो डालने का हुक्म दिया ताकि फिरदौसी किसी परेशानी म न पड जायें। फिरदौसी यहा से माजनदरान की तरफ बढ गए और वहा से खुरासान की तरफ लौट आए। बाकी जिन्दगी उन्होने अपने गाव मे ही बिताई और ४११ या ४१६ हिज्री कमरी में इस समार से विदा हुए।

कुछ शोधकर्ताओ ने इसके बाद की घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि फिरदौसी का इकलौता बेटा भी मर गया। बेटी अपने शौहर के घर थी। फिरदौसी गरीबी और बेचारगी से अपने दिन गुजार रहे थे। इसी बीच सुल्तान को किसी ने बताया कि शाहनामा एक अमर हो जाने वाली कृति है। आपका व्यवहार उसके प्रति ऐसा होना चाहिए, ताकि तारीख

आपको याद रखे। सुल्तान को अपनी चिन्ता सताने लगी। उन्होने साने की ६०,००० दीनारें ऊटो पर लदवाकर फिरदौसी के पास भेजी। जब यह सम्मान फिरदौसी के घर की चौखट पर पहुचा, तो उसी समय फिरदौसी का जनाजा निकल रहा था। सोचा गया कि अब यह धन बेटी को दिया जाना चाहिए। बेटी न यह कहकर उसे लेने से इकार कर दिया कि जब मेरे पिता ने इसको अपने जीवन म स्वीकार नही किया, तो इस पर मेरा अधिकार कैसे हो सकता है।

ये अफसाने कितने सच्चे है, इसे परखने और उस पर बहस करन से बेहतर है कि हम उस सत्य को जानें और पहचानें जो महाकाव्य के रूप मे हमारे सामने है।

□□

फिरदौसी के मजार पर

मशहद से नीशापुर का रास्ता सरसब्ज था, दिमाग फिरदौसी क बारे मे सोच रहा था। ईरान तूर की बस रुकी और सारे मुसाफिर उतरे। कुछ दूर पैदल चलकर आरामगाह-ए फिरदौसी के दरवाजे पर पहुची। चन्द सीढिया चढकर बाग का फैलाव बाहे पसारे हुए था।

फिरदौसी की सगमरमर की बडी-सी मूर्ति बाग के एक भाग म थी जिसके सामने खडे होकर लोग लगातार तस्वीरें खिचवा रहे थे। सामने फिरदौसी की कब्र का ऊचा चबूतरा था। उसकी दीवारा पर शेर लिखे हुए थे। हजार वष पहले जब इस महान कवि की लाश को कब्रिस्तान मे जगह नही मिली, तो यह बगीचा अपने मालिक की लाश अपने सीन मे छुपाने के लिए मजबूर हो गया था। उस समय किसे पता था कि आगे चलकर यही नन्हा बगीचा, जिसमे शायर दफन है, एक बडे बाग मे बदल जायगा और ईरानियो के साथ फ़ारसी भाषा एव साहित्य प्रेमियो के लिए यह जगह सबसे प्रिय दशन स्थल बन जायेगी।

चबूतरे के नीचे तहखाने मे रुस्तम के 'हफ्तखान' के किस्से बादामी पत्थर की दीवारों पर खुदे थे। कही वह सफेद दैत्य से लड रहा है तो कही

गदा उठा रहा है। कहा जाता है कि रुस्तम की एक बाहु की मछलियां की गिनती अस्सी थी। उसका जिस्म जितना बलवान् था दिल उतना ही नम्र। वास्तव मे रुस्तम जहा शाहनामा का सबसे वीर पहलवान और महत्त्वपूर्ण योद्धा है, वही पर वह सच्चे इसान का प्रतिनिधित्व करता है जो अधेरे से लडकर रोशनी के पैरो की जजीरें काटता है। इसीलिए शाहनामा का यह पात्र केवल ईरान मे ही नही, वरन सर्वव्यापी सम्मान का अधिकारी है। हाफिज खय्याम, सादी जैसे कवियों की आरामगाहो की तरह इस बाग मे एक पुस्तकालय भी था जिसमे फिरदौसी पर हुए शोध एव शाहनामा की, विभिन्न आकारो मे छपी प्रतिया बडे पमाने पर रखने का विचार चल रहा था।

१९७५ मे जश्नवार एन्तूस (तूस महोत्सव) खत्म हुआ था। दानिश मन्दो का यह मेला आरामगाह ए-फिरदौसी पर लगा था। शाहनामा ईरानी राष्ट्रीयता की भावना का प्रतीक माना गया है, अत सभी आदर-भाव से इसके आगे सिर झुकाते है। कहते हैं कि जब फिरदौसी का जन्म हुआ तो उसके पिता मौलाना अहमद फखरुद्दीन ने सपना देखा कि फिरदौसी छत पर खडे होकर एक दिशा की ओर कुछ बोलते है और उसकी प्रतिध्वनि पलटकर वापस आती है। यही हाल बाकी तीनों दिशाओ की ओर बोलने मे हुआ और हर बार फिरदौसी की आवाज की प्रतिध्वनि गूजी। सुबह जब वह उठे तो इस अजीबो-गरीब सपने का बयान किया। इसे सुनकर बुद्धिमान लोगो ने कहा कि जरूर आपका बेटा एक ऐसा शायर होगा जिसकी शोहरत एव लोकप्रियता का डका चारो दिशाओ मे बजेगा।

शाम हो रही थी। मशहद लौटने का समय नजदीक था। हम सारे फारसी भाषा एव साहित्य के विद्यार्थी एक अजीब अहसास मे डूबे लौटने की तयारी करने लगे। वर्षों पहले, फिरदौसी से साक्षात्कार का वह पहला अनुभव बेहद शायराना था जिसमे सिर्फ मिठास थी। आज उन यादो के बीच अनुभव का नया कालखण्ड उभर आया है जिसने शब्दो की मिठास को तो कम नही किया है, मगर उसे एक ठोस विस्तार अवश्य दे दिया है। आज जब मैं ईरान के पिछले बारह वर्षों को और शाहनामा को एक साथ रखकर देखती हू, तो महसूस होता है कि शाहनामा उस समय एक सियासी

अकुश के बीच विरोधी सत्ता को नकारने की भावना से लिखी एक ऐसी कृति थी जो भाषा की दृष्टि से खालिस फ़ारसी है, जिसमे अरबी भाषा के सुदर शब्दों से जान-बूझकर परहेज़ किया गया है। इस बात का अहसास ईरान के अन्तिम बादशाह रज़ा शाह पहलवी को भी था, जो अपने को आयमेहर कहलाना पसन्द करते थे। अरबो की तलवार के ज़ोर पर ईरानिया ने भले ही इस्लाम धम कबूल कर लिया और तीन सौ वर्षों की अरब सत्ता मे रहने के कारण फारसी लिपि भी बदलकर अरबी लिपि अपना ली थी, मगर वे अपना ईरानीपन कभी नही भूल पाए और अरबो को शत्रुता की नजर म आज भी दखते है।

शाहनामा पर शोध

रज़ा शाह पहलवी ने फारसी भाषा को खालिस बनाने के लिए 'फरहगिस्तान' नाम से एक सस्थान खुलवाया था, जिसका काम था फारसी भाषा मे प्रयुक्त अरबी भाषा के शब्दो को निकालकर उनकी जगह फारसी के शब्दों को इस तरह जडना कि वह भाषा को सुदर प्रवाह दें, और बोलने मे जल्द से जल्द जबान पर चढ जायें। इसी तरह, प्राचीन साहित्य को सजोने और उसको आसान बनाकर आम आदमी तक पहुचाने के लिए उन्होने एक सस्थान 'बुनियाद-ए फरहग एे-ईरान' के नाम से स्थापित किया था, जो हर बडी कृति को लेकर सक्षेप रूप मे छोटी छोटी पुस्तकें छापता था ताकि मामूली आदमी भी अपने प्राचीन साहित्य को पढ सके।

फ़िरदौसी के 'शाहनामा' पर भी शोध कराने के लिए 'बुनियाद ए-शाहनामा' नामक सस्थान शुरू हुआ था, जिसका काम फिरदौसी के ६०,००० शेरो को जहा सिलसिलेवार तरतीब देना था, वही फिरदौसी द्वारा वर्णित स्थानो के नामो का उनके भौगोलिक परिप्रेक्ष्य मे पता लगाना भी था। इस तरह की अनेक बातें थी जिस पर शोध हो रहा था।

शाहनामा मे कई जगह फिरदौसी ने अपने बुढापे और थकन का ज़िक्र करते समय अपनी उम्र का भी जगह-जगह उल्लेख किया है, जो सिलसिलेवार लिखे उनके काव्य पर कई तरह के प्रश्नचिह्न लगाता है। हो सकता है उस दौर मे वर्षों की गिनती पर विशेष ध्यान नही दिया जाता हो। इसलिए

शाहनामा के शेरो म एक विखराव सा नजर आता था, जिसको सिलमिलवार तरतीब देना भी 'बुनियाद ए फ़िरदौसी' का काम था। वहरलाल अभी शाहनामा पर जमकर काम शुरू भी नहीं हुआ था कि एकाएक १६७६ की ईरानी क्राति ने पहलवी साम्राज्य का तख्ता ही पलट दिया।

और नफरत का तूफान

शहनशाहियत से नफरत का एक एसा तूफान ईरान म उठा कि बुनियादें ही हिल गई। 'शाहनामा सस्थान' भी बन्द हो गया। उसके बुद्धिजीवी शोधकर्ता और कमचारियो को अपनी जान के लाले पड गए और कमचारियो ने वेदर्दी से उन पुस्तको म आग लगाना शुरू कर दिया जिन पर शाही मोहर या शाह और उसके परिवार के चिह्न अकित थे। पुस्तकालया मे शाहनामा की वे प्रतिया भी भस्म हो रही थी जो सोने की स्याही से लिखी गई थी। उनमे छपे चित्रा मे सोने का सुनहरा रग लगा हुआ था। उनको उन शाहो का इतिहास समझकर जलाया जा रहा था, जिसने आज वतन को अमरिका की झोली मे डालकर वर्बाद कर दिया था। जो ईरान का इतिहास समझकर शाहनामा व अय करोडो साहित्यिक पुस्तको को महत्त्व दे रहे थे, व लगातार चीख रहे थे कि यह रजाशाह पहलवी नही, बल्कि कई ईरानी नस्लो की महनत है, साच है भावना है, इसलिए इन्ह वर्बाद मत करो। यदि तुम्ह शाह से नफरत है, तो किताब को जलाने की जगह उस पर चिपकी शाही मोहर, शाह और उसके परिवार की तस्वीरें फाड दो। मगर कौन सुनता है! जमाना बदल रहा था और इसी बदलाव को इकलाब का नाम दिया जा रहा था।

यह आदोलन ईरान से चलकर अय कई देशो तक भी फैला। भारत भी आया और खुमैनी के अनुयायी 'फरहगे ईरान' पर छापा मारकर उसकी पुस्तका को आग की भेंट करने लगे। क्राति मे वप भर पहले मैंने शाहनामा के पाच खण्ड काम करने की खातिर 'फरहग ईरान' के पुस्तकालय से लिए थे। वापस करन स पहल ही सारा माहौल ही बदल गया और फ़िरदौसी के हजारवें जन्म दिवस के अवसर पर पाच खण्डो म (१६३५ मे) छपा

यह शाहनामा मेरे पास ही रह गया। आज उसी को पढकर, विभिन्न काव्य-खण्डो का अनुवाद करते हुए, मैं सोच रही थी कि रियासत के कितने चेहरे है और कलाकार की नियति कितनी एक जसी है जिसमे दद के पैबन्द ही पैबन्द है।

शाहनामा की विशिष्टताए

विशालता और व्यापकता की दष्टि से 'शाहनामा' की तुलना होमर के 'इलियड' और महर्षि व्यास के 'महाभारत' से की जा सकती है। तीनो मे वही पाच भाव विद्यमान है, जो मानवीय उच्च भाव जगाने और साहित्य को अमर बनाने मे सहयोग देते है। प्रेम, घृणा, निष्ठा, ईर्ष्या एव बलिदान का समन्वय 'शाहनामा' है। शाहनामा को केवल इतिहास कहकर मुर्दा तारीखो का घटनाक्रम क़रार देना उचित नही है क्योकि 'शाहनामा' मानवीय सरोकारो, भावनाओ और उसकी टकराहट की जीती जागती धडकन है, जिसमे एक तरफ बुराई 'जहाक शाह' के रूप म है, तो अच्छाई 'फरीदुन शाह' की शक्ल मे, नेकी की मूर्ति सियावुश और निराशा की तस्वीर फरूद के रग मे एक ओर तूरानी पहलवान पीरान सज्जनता की कसौटी है, तो दूसरी तरफ बहादुरी और हमदर्दी का प्रतीक ईरानी पहलवान रुस्तम है।

शाहनामा' कहने को एक महायुद्ध की महागाथा है, मगर वस्तुत यह एक ऐसी इसानी किताब है, जिसम वर्णित है कि हालात के गलियारो से गुजरत गुजरते कैसे कैसे इसान रग बदलता है। एक जज्बा किसी इसान के दिलो दिमाग म वर्षो तक उसी तीव्रता के साथ विद्यमान नहीं रह सकता है क्योकि आसपास घटने वाली घटनाए उस जज्बे को धुधला बनाने के लिए तत्पर रहती ह जिन्ह रोकना इसान के हाथ मे नही है क्योकि वे घटती ही किन्ही दूसर कारणो से है। इसलिए फिरदौसी केवल उपदेश नहीं देते हैं, बल्कि परिवेश और हालात मे इसान की कमजोरी को बडी सूक्ष्मता से दर्शाते हुए उसका तर्क भी सामने रखते है।

दूसरी बात जोमनो वैज्ञानिक दृष्टि से 'शाहनामा' मे महत्वपूण है, वह है इसान का इसान स मोहब्बत करना। ईरान व तूरान की दुश्मनी पुरानी

है। लेकिन यह दुश्मनी केवल राजाओ के बीच ही सक्रिय रही है और जब ईरानी और तूरानी मिलते हैं तब तहमीना और रुस्तम, बीजन और मनीजा, रुदावे और जालजर जैसी प्रेम कथाओ का जन्म होता है।

'शाहनामा' की तीसरी खूबी है कि उसमे गुणों एव अवगुणो को काला और सफेद करके देखा गया है। उसको मिलाकर सुरमई रग बनान की कोशिश कही नही की गई है। अच्छाई और बुराई का विरासत के रूप मे भी नही देखा गया है। आदर्श भी कही थोपा नजर नही आता है, बल्कि हर युग मे हर नस्ल एक नये तरीके से हमारे सामने आती है और विचार के धरातल पर हम झिझोड जाती है कि दुश्मन को नस्लो तक जीवित रखना व्यर्थ है और अच्छाई की कोख से बुराई उसी तरह जन्म ले सकती है जैसे कि बुराई से अच्छाई।

'शाहनामा की चौथी सबसे बडी खूबी है उसके महिला पात्र। चाहे वह रुदावे हो या सुदावे, तहमीना हो या सीनदुख्त, गिर्द आफरीद हो या फिरगीस, सबकी सब बहादुर, सच्ची सुन्दर, अपने व्यक्तित्व पर विश्वास करन वाली औरतें हैं जो अकुश, घुटन, अत्याचार और अधिकार-हनन के विरोध मे बडी सहजता क साथ खडी होकर अपने मन की बात बडी सरलता स कह देती हैं। उनम आत्मविश्वास की चमक और ईमानदारी की दमक अपनी पूरी ताकत के साथ सामने खडी नजर आती है, जिसको नकारा नही जा सकता। क्योकि वह इन्सान की सपूर्ण गरिमा के साथ हमारे सामने उभरकर आती है जो उस दौर के कवि द्वारा लिखा जाना सराहनीय है। कवि ने औरत मर्द मे फर्क न डालकर उनके बीच दीवार नही उठाई है, बल्कि मानवीय सवेदनाओ और गुणो के धरातल पर उन्हें बराबर म खडा किया है।

'शाहनामा' क अलावा एक बात जो 'शाहनामा' को सरस बना देती है, वह है उसका प्रवाह जो किसी नदी की तरह समतल भूमि पर निरन्तर बह चला जाता है। शायद इसी कारण 'शाहनामा' म लडकियो की सुन्दरता का बयान, पहलवानों की बहादुरी की चर्चा म जो उपमाए आती हैं, व बार-बार अपन को दुहराती हैं, यहा तक कि कुछ घटनाए भी जैसे रुस्तम और सोहराब का बचपन म एक ही तरह से घोडे की इच्छा करन

हुए मा से हठ करना और बेहतरीन घोडे को पाने की उत्सुकता एव उत्तेजना लगभग एक जसे शब्दो मे बयान की गई ह। इसका अथ यह कतई नही है कि फिरदौसी इतना बडा महाकाव्य लिखने के कारण चीजें दोहराने लगे थे बल्कि इसका कारण है फारसी भाषा का अपना मिजाज जिसम शब्दो की तकरार एक लय और अहसास का दोहराना एक ताल है।

'शाहनामा' भी 'आल्हा-ऊदल' की तरह गाया जाता है विशेषकर जरखूनो (कुश्ती के अखाडे) और कहवाखानो म। जब 'शाहनामा' गाया जाता था तो एक अलग ही समा वध जाता था।

☐ ☐

शाहनामा के अनुवाद

'शाहनामा' का सबसे पहला अनुवाद अरबी भाषा मे छठी शताब्दी मे हुआ था। क्वाम उद्दीन अबुलफतह ईसा बिन अली इब्न मोहम्मद इसफाहनी ने यह अनुवाद अयूब अल फातेह ईसाबिन मुल्क अब्दुल अबूबकर के नाम किया था। इसके पश्चात ९१४ हिज्री म तातार अली अफनदी ने सम्पूण 'शाहनामा' का अनुवाद तुर्की भाषा मे किया था। तुर्की भाषा गद्य मे अनुवाद का काम मेहदी साहिबमनसनान उस्समान के दरबार मे पूरा हुआ। यह अनुवाद उस्मान द्वितीय को १०३० हिज्री म भेंट किया गया। कुछ वर्षो वाद १०४३ हिज्री मे दाराशिकोह के वेट हुमायू के समय म लाहौर मे, उसके दरवार के तवक्कुल वक ने शमशीर खा की फरमाइश पर 'शाहनामा' के कुछ चुने हिस्सो का गद्य व पद्य म अनुवाद 'मुनतखिब उल तवारीख' नाम से फारसी मे किया था।

पश्चिमी देशो मे 'शाहनामा' का अनुवाद सबसे पहले लन्दन मे १७७४ मे सर डब्लू,योस (Sar w, Yones) न किया, मगर सम्पूण 'शाहनामा' का अनुवाद करने वाले वे प्रथम स्वदेशी जोजफ शामप्यून जो कलकत्ता मे १७८५ मे छपा था। इसके बाद लोडाल्फ (Ludolf), हैगरमैन (Hegerman) पेरिस मे १८०२ मे जान ओहसान (John Ohsson) के अनुवाद सामने आये।

ईस्ट इडिया कम्पनी ने 'शाहनामा' को अनुवाद कराने की इच्छा व्यक्त

की थी। फोर्ट विलियम कालेज मे अरबी-फारसी के अध्यापक लुम्सडन (Lumsden) ने इस काम की जिम्मेदारी उठाई थी। इस तरह १८११ मे 'शाहनामा' का अनुवाद हुआ। इस तरह नामो की एक लम्बी सूची है, जिन्होने फारसी भाषा पढी या किसी कारण वे ईरान म रहे या फिर उन्होने ईरान पर शोध काय किये और 'शाहनामा' का थोडा बहुत अनुवाद किया या फिर जिसका जिक्र उन्होंने जहा तहा अपने लेखन म भी किया था।

डा० गुलाम मकसूद हेलाली की 'बगला पर अरबी फारसी का प्रभाव' नामक पुस्तक के अनुसार 'शाहनामा' के कुछ हिस्सो का अनुवाद बगाली भाषा मे भी हुआ है। गुजराती, मराठी भाषा पर फारसी का बहुत प्रभाव रहा है। इससे लगता है कि इन भाषाओ म 'शाहनामा' के किसी खण्ड का लेखन या अनुवाद के रूप मे प्रयोग अवश्य हुआ होगा।

हिन्दी भाषा मे 'शाहनामा' की कुछ महत्वपूर्ण कहानियो का अनुवाद आपके सामने है। फारसी भाषा की चाशनी के लिए मैने सुन्दर काव्यखण्ड की कुछ फारसी पक्तिया नागरी लिपि में यत्र-तत्र दे दी है।

आज वर्षों बाद फिरदौसी की ये पक्तिया कानो म गूज रही है कि—

हर आन कस की दारद हुश व राइ व दीन
पस अज मर्ग बर मन कुनद आफरीन

(हर वह, जो साहित्य का परखने की दृष्टि रखता है, वह मेरे मरने के बाद मेरी इस साहित्य रचना की प्रशसा अवश्य करेगा।)

फिरदौसी का यह शेर एक लम्बी कडी मेहनत के फल के रूप म हमारे सामने है जो हम विश्वास दता है कि ईमानदारी, चाहे जिस रूप में हो, वह जिन्दा रहती है। यह अनुवाद उसी महान कवि फिरदौसी को मेरी श्रद्धाजलि के रूप म है। आशा है, पाठक 'शाहनामा' की इन कहानियो को पढकर फिरदौसी की याद ताजा करेंगे।

अब जब ससार मे शाहनामा के पाच सात (१९९०-१९९५) मनाये जा रहे हैं, तो शाहनामा का महत्व सामने आ रहा है। ऐसी स्थिति म शाहनामा का प्रकाशन विशेष अर्थ रखता है।

शाहनामा

ईरान का पहला बादशाह : क्यूमर्स

इस किसान की जबान से यह कहानी सुनो कि इस जमीन पर सबसे पहले किसने सिर पर ताज पहना था और कौन बादशाह कहलाया था। बात उस जमाने की है जिसकी याद किसी को भी नही है। मगर यहा, उस जमाने की यह कहानी हम सबको याद है, क्योकि एक सीने से दूसरे सीने तक, बाप के मुह से बेटे तक, एक नस्ल से दूसरी नस्ल तक चलकर यह दास्तान आज तक जिन्दा है।

क्यूमस ईरान का पहला बादशाह हजारो साल पहले उस जमाने में हुआ था, जब लोग नगे घूमते थे। घर के नाम पर उनका कोई ठिकाना नही था। क्यूमस न अपने साथियो व दोस्तो के साथ मिलकर सबसे पहले गुफा म रहना शुरू किया ताकि जगली जानवर उन्हे चीर फाडकर खा न डालें और सर्दी गर्मी से भी बचे रह। क्यूमस ने एक और बडा काम किया था कि उसने चीत की खाल से कपडा सिलना लोगो को बताया और उस लिबास को अपन दोस्तो के साथ खुद भी पहनना शुरू कर दिया। कुछ दिनो बाद यह लिबास पलगीने के नाम से पुकारा जाने लगा।

क्यूमस को आदमी से प्यार था। वह हमेशा उसकी अच्छी और आरामदेह जिन्दगी के बारे म सोचता रहता था। उसका मन चाहता था कि इसान को भरपेट भोजन मिले। उस समय लोग अपने पेट की आग कन्द मूल और फल खाकर बुझाते थे। आखिर क्यूमस ने स्वादिष्ट भोजन बनाने की तरकीब शुरू की और पहाड मैदान म रहन वालो को व्यजनो के स्वाद का मजा आने लगा।

क्यूमस के इस व्यवहार से उसके प्रति लोगो का प्यार बढने लगा।

यहा तक कि लाभकारी जानवर भी उसके इर्द गिर्द जमा होने लगे। इस एकता व प्रेम भरे वातावरण से पहाड़ का जीवन सुखमय हो गया।

इस तरह से दिन महीने, साल गुजरने लगे और बरसो बाद लोगों ने उत्सव मनाया। जब सूरज पर्वत से ऊंचा उठकर चमका और दुनिया चमकीली धूप से दमक उठी ऐसे खुशी के दिन लोगो ने क्यूमस को अपना बादशाह चुना, क्योंकि उसने उनके सुख के लिए सदा नयी नयी चीजो का आविष्कार किया था। क्यूमस को तख्त पर बिठाया गया। उसके सर पर ताज रखा गया और उसको ईरान का पहला बादशाह स्वीकार कर लिया गया। क्यूमस के दोस्तो व साथियो ने इस मौके पर बहुत खुशी मनाई। यही दिन साल का पहला दिन 'नवरूज' के नाम से जाना जाने लगा।

शाह क्यूमस ने तीन साल तक राज किया। वह लोगों से प्रेम करता था और लोग उस पर जान छिड़कते थे। क्यूमस की सल्तनत मे सभी खुशहाल और सुखी थे। क्यूमस का एक बेटा सियामक था। सियामक अपने पिता की तरह पाक दिल व दिमाग का मालिक था। उसी की तरह कलाकार और दूसरों से सहानुभूति रखने वाला था। शाह अपने बेटे को बहुत प्यार करता था। वह भी अपने बेटे को देखकर ही जीता था। शाह की सारी आशाओ का केन्द्र सियामक था। इसलिए वह हमेशा बेटे को अपने पास रखता और उसके बिना एक पल भी अकेला न गुजार पाता। क्यूमस का परिवार एक-दूसरे के प्रति मोहब्बत से भरा हुआ था। लोग आपस मे एक-दूसरे से हमदर्दी रखते थे।

इस दोस्ताना वातावरण मे लोगो का एक ही दुश्मन था अहरिमन जिसको काले दैत्य के नाम से जाना जाता था। उसका दिल शाह की लोकप्रियता से सुलग रहा था। लोग खुश थे, काले दैत्य को यह सहन नही था। इसलिए उसने बुरी-बुरी हरकतें करनी शुरू कर दी। उसका यह बर्ताव देखकर सियामक को गुस्सा आया और वह नग्न बदन काले दैत्य से युद्ध करने मैदान मे उतर गया। काले दैत्य ने धोखे से सियामक पर आक्रमण किया और उसका कलेजा फाड़कर रख दिया। सियामक की मौत की खबर सुनकर शाह पागलो की तरह अपने बाल और चेहरा नोचने लगा। चेहरे पर पड़ी खराश मे जगह जगह खून बहने लगा। सारे परिन्दे व जानवर

भी आदमियो के सग सियामक के शोक मे डूब गए ।

एक साल दुख भरा गुजरा । शाह क्यूमस ने सोचा आखिर वह कब तक बेटे का गम करेगा और लागो की भलाई की तरफ से मुह मोडे रहगा । यह सोचकर वह उठ खडा हुआ और देश की प्रगति की योजना के बारे मे सोच विचार करने लगा ।

□ □

शहजादा सियामक का एक बेटा था । उसका नाम हुशग था । क्यूमस पोते का बहुत ध्यान रखता था । खासकर बेटे की मौत के बाद उसका अनुराग हुशग के प्रति बहुत बढ गया था । वही सियामक की यादगार के रूप मे उसके दिल के करीब था । क्यूमस पोते हुशग के लालन पालन पर विशेष ध्यान दे रहा था ताकि वह ईरान का एक अच्छा हाकिम बने । धीरे-धीरे हुशग जवान होने लगा और रण क्षेत्र और युद्ध की कला मे निपुणता प्राप्त करने लगा ।

एक दिन शाह क्यूमस ने काले दैत्य की हरकतें हुशग को विस्तार मे बतायी कि किस तरह उसने ईरान व ईरानवासियो को तबाह करने की कोशिश की थी । इसके बाद उसने कहा कि अब हमारी फौज भी बन गई है और अब हम बडी आसानी से बुराई से जग कर सकते हैं । फिर कुछ ठहरकर क्यूमस ने पोते से कहा ।

तोरा बुअद बायद हमीं पीश रव
कि मन रफ्ते अम तो सालारे नव

(अब तुम राज-काज सभालो । अब मैं बूढा हो चला हू । कभी भी इस दुनिया से चल सकता हू इसलिए अब तुम ही इस मुल्क के नये हाकिम बनोगे ।)

ईरान की फौज और जनता ने शाह क्यूमस के समर्थन और शहजादे हुशग की सरदारी मे लडाई के लिए कमर कस ली । काले दैत्य और उनके बच्चे ईरान की फौज के सामने आन खडे हुए और दैत्यो व ईरानियो के बीच घमासान युद्ध छिड गया । शहजादे हुशग ने बडे काले दैत्य का कमर-बन्द पकड लिया और उसको हाथो से सर के ऊपर उठाकर जोर से जमीन

पर पटका। दैत्य की हड्डिया टूट गइ। फिर शहजादे ने उसका सिर धड स अलग कर दिया और सारे दैत्यो को ईरान स निकाल बाहर कर दिया।

शहजादे हुशग न बुराई को जड से उखाडकर जहा पिता के खून का बदला ले लिया, वही देश मे फिर से सुरक्षा व शान्ति ले आया। इस तरह स नेकी बुराई पर, सुदरता कुरूपता पर, रोशनी अधेरे पर छा गई और अत म सच्चाइ और नेकी की जीत हुई।

शाह क्यूमस के दिन पूरे हो चुके थे। अपने अच्छे और नेक नाम की बुनियाद इस दुनिया मे डालकर उसने अपनी आखें बद कर ली। शहजादे हुशग न गद्दी सभाली और अपने दादा क्यूमस की जगह ईरान का राजा बना।

☐ ☐

शाह हुशग के पहले बादशाहो के जमाने मे लोग आग को नही जानते थे। एक दिन शाह हुशग अपने दोस्तो के साथ पहाड की तरफ जा रहा था कि एकाएक काला नाग फन उठाता हुआ इनकी तरफ लपका। उसकी दोनो आखें सर पर चमक रही थी और मुह से भाप के बादल फुकार के साथ निकल रहे थे। हुशग बहादुर और फुर्तीला था। एक पत्थर उसने जल्दी से उठाया और पूरी ताकत से साप की तरफ फेंका। पत्थर लगन से पहले ही साप झाडी म सरक गया और फेंका पत्थर पूरी ताकत के साथ दूसरे पत्थर से टकराया और चिगारियों के साथ आग की लपटें निकलने लगी।

साप तो नही मरा मगर आग का भेद शाह हुशग के हाथ लग गया। हुशग ने उन लपटो के प्रति आदर व्यक्त करत हुए कहा कि यह रोशनी, ईरान की रोशनी है। हम सब इसको सम्मान दें और खुशी मनाए।

शाम जैसे ही ढली, शाह हुशग ने हुक्म दिया कि उसी पत्थर से फिर चिंगारी निकाली जाए और एक ऊचा आग का अलाव सुलगाया जाए। शाह हुशग को आग पवित्र लगी क्योकि इसी के द्वारा उसे ज्ञान प्राप्त हुआ और उसने इस दिन को 'जश्न-ए-सदेह' का नाम दिया।

दास्ताने-ए-कावेह आहगर[1]

शाह जमशेद की हुकूमत के आखिरी दिनो मे जहाक सितमगर न ईरान पर आक्रमण किया और ईरान का तख्त हासिल कर लिया। शाह जमशेद ईरान का एक प्रभावशाली बलवान बादशाह था। उसके राज्य म लोग खुशहाल और सुरक्षित थे। इसम कोई स देह नही कि कपडा बुनना और कपडा सिलना शाह जमशेद ही ने लोगो को सिखाया था। घर, महल और गर्माबे को उसने ही पहली बार बनाया था। पहली बार उसने दरिया मे नाव डाली थी और उसी ने लोहे को गम करके औजार बनाना सिखाया था। शाह जमशेद ने लोगो के साथ नेकी की और नई चीजो का आविष्कार करके जीवन को सुखमय और ससार को पहले से ज्यादा सुन्दर बनाया था।

जब शाह जमशेद का प्रभाव अपनी ऊँचाइयो पर पहुच गया, तो उसका दिमाग खराब हो गया। उसके व्यक्तित्व मे विस्तार तो था मगर गहराई नही थी जिससे वह इन गुणो की महिमा को अपने म समा सके। एक दिन उसने उसी उत्तेजना की हालत मे बुद्धिमानो और बुजुर्गों को अपने इद गिद जमा किया और कहा कि "मेरे अलावा इस ससार म कोई दूसरा बादशाह नही है। ससार मे हुनर की शुरूआत मैंने की है, जिससे यह ससार रहन के काबिल बना है। तुम्हारा यह सुख-चन मरी खोजो का नतीजा है। सक्षेप मे, मैंन जब यह सब रचा है, तो मुझे इस दुनिया को सवारने वाला स्वीकार करो।"

शाह जमशेद का घमण्ड से यो फूल जाने और अपन को ससार का

---

1 लोहार

रचयिता समझने की गलती से लोगो का मन उसकी तरफ से हट गया और भाग्य भी रूठ गया। धीरे धीरे जनता मे विरोधी स्वर फूटने लगे। उसके प्रभाव और सम्मान मे कमी आने लगी। शाह जमशेद का पछतावा या सुधार भी लोगो के दिल व दिमाग को बदलने मे समर्थ नही थे, क्योकि तीर तरकस से निकल चुका था। जनता ने बगावत पर कमर कस ली थी।

शाह जहाक एक जालिम बादशाह था। जब उसने शाह जमशेद की जनता के प्रति लापरवाही की खबरे सुनी तो उसने ईरान पर आक्रमण कर दिया।

□ □

जहाक का पिता मरदास, एक इसाफ पसन्द नेक दिल सरदार था। एहरिमन एक शैतान था जिसका काम सिर्फ ससार मे कलह व दुःख फैलाना था। उसने जहाक को बहकाने के लिए अपनी कमर कस ली। एहरिमन ने अपनी शक्ल एक नेक आदमी म बदली और बडी शराफत व नम्रता के के साथ जहाक के यहा पहुचा और उसकी प्रशसा क मीठे गीत रात दिन उसके कान म इस तरह से गुनगुनाए कि जहाक उस नेकमर्द पर फिदा हो गया।

जब एहरिमन ने देखा कि उसका प्रभाव जहाक पर अपनी जडें जमा चुका है तो उसने एक दिन बडी सादगी से कहा ए जहाक! मेरा दिल कहता है कि मैं तुमको अपने भेद म भागीदार बनाऊ। मगर पहले सौगध खाओ कि मेरा यह भेद किसी को नही बताओगे।

जहाक ने सौगध खाकर एहरिमन का विश्वास दिलाया। जब एहरिमन को पूरा इत्मीनान हो गया तो वह जहाक क कान म धीरे स फुसफुसाया यह तुम कैसे जवान हो जो तुम्हारी जगह तुम्हार बूढे पिता तख्ते शाही पर बैठे हैं। क्यो देर कर रह हो। अपन पिता को बीच स हटा दो और खुद बादशाह बन जाओ। उस समय यह राजमहल, यह फौज यह खजाना सबके तुम अकेले मालिक होग।

जहाक एक खाली दिमाग जवान था। इस तरह की बातें सुनकर दिल भी उसके हाथ से जाता रहा। बाप की हत्या करने के षड्यत्र मे वह

एहरिमन का साथी बन गया, मगर उसको तरकीब पता नही थी कि आखिर वह कैसे पिता को खत्म करे। उसकी परेशानी देखकर एहरिमन ने उसका कधा थपथपाया और कहा 'दुखी मत हो। तरकीब बताना मेरा काम है।'

मरदास के पास एक बेहद खूबसूरत बाग था। रोज सूरज निकलने से पहले वह उस बाग मे जाकर इबादत करता था। एहरिमन ने मरदास के जाने वाले रास्ते पर बाग के बीच मे एक कुआ खुदवाकर उसे घास फूस से ढक दिया। दूसरे दिन जब मरदास इबादत के लिए बाग मे गया, तो उस कुए मे गिरकर मर गया। उसकी मौत के बाद जहाक को शाही तख्त पर बिठाया गया।

जब जहाक बादशाह बन गया, तो एहरिमन ने अपने को एक बुद्धिमान तेजस्वी जवान की शक्ल मे बदला और शाह जहाक के पास पहुचकर बोला मैं कलाकार हू। एक ऐसा कलाकार जो शाही व्यजनो की तयारी म अपना जबाब नही रखता।

शाह जहाक ने उसको खाना पकान और सुफरा सजाने का काम सौप दिया। एहरिमन ने तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यजन परिदो व चौपायो से बनाकर शाह के सामने इतनी खूबसूरती से सजाय कि जहाक बेहद खुश हुआ। प्रत्येक दिन पहले से अधिक स्वादिष्ट भोजन बडे सलीके से जहाक को परोसा मिलता। चौथे दिन जब शाह जहाक का पेट खाने से भर चुका था तो उसने खुश होकर उस रसोइय से कहा "जो इच्छा रखत हो, मुझसे कह दो!"

एहरिमन तो इसी अवसर की तलाश मे था। फौरन बोल पडा "शाह! मेरा दिल आपकी मोहब्बत से भरा हुआ है। आपसे सिफ खुशी के अलावा मुझे कुछ नही चाहिए। सिफ एक इच्छा रखता हू कि यदि आप आज्ञा दे, तो अपना सम्मान आपके प्रति प्रकट करन के लिए मैं आपके इन दोनो कधो को चूम लू।"

जहाक ने आज्ञा दे दी। एहरिमन ने शाह के दोनो कधो का चुम्बन लिया और एकाएक अदृश्य हो गया। उसके होठो ने कधो पर जहा चुम्बन लिया था, वहा दो काले नाग उग आए। उन सापो को जड से काट डाला

गया, मगर फिर व कधो पर उग आए। वैद्य हकीम हर तरकीब करके हार गए, मगर कोई फायदा नही हुआ। जब सारे हकीम थक गए तो एहरिमन भेष बदलकर हकीम क रूप म जहाक के पास पहुचा और बोला

वेदू गुफ्त केइन बूदनी कार बूद
बेमान त चे मान्द मवायद बरूद
खुरिश साज व आरामिशान वह बेखुर्द
न शायद जुज़ इन चारह एह बोज़ कर्द
बेचुज मगजे मरदुम मदेह शान खुरिश
मगर खुद बमरिन्द अज इन परवरिश

(इन सापो को जड से काटने का कोई लाभ नही है। सिर्फ इसानी दिमाग ही इसको खत्म करने मे सहायक साबित होगा। साप बादशाह को न काटें, इसके लिए जरूरी है कि हर दिन दो इसानो के ताज़े दिमाग से इनके लिए भोजन तैयार किया जाए। शायद इसी दवा से साप अपने आप मर जायेंगे।)

शैतान यानी एहरिमन इसानियत का दुश्मन यही चाहता था कि किसी भी तरह दुनिया मे अमन चैन न रहे। इस दवा के ज़रिये इसानो की सख्या घटते घटते एक दिन बिल्कुल खत्म हो जायगी। उस दिन उसके लिए खुशी का दिन होगा।

यही वह समय था जब जमशेद अपने गुणो पर इतराया था और घमण्ड म अन्धा होकर उसने अपने को खुदा कहा और अपनी किस्मत और जनता को नाराज़ कर लिया। जहाक ने मौके से फायदा उठाया और ईरान पर हमला कर दिया। ईरानी जो इस बात की तलाश मे थे कि कैसे जमशेद से पीछा छुडाए, वे एकाएक जहाक की ओर आशा से देखने लगे।

सवारान-ए-ईरान हमे शाह जुइ
नहादन्द यकसर बे ज़हाक रुइ
बे शाही बेरु आफरीन ख्वानदन्द
वरा शाह ए ईरान ज़मीन ख्वानन्द

(ईरान के सारे सिपाही भी जहाक की ओर आकर्षित हो गए और उसको ईरान का बादशाह कहकर उसका स्वागत करने लगे।)

इधर जमशेद का बुरा हाल था। उसने अपना सब कुछ जहाक के हवाले कर दिया। क्योकि अरब एव ईरानी दोनो फौजें उसके विरोध मे एक साथ खडी थी। वह बादशाह जो सौ साल तक किसी की ओर नजर उठाकर नही दखता था वही आज लोगो की नजरो से ओझल हो गया।

☐ ☐

चु जहाक पर तरत शुद शहरयार
वर उ सालियान अजुमन शुद हजार

(जहाक जब शाही तख्त पर बैठा तो उसकी बादशाहत हजार साल तक चलती रही।)

जमशेद से जान छडाने के चक्कर म ईरानियो न जो कदम उठाया था, उसने साबित कर दिया कि वे पहले से भी बुरी हालत मे पहुच गए हैं। जहाक न जुल्म व सितम का बाजार गम कर दिया। कोई भी भलाई और नेकी का काम नही होता था।

जमशेद की दो शहजादिया थी। एक का नाम शहरनाज और दूसरी का नाम अरनवाज था। दोनो को जहाक ने जबरदस्ती अपन पास बुलाया। दोनो शहजादियाँ कापती हुई उस साप वाले बादशाह के पास पहुची। जहाक के पास कडवी जबान थी और उसका काम कत्ल, गारतगरी और आतशजनी था। उसम एक काम यह भी शामिल था कि—

चुनान बुद कि हर शब दो मर्दे जवान
चे कहतर चे अज तुख्मे पहलवान
खुरिशगर ज बुरदी व एहवान ए शाह
व अज उ साखती राहे दरमान-ए-शाह
बेकुशती व मगजश बेरुन आख्ती
मर आन अजहदा रा खुरिश साख्ती

(रोज रात को पहलवानो की नस्ल से दो जवान लाए जाते। जिनको शाही रसोइया महल मे ले जाता और शाह की बीमारी दूर करने की दवा उनको मारकर उनके भेज से बनाता था, जिसको दोनो अजदहे रात को खाते थे।)

शाह के देश में दो सदाचारी आदमी थे। एक का नाम अरमायल था और दूसरे का करमायल था। जब वे आपस में मिले तो जमाने भर की बातों में बादशाह के जुल्म और शाही फौज के अत्याचार के साथ दो इंसानों के मगजों से बने भोजन का भी जिक्र आया। दोनों दुखी होकर तरकीबें सोचने लगे कि किस तरह इस मुसीबत से लोगों को मुक्ति दिलाई जाए।

बहुत सोचने के बाद उनको एक तरकीब समझ में आई कि वह शाह के पास अपने को शाही खान का रसोइया बताएं। जब उनको शाह नौकरी पर रख लें तो वह दोष जवानों को मारने की जगह एक को मारें और दूसरे को आजाद कर दें। इस तरह से वह एक इंसान को मरने से बचा सकते हैं और उसकी जगह भेड़ का भेजा इंसान के भेजे के साथ पकाकर साँपों को खिला दें।

जब यह दोनों सदाचारी शाही रसोई तक पहुंच गए तो इन्होंने अपना कार्यक्रम आरम्भ कर दिया और हर महीने तीस जवानों को मरने से बचाने लगे। धीरे धीरे लोगों के मन में जहाक के लिए नफरत बढ़ने लगी। उनका गुस्सा इस बात पर भी था कि वह शाह की बेटियों को बिना विवाह के महल में रखे हुए हैं।

च मज रुजगारश चहल साल मान्द
निगार ता कसर बरश यजदान चे रान्द

(जब चालीस साल उसकी हुकूमत के बचे तो देखो, उस समय खुदा ने उसको कौन से दिन दिखाए।)

एक दिन जहाक अरनवाज के साथ अपने बिस्तर पर सोया था कि उसने सपना देखा कि तीन योद्धा उसकी तरफ बढ़ रहे हैं। उसमें सबसे छोटे ने जो सबसे ज्यादा ताकतवर नजर आ रहा था, अपनी गदा से उसके सिर पर वार किया। उसके बाद उसका हाथ चमड़े के फीते से बांधा और उसे खींचता हुआ दमावन्द पर्वत की तरफ ले गया। उसके पीछे लोगों की बहुत बड़ी भीड़ चल रही थी। जहाक एकाएक सपने से चौंककर उठ बैठा और इतनी भयानक चीखें मारने लगा कि महल के खम्भे तक थर्रा उठे।

अरनवाज तो उसके पास मौजूद थी। वह जहाक के इस तरह भयभीत

होकर चीखते का कारण पूछने लगी। जहाक से मुह से सपने के बारे मे सुनकर उसन राय दी कि शाह को देश के कोने-कोने से ज्योतिषियों को बुलाकर उनसे इस सपने का अथ जानना चाहिए।

जहाक ने वैसा ही किया। जब सपने का अथ बताने वाले बुद्धिमान जमा हो गए तो जहाक ने अपना सपना कह सुनाया। सुनकर सब चुप रह गए। आखिर एक निडर ज्योतिषी ने कहा—शाह! यह सपना तो यह बताता है कि आपकी बादशाहत के दिन अब बहुत कम रह गए है। आपकी जगह अब इस तख्त पर कोई दूसरा राजा बैठेगा। उस राजा का नाम फरीदून होगा जो एक बडी गदा से आप पर आक्रमण करेगा और आपको कारावास म डाल देगा।

इन बातो को सुनकर जहाक बेहोश हो गया। जब होश म आया तो उसन इस समस्या का समाधान ढढना आरम्भ किया। सबस पहले उसने हुक्म दिया कि देश भर म फरीदून नाम के जितने भी लोग हो, उनको पकडकर लाया जाए और इसके बाद उसने चैन की सास ली और थोडा-बहुत आरम्भ किया।

□ □

ईरान मे 'आतबीन' नाम के एक आदमी रिश्ता ईरान के पुरान शाह तहमूम देवबन्द स था। उसकी पत्नी फराक उसके दो पुत्र थे जिनम स एक का नाम फरीदुन था। उसका चेहरा भी शाही खानदान की तरह शानदार था।

एक दिन शाह के आदमी साप के भाजन के लिए ढढ रह थे। एकाएक उनकी नजर आतबीन पर पडी। वह उसको पकडकर ले गए। बचारी फराक शौहर के बिना रह गई। जब उसन सुना कि जहाक की तबाही फरीदुन नाम के युवक के हाथो होगी तो वह बुरी तरह भयभीत हो उठी। फरीदुन जो अभी नवजात शिशु था। उसको फराक न गाव मे उठाया और चरागाह की तरफ चली गई। चरागाह के मालिक के पास दूध देने वाली एक गाय थी। उसके पास पहुचकर फराक न अपनी दु ख भरी कहानी उसे सुनाई और कहा कि वह फरीदुन को अपने बेट की तरह पाले और इसकी सुरक्षा के लिए बेहतर है कि उसको गाय के दूध पर ही पाले। चरागाह के

शरीफ मालिक ने फरीदुन का पालने की जिम्मेदारी कबूल कर ली।

चरागाह के रखवाले न तीन साल तक फरीदुन की भली-भांति देख भाल की। मगर यह भेद जहाक स छुपा नही रह सका कि फरीदुन नाम क एक बच्चे की देखभाल एक दुधारू गाय कर रही है। जहाक ने अपने गुमाश्तो को भेजा कि वह फरीदुन को पकडकर लाए। जैस ही फराक का इस बात का पता चला, वह भागती हुई चरागाह गई और वहा स फरीदुन को उठाकर सहरा की तरफ भागी और दमावन्द पहाड की ओर निकल गई।

अलबुज पवत पर एक सदाचारी का घर था। फराक ने फरीदुन को उसे सौंपते हुए कहा कि ए नेक मद ! इस लडके का बाप जहाक के सापो का भोजन बन चुका है। यह लडका फरीदुन एक दिन जहाक की मौत का सबब बनेगा। मेरी विनती है कि आप इसको अपने बेटे की तरह पालें। ससार के सारे झझटो से दूर, तनहा जीवन व्यतीत करने वाले उस सदाचारी न यह इस जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

☐ ☐

कई वष गुजर गए। फरीदुन धीरे धीरे बडा होता चला गया और कुछ दिन बाद एक लम्बे कद के मजबूत जवान म ढल गया। लेकिन वह यह नहीं जानता था कि वह किसका पुत्र है। जब वह सोलह साल का हुआ तो, एक दिन पहाड से उतरकर मैदान की तरफ आया और सीधे मा के पास पहुचकर पूछने लगा कि आखिर मेरे बाप का नाम क्या है ?

उसकी मा फराक ने फरीदुन के सामने भेद को खोलते हुए कहा कि बेटे ! तुम्हारा बाप एक आजाद इसान था। वह ईरानी था और कियानि नस्ल का था। उसके खानदान का सिलसिला शाह तहमूस देवब द स था। वह बुद्धिमान और सदाचारी था। किसी को कभी दु ख नही पहुचाता था। एक दिन शाह के आदमी उसको पकड ले गए ताकि उसका भेजा निकाल कर उससे जहाक के सापों का भोजन तैयार किया जा सके। बस, उस दिन से मैं बिना शौहर की और तू बिना पिता का हो गया।

फराक ने फरीदुन को दूसरा भेद बताते हुए आगे कहा कि सपने का अथ बताने वालो और ज्योतिषियो ने जहाक को बताया था कि एक दिन

फरीदुन नाम का लडका उसके विरोध म खडा होगा और अत मे जहाक को खत्म कर देगा। सपन का यह अर्थ जानकर जहाक आतकित हुआ और वह तेरी जान क पीछे पड गया। मन तुम्हे चरागाह के मालिक के पास छुपाया। मगर इसकी खबर जहाक तक पहुच गई। उसने उस गाय को मरवा डाला और हमारा घर बर्बाद कर दिया। मैं तुम्हे वहा से लेकर अलबुर्ज पहाड की तरफ भागी और वहा उस बूढे सदाचारी को तुम्हारी जिम्मेदारी सौंप आई। इतना कहकर फराक चुप हो गई।

इतनी दर्दनाक कहानी सुनकर फरीदुन के मन मे नफरत की आग भडक उठी। उसका खून जोश मारने लगा। उसने मा से कहा— 'मा, जब जहाक ने हमे बरबाद कर ही डाला है और इरानियो के खून का प्यासा है, तो फिर मैं इसको जिन्दा नही छोडूगा। हाथ मे तलवार उठाऊगा और सीधा राजमहल पहुचकर उसको खाक व खून म डुबो दूगा।"

फराक ने बेटे को शात करते हुए कहा—"मेरे बहादुर बेटे! यह समझदारी की निशानी नही है। तुमने अभी दुनिया देखी नही है। जहाक जालिम और बहुत ताकतवर है और उसके पास हजारो सिपाही है। जब भी वह चाहेगा एक लाख फौजी उसकी सेवा म हाजिर हो जाएगे। जवानी के जोश मे नादानी मत दिखाओ। मा की बात गिरह मे बाध लो कि जब तक इस समस्या के समाधान की कोइ तरकीब समझ मे न आए, तब तक तलवार हाथ मे मत उठाना।

☐ ☐

इधर जहाक फरीदुन के खयाल से हरदम भयभीत रहता और बेख्याली और घबराहट म कई बार उसके मुह से फरीदुन का नाम निकल जाता। जहाक को मालूम था कि फरीदुन जिन्दा है और उसके खून का प्यासा है, मगर वह कहा छुपा है, इसका पता जहाक को नही था। इसी उलझन और परेशानी मे उसके दिन गुजर रहे थे।

एक दिन जहाक ने बारगाह सजाने को कहा और वह स्वय हाथी दात के तख्त पर बैठा। सर पर फीरोजे का ताज रखा और हुक्म दिया कि शहर के इबादत करने वाले सभी लोगो को हाजिर किया जाए। जब ये सारे पुजारी शाह जहाक के सम्मुख पहुचे, तो उसने उनकी तरफ चेहरा घुमाकर

कहा कि "क्या तुम लोगों को पता है कि एक जवान मेरी जान का प्यासा हो रहा है। मेरे तख्त व ताज को उलटने के पीछे लगा है। कहने को जवान है, मगर बहुत ताकतवर और दिलेर है। मेरी जान को हमेशा उस जवान से खतरा लगा रहता है। इसलिए इस भय से मुक्त होने का कोई रास्ता निकालना पड़ेगा। इसलिए आप लोगों की लिखित गवाही मुझे चाहिए कि मैं एक दयावान, न्यायप्रिय, क्षमादान करने वाला, जनता प्रेमी शाह हू। जब तक कोई दुश्मन मुझे हानि पहुचाने की नीयत से मेरी तरफ नहीं देखता, तब तक मैं सच्चाई और नेकी के गुणों से भरे रास्ते को नहीं छोड़ता। आप सबसे मेरी प्रार्थना है कि आप मेरे गुणों की लिखित गवाही अपने हस्ताक्षरों के साथ दें।'

शाह ज़हाक की बात सुनकर धार्मिक, बुद्धिमान, सदाचारी जो भी बड़े-बड़े व्यक्ति वहाँ मौजूद थे, उन्हें साप सूघ गया। उन्हे मालूम था कि ज़हाक एक क्रूर राजा है। उसकी बात से इकार करने का क्या अर्थ होगा उन्हे यह पता था, लेकिन कोई दूसरा चारा न देखकर सबने अपनी लिखित गवाही देना स्वीकार कर ली।

एकाएक दरबार के दरवाजे पर तेज शोर उठा और एक आदमी न्याय की दुहाई देता हुआ सीधा शाह के सम्मुख आ खड़ा हुआ और बोला—"शाह! मैं कावेह लोहार हू। आपसे न्याय की भीख मांगने आया हू। अगर आपका काम न्याय देना है तो थोड़ा-सा न्याय मेरी झोली मे भी डाल दें, क्योंकि मैंने आपके कारण बहुत दुःख उठाए हैं। यदि आप इकार करते हैं कि आपने मुझ पर कोई अन्याय नहीं किया है, तो बताए कि मेरे बेटों को मुझसे क्यों छीना गया?'

मरा बूद हिज देह पिसर दर जहान
अज इशान यकी मान्दह अस्त इन जमान
बे बख़शाइ (व) बर मन यकी दर निगर
कि सुज़ान श्वद हर जमानम जिगर

(मेरे अठारह लड़के थे जिनमे से यह आखिरी लड़का बचा है। इसको जीवन-दान दे दें क्योंकि मैं पहले ही हर बेटे का जख्म खाया हुआ हू।)

यकी बी जबान मद आहगर अम
जे शाह आतिश आयद हमी बर सरम

(मै एक बेजबान लोहार हू, जिस पर शाह के हाथो यह मुसीबत आन पडी है।)

कावेह लोहार न रोन हुए आगे कहा—"शाह ! आप तो सात देशो के शहशाह है फिर यह सारे दु ख हमारे भाग्य मे क्यो आए ? आप मेरा गुनाह बताए कि मुझे यू एक के बाद एक दद से तडपन की सजा क्यो दी जा रही है। आपको न्याय दना होगा। मेरे आखिरी बेटे को मौत के मुह से छुडाना होगा।"

शाह जहाक न बडे दयालु अन्दाज स कावेह लोहार को देखा और चेहरे पर दु ख के भाव लाया और मन ही-मन इस लोहार की दिलेरी पर आश्चय करते हुए कोई तरकीब सोचने लगा। फिर उसने बडी नम्रता से लोहार को दिलासा दिया और सिपाहियो को हुक्म दिया कि फौरन इसके बेटे को रिहा कर दें। सिपाही शीघ्रता से गए और उस लोहार के बेटे को लेकर वापस आए और बाप के हवाले कर दिया। कावह आहगर बेटे को देखकर सारा दु ख भूल गया।

अकस्मात् जहाक ने कावेह लोहार से कहा कि देखा तुमने मेरा न्याय ? अब तुम मेरी दयावान, नेकदिल शाह होने की गवाही इन बुद्धिमानो की तरह लिख दो। कावेह लोहार ने घृणा स भरकर प्रताडना भरी फटकार सारे उपस्थित धार्मिक जनो एव बुद्धिमानो को सुनाई कि "ओ कायर हृदयहीन लोगो ! तुमने अपनी जान की कीमत पर अपना नरक खरीदा है। इस जालिम के भय स तुम सबने गलत गवाही द दी, लेकिन यह काम मैं हरगिज नही करूगा।' इतना कहकर वह कापता हुआ उठा और उस गवाही को फाडकर टुकडे-टुकडे कर दिय और बेटे को लेकर दरबार से बाहर निकल गया।

कावेह लोहार न अपनी कमर पर बधा चमडे का वह टुकडा जो आग की चिगारी स बचाव क लिए बाधता था, खोला और उसको अपने भाले पर लगाकर उसस पताका बनाई और बाजार की तरफ गया और चौराहे पर खडा होकर जनता को सम्बोधित करने लगा—"सुनो लोगो ! सातों

वाला जहाक ! एक अत्याचारी दुष्ट बादशाह है। उससे छुटकारा पाने के लिए उठो और चलो मेरे साथ ताकि फरीदुन आए और इस अपवित्र दैत्य से हमें छुटकारा दिलाए।"

यह ललकार हर खासो आम के मन की इच्छा थी। जिसने सुनी वही कावेह लोहार के पीछे हो लिया। सभी के दिलों में जहाक की नफरत का ज्वालामुखी धधक रहा था। कावेह को फरीदुन के रहने की जगह पता थी। वह जुलूस लेकर उसी तरफ गया ताकि अपने नये हाकिम के नेतृत्व में यह फौज जहाक के विरोध में युद्ध शुरू करे।

□ □

फरीदुन ने ऊपर से जो नीचे नजर डाली तो सामने लोगों का समन्दर अपनी तरफ आते देखा। नारे लगाने वालों में सबसे आगे कावेह आहंगर (लोहार) चमड़े का झण्डा लेकर चल रहा था। उसी निशान को फरीदुन ने अपने लिए मुबारक जाना और उनके पास पहुंच कर उसने अत्याचार सहने वाली जनता का दुःख-दर्द सुना। फिर फरीदुन ने उनसे कहा कि इस चमड़े के झण्डे को रोम की दीबा और हीरे-जवाहरात से सजाकर इसका नाम 'काबियानी पताका' रखा जाए। इतना कहने के बाद वह लौटा और उसने जिरह-बख्तर पहना, कमर पर तलवार कसी और सीधे फराक के पास पहुंचा और बोला

"मां ! प्रतिशोध का समय आ गया है। मैं रणक्षेत्र की ओर जा रहा हूं ताकि जहाक के जुल्म के इस किले को ध्वस्त कर दूं। आप खुदा पर भरोसा रखें। डरने की कोई बात नहीं है। खुदा हमारे साथ है।'

फराक की आंखें बेटे की बातें सुनकर आंसुओं से भर गईं। उसने बेटे को खुदा की शरण में दिया। फरीदुन के दो बड़े भाई और थे। उनके पास फरीदुन गया और उनसे कहने लगा कि भाई ! हमारे सर उठाने का समय आ गया है और जहाक के अस्तित्व के मिटने की घड़ी आन पहुंची है। इस संसार में जीत तो अन्त में नेकी की होती है। यह कियानी राज सिंहासन हमारा है और हमको वापस मिलेगा। अभी मैं जहाक से युद्ध करने जा रहा हूं। आप लोग लोहे और लोहार का इन्तजाम करें ताकि मेरे लिए एक बड़ी और मजबूत गदा तैयार हो सके।

दोनो भाई लोहारो के मोहल्ले की तरफ गए और देख भालकर सबसे बढिया काम करने वाले लोहारो को फरीदुन के पास ले आए। फरीदुन ने जमीन पर, एक गदा की तस्वीर जो गाय के मुख के आकार से मिलती थी, खीची। उसी को देखकर लोहारो न गदा गढना शुरू कर दिया।

जब गाय के मुख की शक्ल वाली गदा तैयार हो गई तो उसको लकर फरीदुन घोडे पर बैठा और उस जन समूह का नतृत्व करने लगा जो जहाक के विरोधी थे। ईरानियो का यह जन समूह पल पल सख्या म बढ रहा था। फरीदुन जहाक क राजमहल की तरफ इस विरोधी सम दर के सग बढा। चलत चलत शाम हो गई। रात के अ धेरे म एक स्वग की अप्सरा सुग ध स लिपटी हुई उस फौजी पडाव मे दाखिल हुई और सीध फरीदुन के सम्मुख प्रकट हुई। उसकी शक्ल देखकर फरीदुन ने सोचा, कही यह शैतान तो नही है। मगर जब उस परी न जहाक को मारनें की तरकीब बताई, तो वह समझ गया कि यह खुदा का भेजा फरिश्ता है और मेरे लिए नक शगुन है।

थोडी दर बाद रसोइया स्वादिष्ट खाने का थाल फरीदुन के पास ल आया, जिसको बडे चाव स भरपेट फरीदुन ने खाया। खात ही उसको नीद ने आ दबोचा और वह गहरी नींद म सो गया। फरीदुन क दोनो बडे भाई यह अवसर पाकर सीधे ऊचाई पर चढकर बडा पत्थर लुढकान लगे ताकि वह ऊपर स सीधे फरीदुन के सर पर गिरकर उसका काम तमाम कर द। मगर पत्थर ठीक फरीदुन के सर के पास जाकर गिरा और वही अटक गया। उस धमाके की आवाज से घबराकर फरीदुन जाग गया। उसन इस घटना की चचा किसी से भी नही की।

सुबह होते ही वह दजला नदी की तरफ चल पडा। नदी किनारे पहुच कर उसने मल्लाहो को आज्ञा दी कि वह अपनी नावें और किश्तिया लेकर हाजिर हो ताकि फौज नदी के पार उतर सक। मल्लाहो के सरदार न अपनी मजबूरी बतात हुए कहा कि बिना शाह जहाक के आज्ञा-पत्र के वह ऐसा नही कर सकता। यह सुनकर फरीदुन को क्रोध आया। वह घोडे पर बैठा और पानी पार करन लगा। उसको देखकर सारे सिपाही अपन-अपने घोडे के साथ नदी पार करने लगे। उनके कधे और सर पानी म डूब रहे थे। यह दखकर मल्लाह दूर हट गए और कुछ ही देर मे सारे सिपाही नदी के

उस पार पहुच गए ।

जब व बगदाद शहर के समीप पहुचे तो, मील भर दूर म उह गगन-चुम्बी महल नजर आया, जो किसी नयी दुल्हन की तरह सजा हुआ था। समझन म देर नही लगी कि यह जहाक सितमगर का ही महल है। सारा लश्कर उसी महल की ओर फरीदुन के पीछे पीछे चल पडा। पता चला कि शहर म जहाक जालिम मौजूद नही है। महल के दरबान दैत्यो की तरह रास्ता रोककर खडे हो गए। फरीदुन ने अपनी गदा के वार से दरबानो को मार गिराया और अन्दर दाखिल हुआ। इसी तरह से वह आगे बढता रहा। आखिर वह जहाक के तख्त के करीब पहुच गया। तख्त खाली था। फरीदुन न तख्त पर कब्जा कर लिया और उस पर बठ गया। इस तरह से सारे सिपाही पूरे महल म फलकर अपने-अपने आसन पर जम गए।

इसके बाद फरीदुन जहाक के हरम मे दाखिल हुआ जहा पर जहाक ने शाह जमशेद की शहजादियो शहरनवाज और अरनवाज को कद कर रखा था। वे दोनों जहाक म भयभीत मौत के समीप पहुच गई थीं। उनको फरीदुन ने आजाद किया और बाहर निकाला। शाह जमशेद की दोनो बेटिया खुशी के मारे रोने लगी और कहने लगी कि हम वर्षों म जहाक की कद मे थे। उसके सापो ने हमको बहुत परशान किया। खुदा का हजार शुक्र है कि आपने हमे उस सितमगर के पजे से आजाद कर दिया।

फरीदुन न उन दोनों शहजादियो से कहा कि वह दोना अब अपने को जहाक द्वारा दिये गए दुखो से पाक करें और इत्र व अम्बर से उम लिबासो और जवाहरात से अपने को सजाए। अब उनके दुख क दिन दूर हो चुके हैं।

फरीदुन जब तख्त पर बैठा तो उसने एक तरफ शहरनवाज को बिठाया और दूसरी तरफ अरनवाज को और कहा कि वह जल्द से जल्द ईरान से जहाक का वजूद उखाड फेंकेगा। इस जालिम ने उस बजुबान गाय को मरवा डाला था, जिसका दूध पीकर मैं बडा हुआ था। वास्तव म वह गाय मेरी मा थी। मैं आतबीन का बेटा हू और मेरा प्रण है कि

सरश रा बै दिन गुरज-ए-गाव चहर
बकूबम न बख्शाइश आरम न महर

(उसका चेहरा इसी गाय के चेहरे वाली गदा मे कुचल दूगा। न

उसको क्षमा करूगा और न ही उस पर तरस खाऊगा।)

ये बातें सुनकर अरनवाज ने अपने दिल की बात कहने में कोई झिझक महसूस नही की और निडर होकर कहा कि

कुजा हुशे जहाक बर दस्त तुस्त
गुशाद जहान अज कमर बस्त तुस्त

(जहाक की समाप्ति आपके हाथो ही लिखी है। इसके प्रभाव को उखाडना आपके ही बस की बात है।)

अरनवाज की इच्छा सुनकर फरीदुन ने उसको विश्वास दिलाते हुए कहा कि वह उस अपवित्र सापो वाले जालिम को मारकर इस ससार को उसके आतक और अत्याचारो से जरूर मुक्त कराएगा। मगर अरनवाज को बादशाह का पता बताना पडेगा कि वह आखिर है कहा ?

शहरनबाज और अरनवाज ने फरीदुन की बात सुनकर जहाक का भेद खोल दिया और बताया कि "वह हिन्दुस्तान की तरफ गया हुआ है। उसको फरीदुन द्वारा मारे जाने का भय सताए हुआ था कि इसी बीच उसको किसी ज्योतिषी ने बताया है कि अगर तुम्हारा सर और बदन खून से धो दिया जाए, तो उस सपने का अर्थ बदल जाएगा, ज्योतिषी झूठा साबित होगा और तुम पर से मनहूस साया हट जायेगा। स्वय जहाक के लिए अब यह धरती भारी पड रही है। उसके दोनो कन्धे के साप उसे कही चैन नही लेने देते हैं और सापो के खाने के लिए हजारो लोगो के खून से अपने हाथ रगने पड रहे है, जिसके लिए उसको एक मुल्क से दूसरे मुल्क की ओर जाना पडता है।"

□ □

जहाक का एक वफादार नौकर था जिसका नाम 'कन्दवर' था। जहाक ने जाते हुए अपने खजाने की कुजी, राजमहल की जिम्मेदारी उसको सौंपी थी। कन्दवर राजमहल की तरफ दौडा आया। महल मे पहुचकर उसने देखा कि राजसिहासन पर एक सजीला जवान बादशाह बना बैठा है जिसके एक तरफ शहरनवाज और दूसरी ओर अरनवाज बैठी हैं। पूरा शहर फौज से भरा हुआ है और यहा भी हथियारबन्द सिपाही कतार से खडे हैं। कन्दवर ने किसी से कुछ न कहा, न सुना, न आश्चर्य प्रकट किया

बल्कि बिना मुह से कुछ बोले अ दर गया और चुपचाप फरीदुन के समीप आकर सम्मान से झुका और आदर के साथ उसने कहा "शाह ! आप ही इस सात देशों के शहनशाह बनने के काबिल है।"

फरीदुन ने उसको महफ़िल सजाने का हुक्म दिया। कन्दवर ने सारा बन्दोबस्त कर दिया, जिसका हुक्म फरीदुन ने उसको दिया था। गायको ने तान उठाई और साकी ने जाम भरे। वातावरण खुशी से झूम उठा। फरीदुन भी प्रसन्नता म शराब के घूट भरने लगा।

जैसे ही सुबह का तारा डूबा, कन्दवर घोडे पर सवार हुआ और तेजी से जहाक की तरफ लपका। वहा पहुचकर उसने जो देखा था वह जहाक को कह सुनाया कि "हे शाह ! आप यहा पर बैठे हैं और तीन जवान एक लम्बी फौज के साथ ईरान से बगदाद पहुच गए हैं। उनमें से सबसे छोटे लडके का मुखमण्डल एक विचित्र तेज से प्रकाशमान है। उसके पास एक गदा है और वह पहाडो को भी उखाडने का बल रखता है। वह इस तरह हाकिम बना आपके तख्त पर बैठा है कि हाथ बाधे सारे दरबारी, बुद्धिमान और सिपाही उसके आज्ञाकारी बन चुके हैं।"

जहाक ने कन्दवर की बात सुनकर बडी लापरवाही से जवाब दिया कि हो सकता है कि वह अतिथि हो और उसकी आवभगत म आखें बिछाई जा रही हो। यह सुनकर कन्दवर बोला कि वह आपके तख्त व ताज सब पर अधिकार जमाए हुए है।

जहाक ने उसी लहजे म कहा कि अतिथि की इतनी गुस्ताखी को अच्छा शगुन मानकर टाल दो, इसको लेकर दुखी मत हो।"

कन्दवर ने शाह जहाक का यह सहज उत्तर सुनकर तनिक कटाक्ष भरे स्वर म कहा कि "अगर वह दिलावर आपका महमान है, तो उसको आपके हरम से क्या लेना देना। वह शहरनवाज और अरनवाज को जनानखाने से बाहर निकाल लाया है जो कभी आपके दिल का सुकून थी। अब वह दिलावर एक तरफ शहरनवाज का हाथ पकडता है और दूसरी तरफ अरनवाज के होठो को स्पर्श करता है। रात को उनके लम्बे बालो के साए म तकिये पर सर रखता है। इन बातो को सुनकर एकाएक जहाक की गैरत जाग गई और वह आग-बबूला हो उठा। उसने बडे कठोर स्वर से

कादवर को फटकारते हुए कहा कि 'तुमसे महल की रक्षा भी न हो सकी। मैंन तुमको वहा किसलिए छोडा था ? आज से तुम मेरे रक्षक नही हो।'

शाह जहाक न घोडे पर जीन कसने का हुक्म दिया और उसी समय बगदाद की तरफ चल पडा। उसके पीछे उसके सिपाही भी थे। इधर फरीदुन की फौज को जहाक की वापसी की खबर मिली। सारे फौजी उस तरफ चल पडे। शहर के वृढे जवान सभी जहाक के विरोध मे उठ खडे हुए जा आज तक उसके अत्याचारो से भयभीत घरो म छुपे हुए थे। उनक नारा की आवाज मे पहाड गूज रहे थे और घोडा की टापो से जमीन धमक रही थी। वातावरण म धूल के काले वादल छा गये थे। एकाएक आति शकदेह से आवाज उभरी कि अब शाह जहाक को सहन करना कठिन है।

उस उत्तेजित भीड मे सूरज की तरह चमकता एक चेहरा नजर आया जो जिरह बख्तर पहन हुए था ताकि उसको राजमहल मे कोई पहचान न सक। वह वास्तव म शहरनवाज थी, जो फरीदुन की सहायता के लिए निकली थी और जहाक के विरोध म हथियार उठाना एक नेक काम समझ रही थी। फरीदुन की गदा काम आई और जहाक को कैद कर लिया गया। उसके हाथ पैर चमडे की रस्सी से बाध दिए गए। फिर उसको गार मे डाल दिया गया और उसके मुह पर पत्थर रख दिए गए ताकि ससार के लाग सुख की सास ले सकें। इसके बाद फरीदुन ने शहर के बुजुर्गो और बुद्धिमानो को जमा करके कहा कि "जहाक जैसे अत्याचारी शाह न वर्षों राज किया और इस जमीन को लोगो के खून स रगा। उसने न खुदा को याद किया और न नकी की राह पर चला। खुदा ने मुझे भेजा ताकि मैं उसके जुल्म से जनता को मुक्त करू। खुदा ने मुझे इस काबिल बनाया और मैं इस परीक्षा मे सफल हुआ। अब आप मुझसे नेकी के अतिरिक्त कुछ और नही देखेंगे। आप सब खुदा का शुक्र अदा करे। हथियार और युद्ध को भूलकर अपने परिवार के साथ सुख चैन स रह।"

य बातें सुनकर जनता खुश हुई। फरीदुन शाही तख्त पर बैठा और न्याय और सत्य के रास्त पर चला। जुल्म की रस्म खत्म हुइ और लोगो ने चन की सास ली।

दास्तान-ए-साम व सीमुर्ग

जाबुलिस्तान का अमीर साम नरीमान अपने जमाने का नामवर पहलवान था। उसके पास आराम की सारी वस्तुए मौजूद थी। मगर औलाद न होनेसे दुखी रहता था। वर्षों गुजर गए। आखिर साम की पत्नी नौबहार गर्भवती हुई और उसने एक लडके को जन्म दिया। बच्चे का चेहरा लाल, आखें काली और सर के बाल बिल्कुल सफेद थे। अपने बेटे की यह शक्ल-सूरत देखकर मा गम में डूब गई। सप्ताह भर तक साम से यह बात छुपाई गई, क्योंकि उसको यह समाचार सुनाने की हिम्मत किसी में नहीं थी।

बच्चे की दाई दिलेर औरत थी। उससे नहीं रहा गया और वह साम के पास गयी और कहने लगी—'स्वामी! बधाई हो, आपके यहा एक नेक चेहरे वाले मोटे ताजे तन्दुरुस्त बच्चे ने जन्म ले लिया है, जिसका चेहरा सूर्य की तरह सुर्ख व तेजस्वी है, बस उसके सर के बाल सफेद हैं। आपके भाग का लिखा यही था। इसका दुख न करें। यह खुशी की घड़ी है इसलिए आप खुशी मनाए।"

दाई की बात सुनकर साम तख्त से उतरा और लपककर अन्दर नौबहार के पास पहुचा, जहा बच्चा था। बच्चे को देखकर साम सहम गया और भयभीत होकर सोचने लगा कि मुझसे क्या गलती हुई जो खुदा ने मुझे ऐसा बच्चा दिया। फिर उसको इस बात की चिन्ता सताने लगी कि सफेद बाल काली आखें और लाल मुह के इस बच्चे को देखकर सब उसका मजाक उडाएगे कि वर्षों बाद तो पुत्र जन्मा, वह भी विचित्र शक्ल-सूरत के साथ। साम को लगा कि यह बच्चा मनहूस है। शैतान का दूसरा रूप है। इसका यहा रहना ईरान के लिए अपशकुन हो सकता है। इसलिए इसको यहा नहीं रखना है, बल्कि कहीं दूर फिकवा देना है। इतना सोचकर साम बाहर आया और सिपाहियों को हुक्म दिया कि यहा से दूर जो अलबुर्ज पर्वत है, जिस पर सूरज सीधा चमकता है, वहा इस शैतान बच्चे को फेंक आए।

सिपाही नवजात शिशु को मा के प्यार से दूर, बिना दूध व लिबास के,

अकेला पहाड पर छोड आए, जिसको यह भी नही पता था कि काला रग क्या होता है और सफेद रग किसे कहते हैं। यह पेहलवान का बेटा रात-दिन अकेला पडा कभी भूख से रोता, तो कभी अंगूठा चूसता। उस अलबुर्ज की चोटी पर सीमुग पक्षी का घोसला था। अपने भूखे बच्चो के लिए चारे की तलाश मे जब वह नीचे की तरफ उडा, तो बच्चे के रोने की आवाज स सारा पहाड गूजता पाया। सीमुग और नीचे उतरकर बच्चे के पास पहुचा, और देखा कि

यको शीर ख्वारे, खरुशन्दे दोद
जमीन हम चू दरियाए जूशन्दे दोद
जे खाराश गहवारा व दाया खाक
तन अज जामे दूर, लबआज शीर पाक

(एक बच्चा जलती जमीन पर पडा रोए चला जा रहा है, जिसका पालना काटो की झाड थी और धाय थी गम जमीम। उसके होठ दूध के बिना सूखे हुए थे और तन पर कोई कपडा मौजूद न था।)

सीमुग को बच्चे पर दया आ गई और वह अपने भूखे बच्चो को भूल कर नीचे उतरा, जलते पत्थर पर स बच्चे को चोच से उठाया और दमान की तरफ उडा, जहा उसका घोसला था। उसके बच्चे इस रोते हुए सुन्दर बालक को देखकर ताज्जुब मे पड गए। उनके मन मे भी सीमुग की तरह प्यार उमडा और प्यार स बच्चे का बदन अपने परो से सहलाने लगे। सीमुग के मन म इस बच्चे के लिए ममता उमड आई थी। उसने बडे प्यार से अपने बच्चो के साथ उसको भी पाला। यहा तक कि वह एक लम्बा-चौडा जवान बन गया।

एक दिन अलबुर्ज पर्वत से एक काफिला गुजर रहा था तो उसके लोग सफेद बालो वाले इस लडके और सीमुग को देखकर ताज्जुब म पड गए। लौटकर उन्होने यह कहानी सब लोगो को सुनाई। धीरे धीरे, जगल की आग की तरह यह बात एक से दूसरे तक फैल गई कि पर्वत पर एक जवान रहता है जिसकी आखें काली और बाल सफेद है। आखिर यह खबर साम नारीमान के कानो तक भी पहुची।

एक रात साम ने सपने मे घोडे पर एक हिन्दुस्तानी सवार को देखा

जो खुशखबरी सुना रहा है कि उसका बेटा जिन्दा है। यह देख, साम एकाएक जागा और चौंककर बिस्तर में उठ बैठा। उसने बुद्धिमानों एवं ज्योतिषियों को जमा किया। उनके सामने काफिले वालों की बातें और अपना सपना यह सुनाया ताकि उलझी गुत्थी को सुलझा सकें और साम को उचित सलाह दे सकें।

सभी ने हकीकत जानकर साम की निन्दा की और कहा कि उसने खुदा की दी हुई नियामत का अनादर किया है जबकि—

कि नर सग वर साक शीर व पलग
चे माही वे आव अन्दरुन या नहग
हमे बच्चे रा परवरान्दे अन्द
सताइश वे यज़दान रसान्दे अन्द

(क्या गुफा, क्या ज़मीन, हर जगह शेर और चीते पानी में मछली और घड़ियाल अपने बच्चों को पालते हुए खुदा का शुक्र अदा करते हैं।)

इसके बाद उन्होंने साम को बुरा भला कहते हुए समझाया भी कि सिर्फ सफेद बाल होने के कारण तुमने उस मासूम बच्चे को अपने से अलग कर दिया और वियाबान पहाड़ पर छोड़ आए। याद रखो, खुदा जिसको जिन्दा रखना चाहता है, उसको कोई भी नहीं मार सकता है। इसलिए सारे कष्ट झेलने के बाद भी तुम्हारा बेटा ज़रूर जिन्दा होगा। जाकर उसको वापस लाओ और खुदा से माफी मांगो।

रात को जब साम सोया, तो फिर उसने एक सपना देखा कि हिन्दुस्तान की पहाड़ियों की ओर से सिपाहियों के साथ एक जवान हाथ में झण्डा उठाए चला आ रहा है। उसके दोनों तरफ दो बुद्धिमान चले आ रहे हैं। उनमें से एक आगे बढ़ा और डपट कर बोला—'ओ नापाक मर्द! तू इतना कठोर दिल का भी हो सकता है कि जिस बच्चे को तूने खुदा से रो-रोकर मांगा था, उसी को पहाड़ पर फिकवा दिया? उसको तो तूने सफेद बालों की सजा दे दी मगर अपने को भी देख। तेरे सर के बाल भी सफेद हो रहे हैं। क्या इन पर रोज़ नये रंग लगायेगा? तू अपने को किसी तरह बाप कहलाने का हकदार नहीं है जबकि तेरे बेटे को एक पक्षी ने पाल पोस कर बड़ा किया है।'

साम घबराकर सपने से जागा और अलबुर्ज की ओर जाने की तयारी करने लगा। जब पर्वत के पास पहुचा, तो देखा कि उसकी चोटी पर सीमुर्ग का बडा सा घोसला किसी किले की तरह नीचे से नजर आ रहा है, जिसमें एक जवान बडे आराम से टहल रहा है। साम समझ गया कि यह फुर्तीला मजबूत जवान उसी का बेटा है! घोसले तक जाने के लिए साम पहलवान रास्ता ढूढता रहा, मगर वहा पहुचने की कोई राह उसे नजर नहीं आई। उसे महसूस हुआ जैसे सीमुर्ग का घोसला सितारो के नजदीक हो, जहा पहुचना गैरमुमकिन है। साम ने खुदा के आगे सर झुकाया, उससे क्षमा याचना करते हुए कहा कि "ऐ मालिक! मुझ पर रहम कर और मुझे रास्ता दिखा ताकि मैं अपने बेटे तक दोबारा पहुच सकू।"

एकाएक घोसले से सीमुर्ग ने नीचे नजर डाली, तो साम को चोटी के नीचे पहाड पर खडे पाया। समझ गया कि यह बच्चे का बाप है। सीमुर्ग जवान के पास आया और कहने लगा कि "बहादुर! मैंने तुम्हे आज तक एक दाया की तरह पाला है। तुमको बोलना सिखाया है। अब वक्त आ गया है, जब तुम्हे अपने घर लौट जाना चाहिए। तुम्हारा बाप तुम्हे ढूढ रहा है। आज से मैंने तुम्हारा नाम 'दस्तान' रखा है और आज के बाद तुम्हे इसी नाम से पुकारा जायेगा।"

"क्या आपका दिल मुझसे भर चुका है जो मुझे मेरे बाबा के पास भेज रहे है?" सीमुर्ग की बात सुनकर दस्तान की आखो मे आसू भर आए और वह कहने लगा कि—

नशीमे तो रखशन्दे गाह, मनअस्त
दो पर्रे तो, फर्रे कुलाह, मन अस्त

(मैं इस घोसले और इस चोटी के साथ पलकर बडा हुआ हू। आपके इन दो डैनो ने मुझे जिन्दगी दी है।)

दस्तान की बातें सुनकर सीमुर्ग ने उसको दिलासा देते हुए कहा कि "मैं तुमसे रिश्ता नही तोड रही हू। मैं हमेशा ही दाया की तरह तुम्हे प्यार करूगी, लेकिन तुमको जाबुलिस्तान लौटना होगा जहा तुम्हे पहलवानी व जग करनी पडेगी। यह पक्षी का घोसला तुम्हारे किस काम आयेगा। लेकिन मेरी तरफ से एक निशानी लेते जाओ। यह मेरे पख हैं।

जब तुम पर कोई कठिनाई आए, इन परो को आग म डाल देना, मैं फौरन उडकर तुम्हारी सहायता करने पहुच जाऊगी ।" इतना कहकर मादा सीमुग ने अपनी पीठ पर दस्तान को बिठाया और पहाड की चोटी से उडकर नीचे साम क पास पहुचा दिया ।

अपने सामने एक लम्बे चौडे मजबूत जवान को देखकर साम की आखें भर आइ । उसने सीमुग को धन्यवाद दिया, जिसने उस नवजात का पाल पोसकर आज तक जिन्दा रखा । फिर बेटे स अपने किये की क्षमा मागी । जाबुलिस्तान के पहलवानो एव जवानो ने जो इतना बलवान जवान देखा, तो उसको चारो तरफ से घेरकर उसकी तारीफें करने लगे । खुशी के नारो के साथ साम नारीमान खदा के आगे सिजदे म गिरा और बोला कि इस गुनाहगार बन्दे पर अब दया कर ।

दस्तान सफेद दाढी मूछ और बाल क साथ तमाम जगह घूमता फिरता था । *उसको सब दस्तान यानी 'जालजर' के नाम से पुकारते थे क्योंकि* उसका यह नाम सीमुग ने रखा था ।

दास्तान-ए-जाल व रुदाबे

शाह फरीदुन के तीन बेटे थे जो आपस में बहुत लडते झगडते थे। यह देखकर शाह फरीदुन बहुत चिन्तित रहता था। एक दिन उसने सलाह मशविरा करने के बाद अपने साम्राज्य को तीन हिस्सो में बाट दिया ताकि एक एक हिस्सा अपने बेटो मे बाट दे। इससे वे अपने अपने मुल्क और अपनी हुकूमत में व्यस्त हो जायेंगे और आपसी मन मुटाव एव कडवाहट समाप्त हो जायगी। यह सोचकर उसने सबसे बडे बेटे रुस्तम को रोम और बाख्तर का हिस्सा दिया। मझले बेटे तूर को चीन और तुर्किस्तान का, तीसरे बेटे इरज को ईरान और अरबिस्तान का भाग दिया।

इस बटवारे के बाद भी उनके आपसी झगडे समाप्त नही हुए और एक दिन इरज अपने दोनो बडे भाइयो के हाथो मारा गया। फरीदुन को अपने छोटे बेटे से बहुत सी आशाए थी। सब धूल में मिल गईं। इरज की पत्नी 'माहआफरीद' गर्भवती थी। पति के देहान्त के बाद उसने चाद सी बेटी को जन्म दिया।

फरीदुन पोती पर जान छिडकता था। जब वह जवान हुई, तो उसने अपने भाई के बेटे से जो ईरान का नामी पहलवान था और जिसका नाम पिसग था, अपनी पोती की शादी कर दी। कुछ समय बाद पिशग एव इरज की पुत्री के घर एक पुत्र का जन्म हुआ। उस पुत्र का नाम मनुचहर रखा गया। फरीदुन पडपोते का मुह देख-देखकर खुश होता था।

समय के उतार चढाव के साथ फरीदुन भी बूढा होता चला गया और एक दिन उसने अपने हाथो से मनुचहर के सर पर ताज रखा और कहा कि "मैं अब इस ससार से विदा ले रहा हू। मैंने तीनो बेटो के जख्म उठाए है। अब केवल तुमसे ही आशा है कि तुम इस हुकूमत की बागडोर अच्छी तरह सभालोगे।"

इसी के साथ फरीदुन ने साम नरीमान नाम के पहलवान से कहा कि

मैं तो जा रहा हू, मगर मेरे पीछे ईरान और मेरे परपोते मनुचहर का ध्यान रखना। इतना कहकर फरीदून ने आसमान की तरफ सर उठाकर कहा— खुदाया! मैं तुम्हारा शुक्र अदा करता हू कि तुमने मुझे तख्त व ताज दिया। कठिनाई के समय मे मेरी सहायता की और मुझे इसाफ की राह पर चलाया।

☐ ☐
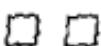
माजनदरान के दैत्यो और भेडियो ने जो उपद्रव मचाया उससे ईरान के शहशाह मनुचहर चिन्तित हुआ। जाबुलिस्तान के सरदार साम नारीमन पहलवान ने उन दैत्यो और भेडियो को खत्म करने के लिए ईरान की यात्रा की तैयारी शुरू कर दी और जाने से पहले उसने अपनी जिम्मेदारी अपने बेटे जालजर को सौंपते हुए कहा कि—

चुनान दान कि जाबुलिस्तान खाने तुस्त
जहान सर बे सर जीरे फरमान तुस्त

(अब तुम अपने को जाबुलिस्तान का (शासक) समझो। सारा राज्य तुम्हारी आज्ञा का पालन करेगा।)

इसके बाद साम ने अपने जालजर को उपदेश देते हुए कहा कि "सारे खजाने की कुजी तुम्हारे हाथ मे है। तुम जहा आराम और ऐश करना, वहीं पर न्याय के कामो के लिए युद्ध करने मे पीछे भी न हटना। मुझे तुम पर विश्वास है क्योकि तुम युद्ध की सारी कलाओं मे निपुण हो।"

पिता की बातें सुनकर 'जालजर' ने जवाब दिया कि—

कसी व गुनाहगार जे मादर बे जाद
मन आनअम सजद नर बे नालम बेदाद

(मैं मा के पेट से ही गुनाहगार पैदा हुआ हू। मगर मैं वह हू जो कभी फरियाद मे रोता नही हू।)

जालजर ने पिता की जुदाई को अपने अन्दाज से बयान करते हुए कहा कि आपने मुझे हमेशा अपने से अलग रखा। कभी मुझे पहाड पर छोड आए थे, जहा मैं अकेला था। मेरी गिनती पक्षियो मे होती थी। अब आप मुझे यू अकेला छोडकर युद्ध मे जा रहे हैं।

साम ने जालजर को सीने से लगाया। तभी फौज के कूच का नगाडा बज उठा। पिता पुत्र भारी मन से एक-दूसरे से अलग हुए।

□ □

साम के ईरान की तरफ चले जाने के बाद काबुल के नये शासक जालजर ने एक दिन तो शिकार खेलकर गुजारा और दूसरे दिन वह सहरा की तरफ चल पडा।

सुए किश्वर हिन्दुस्तान कर्द राह
सुए काबुल व दनबर व मुग व माइ
बे हर जाइगाही बिया रास्ती
मई व रुद व रामिशिगरान खास्ती

(जालजर दोस्तो, बहादुरो व चन्द सिपाहियो के संग हिन्दुस्तान और काबुल की तरफ चल पडा। यह काफिला किसी झरने या चश्मे के समीप सुस्ताने को ठहरता, तो जालजर संगीत की फरमाइश करता और गायको की तान पर दोस्तो के संग शराब के जाम उठाता।)

इसी हँसी-खुशी के साथ यह काफिला आखिर काबुल पहुचा। काबुल के शासक का नाम मेहराब था। वह एक बुद्धिमान और दिलेर आदमी था। मेहराब जहाक की नस्ल से था। जब उसने सुना कि साम का बेटा जाल काबुल की ओर आ रहा है, तो वह बहुत खुश हुआ और उसके स्वागत के लिए उसने जर जवाहर, खिलअत, दीबा, दीनार, याकुत, इत्र व अम्बर के साथ गुलाम और सिपाहियो का उपहार भेजा जिसमे एक सोने का कामदार हार और मोतियो का ताज भी था।

जब जालजर के पास यह उपहार लेकर मेहराब पहुचा तो जालजर ने उसे बडे सम्मान के साथ फिरोज़े के तख्त पर बिठाया। महफिल सज गई। गायको ने तान छेडी और संगीतकारो ने साज बजाने शुरू कर दिए। शराब से भरे जाम आए और अतिथि के आगे पेश किये गये। व्यंजन से भरा जाम खान (थाल) सामने रखा गया। मेहराब ने जब साम के बेटे जालजर की ओर निगाह भरकर देखा, तो उसका दिल धडक उठा। चेहरे पर खुशी की लाली फैल गई। मन मे जालजर के लम्बे कद और बलि॰5

भुजाओं को देखकर सोचने लगा कि जिसके पास ऐसा पुत्र हो, उसको और क्या चाहिए, उसको तो ससार की सारी दौलत मिल गई है।

चू मेहराब बरखास्त अज ख्वाने जाल
निगह फद जाल, अन्दर आन बरजब याल
चनीन गुफ्त व मेहतरान जाल जर
कि जीबनदेह तर जीन कि बन्दद कमर

(जब मेहराब अपनी जगह से उठा और चलने लगा तो जालजर उसके बलिष्ठ कन्धे और सीने को देखकर चकित रह गया। यह देखकर जालजर को उसके एक दिलेर साथी ने बताया कि महराब से कही सुन्दर उसकी बेटी है।)

मेहराब की बेटी की प्रशसा सुनकर उसको देखने के लिए जालजर बेचैन हो उठा। उस लडकी के प्रति जालजर का मन अनुराग से भर उठा और आखो से नीद उड गई। एक बेचैनी उसको सारी रात तडपाती रही।

चूकि मेहराब जालजर के खेमे मे उस दिन गया था और जालजर ने उसका अच्छा आदर सत्कार किया था। इसलिए चलते समय जालजर ने बडे प्यार से पूछा भी था कि यदि कोई इच्छा हो तो कहे। महराब ने जालजर के इस सम्मानपूर्वक कथन को सुनकर जवाब दिया था कि "ए नामदार! मेरी सिर्फ एक इच्छा है कि आप अपनी महानता का परिचय दें और एक दिन हमारे अतिथि बनने का सौभाग्य हम बख्शें।" उसकी बात सुनकर जालजर के मन मे मेहराब की लडकी को एक नजर देखने की इच्छा मचल उठी। मगर फिर सहज होकर उसने मेहराब को जवाब दिया कि इसके अलावा आप मुझसे और कुछ भी चाहते तो मैं इकार कभी न करता। लेकिन मेरे पिता साम नारीमान और ईरान के बादशाह मनुचहर यह कभी पसन्द नही करेंगे कि मैं जहाक के खानदान के किसी सदस्य का अतिथि बनकर उसके साथ 'खान (भोजन का थाल) पर बैठू।

जालजर का जवाब सुनकर मेहराब उदास होकर लौट आया मगर जालजर के दिल व दिमाग से उसकी लडकी का ख्याल नही उतरा।

□ □

मेहराब जब जालजर से मिलकर लौटा तो उसने अपनी पत्नी सीनदुख्त से उसकी खूब प्रशसा करी । उसकी बेटी 'रदाबे' भी वही बठी थी । पिता के मुख से जालजर के गुणो की विस्तार के साथ चर्चा और उसके चेहरे एव व्यक्तित्व का बयान सुनकर रदाबे को लगा कि उसका मन जालजर को दखने के लिए व्याकुल हो उठा है ।

रदाबे की पाच सखिया ऐसी थी जो उसके दिल का हर भेद जानती थी । रुदाबे ने अपने मन की इच्छा उनके सामने खोल दी । सुनकर सखिया उनको समझाने लगी कि यह कैसी दीवानगी तुम पर तारी हो गई है, जो तुम उस सफेद बालो वाले की ओर खिची जा रही हो, जबकि सात देशो के दिलेर और सुदर राजा एव राजकुमार तुम्हारे सौदय पर मुग्ध हैं ?

उपदेश भरी ये बातें सुनकर रुदाबे ने उनको झिडका कि कैसी बेवकूफी मे भरी बातें कर रही हो । तुम लोगो के सोचन का अदाज गलत है । असल मे जब मैं चाद की दीवानी हू, तो फिर सितारे मेरे किस काम के ? मैं तो जालजर की दिलेरी और बहादुरी पर मिटी हू न कि उसके चेहरे पर । उसके प्यार के आग रोम और चीन के बादशाह की भी मेरे सामने कोई कीमत नही हैं ।

रुदाबे के ये तेवर देखकर सखिया समझ गइ कि रदाबे के मन मे जालजर का अनुराग अपनी गहरी जडें जमा चुका है । यह बात समझकर उन्होंने रदाबे से कहा कि ओ चाद जसे चेहरे वाली मेरी सखी ! हम तुम्हारी ही बात मानने को तैयार है । हम तो तुम्हारी एक बात पर हजार जान से निछावर है । जो कहोगी, हम वही करेंगी । तुम अगर चाहती हो कि हम जादू सीखकर जालजर को तुम्हारे पास ले आए तो हम वही करेंगी, यहा तक कि अगर इस राह मे हमारी जान भी चली जाए, तो हम पीछे नही हटेंगी ।

पाचो सखियो ने एक तरकीब सोची । अपने को खूब सजाया, अच्छे कपडे पहने और जालजर के खेमे की तरफ चल पडी । बहार का मौसम था । हर तरफ हरियाली और रग बिरगे फूल खिले थे । सखिया नदी किनारे पहुची । जालजर का खेमा नदी के पास था । फूल चुनती हुइ, वे जालजर के खेमे के ठीक सामने खडी हो गई । उन्ह खडा देखकर जालजर

ने पूछा कि ये सुन्दर परियां कौन हैं ? उसको जवाब मिला कि ये मेहराब की बेटी की सखियां हैं, जो रोज यहां नदी किनारे फूल चुनने आती हैं।

यह सुनकर जालजर बेचैन हो उठा। धैर्य जाता रहा। तीर-कमान मंगवाया और एक नौकर के साथ धीरे धीरे नदी किनारे टहलने लगा। रूदाबे की सखियां नदी के दूसरे किनारे पर थीं। जालजर अवसर की ताक में था कि किसी बहाने सखियों से बात करने की राह निकाल सके और रूदाबे का हालचाल मालूम हो सके। तभी पानी पर एक मुर्गाबी तैरती हुई नजर आई। फौरन जालजर ने कमान पर तीर चढ़ाया और देखते-देखते मुर्गाबी पर निशाना लगा दिया। तीर खाकर मुर्गाबी उड़ी और सखियों की तरफ जाकर गिर पड़ी। जालजर ने नौकर को मुर्गाबी लेने दूसरे किनारे की तरफ भेजा। उसको मुर्गाबी उठाते देखकर सखियों ने पूछा कि यह तीर चलाने वाला कौन है ? ऐसा निशानेबाज तो हमने आज तक नहीं देखा ?

नौकर ने उनको जवाब दिया कि यह साम दिलावर के बेटे जालजर बहादुर हैं। इनके मुकाबले का बलवान कोई दूसरा नहीं है और न ही इनका जैसा दूसरा हसीन मर्द किसी ने आज तक देखा है।

सुनकर सखियां खिलखिलाकर हंस पड़ीं और कहने लगीं कि ऐसा नहीं है। मेहराब की लड़की सौन्दर्य में चांद और सूरज से भी ज्यादा है। इसके बाद उनमें से एक ने कहा कि

सजा बाशद व सख्त दर खूर बुअद
कि रुदाबे व जाल हमसर बुअद

(एक जहान का नामवर पहलवान है, तो दूसरी अपने जमाने की रूपवती है। क्या अच्छा हो कि रूदाबे व जाल का विवाह हो जाए।)

सखियों का यह प्रस्ताव सुनकर नौकर खुश हुआ और कहने लगा कि इससे बढ़कर क्या बात हो सकती है कि चांद व सूरज का गठबंधन हो जाए। इतना कह वह नौकर मुर्गाबी उठाकर नदी के उस पार वापस चला आया और जालजर को सारी बातें कह सुनाईं। ये बातें सुनकर जालजर इतना खुश हुआ कि उसने आदेश दिया कि रूदाबे की सखियों को खिलअत व जर-जवाहर भेंट में दिया जाए। सखियों ने उपहार स्वीकार किया और कहा कि यदि कोई पैगाम कहना हो तो पहलवान जरूर हमसे कह दें।

जालजर थोडा-सा आगे बढा और सखिया के समीप पहुचकर उसने रुदाबे के बारे मे प्रश्न पूछे। उसके गुणो को सुनकर जालजर के मन में रुदाबे का प्रेम और भी गहराई से ठाठें मारने लगा। उसके चेहरे के भाव देखकर सखिया जालजर के मन का हाल समझ गइ और कहने लगी कि हम जरूर आपके बारे म रुदाबे को बतायेंगी। यदि आपको उनका दीदार करना है तो रात को रुदाबे के महल की ओर आए और उनकी झलक देख लें।

सखियो ने वापस जाकर यह शुभ समाचार रुदाबे को सुनाया। जब रात हुई तो रुदाबे ने सखियो को छुपाकर पहलवान को लेने भेजा और स्वय महल की छत पर खडी होकर उसकी प्रतीक्षा करने लगी।

जब रुदाबे ने जालजर को आता देखा, तो खुशी से चिल्लाई और उसके स्वागत म आखें बिछाई। जालजर ने भी दूर स छत पर खडा जो चाद देखा तो खुश होकर उसने रुदाबे के सलाम का जवाब उसी गर्मी और मोहब्बत से दिया।

रुदाबे ने अपने लम्बे बाल खोलकर नीचे कमन्द की तरह जालजर के पास गिरा दिए ताकि जालजर उसके सहारे ऊपर छत तक पहुच जाए। यह देखकर जालजर ने रुदाबे के बालो का चुम्बन लिया और कहा कि यह न समझना कि तुम्हारी सुगन्धित जुल्फो को मैं कमन्द बनाऊगा। इतना कहकर उसने अपनी कमन्द निकाली और उसके सहारे वह ऊपर चढ़कर रुदाबे के पास पहुचा। रुदाबे को अपनी बाहो म भरकर जालजर ने कहा कि मैं तुम्हारा आशिक हू और तुम्हारे अलावा किसी और से विवाह करने वाला नही हू, लेकिन यह भी हकीकत है कि किसी भी कीमत पर मेरे पिता और ईरान के शाह इस बात पर राजी नही होगे कि मैं जहाक के परिवार म विवाह करू।

जालजर की यह बात सुनकर रुदाबे उदास हो गई और उसके आसू उसके गालो पर बह निकले। रुदाबे न भरे कण्ठ से कहा कि अगर जहाक जालिम था तो मेरा इसमे क्या अपराध है। मैंने तो आपकी बहादुरी के किस्से सुन-सुनकर अपना दिल आपको सौंप दिया और यह प्रण लिया कि आपके अतिरिक्त कोई दूसरा इसान मेरा पति नहीं बन सकता। सुनकर

शादी करने वालों की सूची बहुत लम्बी है, मगर मैं तो आपके प्यार में डूब चुकी हूं।

जालजर ने मोहब्बत भरी नजरों से रुदाबे को देखा और उसकी बातें सुनकर किसी गहरी सोच में डूब गया। थोड़ी देर बाद उसने दिलासा देते हुए रुदाबे से कहा कि ए दिले आराम। तुम दुखी न हो मैं खुदा से दुआ करूंगा कि वह साम और मनुचहर के दिलों से घृणा को खत्म कर दे और तुम्हारे लिए उनके मन में प्रेम का बीज बो दे। मुझे यकीन है कि ईरान का नेक और रहमदिल शाह हम पर जुल्म नहीं करेगा।

रुदाबे ने सौगन्ध खाई कि जालजर के अतिरिक्त वह इस दुनिया में किसी को अपना पति नहीं मानेंगी और न ही अपना दिल किसी और को देगी। इस तरह से दो खूबसूरत चेहरे वालों ने आपस में वचन दिया, मोहब्बत की कसम खाई और एक-दूसरे के प्रति वफादार रहने का दृढ़ निश्चय करके वे दोनों एक दूसरे से जुदा हुए। जालजर लौटकर अपने खेमे की तरफ चला गया।

□ □

जालजर पल भर के लिए भी रुदाबे के खयाल से मुक्त नहीं हो पाया। बार-बार उसको एक ही चिंता खाए जा रही थी कि इस बंधन को पिता साम और शाह मनुचहर कभी स्वीकार नहीं करेंगे। इस परेशानी में एक दिन गुजर गया।

दूसरे दिन जालजर ने बुद्धिमानों व धर्म पंडितों को बुलाया और उनसे बातें करनी आरम्भ की, और अपने दिल का भेद कुछ इस तरह से बताना शुरू किया कि—"मैं जानता हूं कि विवाह की रस्म की शुरूआत इंसानों के बीच बहुत पुरानी है। मर्द औरत से शादी इसलिए करता है कि वह उसकी नस्ल आगे बढ़ाए और यह संसार आबाद और खुशहाल बना रहे। अफसोस इसी बात का है कि साम नारीमान की नस्ल आगे नहीं बढ़ पायेगी, क्योंकि जालजर के कोई औलाद पैदा नहीं होगी। पहलवान और दिलेरी की रस्म इस जमीन से उठ जायगी। मेरा खयाल था कि महराब की बेटी रुदाबे से विवाह करूं जिसके प्रेम का बीज मेरे दिल की जमीन में गढ़ गया है। मुझे दूसरी कोई लड़की रुदाबे से अधिक गुणवान एवं सुंदर नजर नहीं आती

है। जब आप इस बारे म क्या राय देंगे ?"

अमीर जालजर की बात सुनकर सारे बुजुर्गों ने सर नीचे कर लिय और गहरी चिन्ता म डूब गए। जाल ने दोबारा अपनी बात जारी रखी कि मुझे पता है, आप सब मुझे उपदेश देंगे। मगर मैंने रुदाब को इतना नेक पाया है कि मैं उसके बिना खुश रहना तो दूर, जिन्दा भी नही बचूगा। आप सब मेरी मदद करें ताकि मैं इस सकट से उबर सकू। यदि आपने मेर इस लक्ष्य को सफल बनाया तो, विश्वास कीजिए मैं आप सबके प्रति इतनी नेकी करूगा, जितनी आज तक बुजुर्गों, बुद्धिमानो के प्रति किसी ने नही दिखाइ है।

बुजुर्गों ने जब जालजर की मोहब्बत की बुनियाद रुदाबे के प्रति इतनी मजबूत देखी तो उन्होने कहा—"ए नामदार! हम सब आपके हुक्म के नौकर है। आपके सुख के अतिरिक्त और कुछ नही सोचत है। विवाह की इच्छा करना कोई बुरी बात नही है। माना कि रुदाबे आपकी महानता के मुकाबले की नही है, मगर वह दिलेर और नामदार है। उसमे शान व शौकत की कमी नही है! ठीक है कि शाह जहाक एक अत्याचारी शासक था। उसने ईरानियो पर बहुत जुल्म किये थे, मगर साथ ही वह एक बलवान, सुव्यवस्थित हाकिम भी था। इस गिरह को सुलझाने की एक तरकीब समझ मे आती है कि आप अपने दिल का हाल अपने पिता साम नारीमान को लिख भेजें और उनको अपने इस राज मे शरीक करें। यदि अमीर साम आपके प्रति नम्र रहे, तो उनकी इच्छा क विरुद्ध शाह मनुचहर कोई भी कदम नही उठायेंगे।"

जालजर ने पिता को एक लम्बा खत लिखा जिसम अपन बचपन का जिक्र मा-बाप के प्यार की कमी के बयान के बाद उसने रुदाब की तारीफ लिखी और फिर उससे शादी करने की अपनी इच्छा लिखी। बेटे का पत्र पढकर साम सकत म आ गया। आश्चय से उसकी आखें फटी रह गइ। उसको यह बात हजम नही हो पा रही थी कि उसकी नस्ल का सिलसिला फरीदुन स है और अब उसी जहाक स वह कसे खानदानी रिश्ता जाड सकता है? अन्त म साम नारीमान ने खुदा से कहा कि आखिर जाल न अपनी असलियत दिखा ही दी! जो परिन्दो के बीच पलकर पहाड पर बडा

हुआ हो, उसमे इसी तरह की हरकत की उम्मीद की जा सकती है।

दुखी उदास साम रणक्षेत्र से वापस आया और सारे दिन इस उधेड-बुन मे रहा कि अगर बेट को रोकता हू तो अपना वचन तोडता हू। मगर उसका साथ दू तो जान बूझकर खाने में जहर कैसे मिला सकता हू? परिंदे द्वारा लालन पालन किए गये इस लडके का और उस दैत्य के घर मे बडी हुई लडकी का आपस म निर्वाह कैसे होगा? तब जाबुलिस्तान का शासक कौन बनेगा? साम यह सब सोचते हुए टूटे दिल से बिस्तर पर लेट गया।

सुबह उठते ही साम ने सबसे पहले आदेश दिया कि बुद्धिमानो, ज्योतिषियो और धम पण्डितो को बुलाया जाए। जब वे सब जमा हो गए तो साम नारीमान ने रूदाबे एव जालजर की समस्या उनको बताते हुए कहा कि किस तरह दो विभिन्न गुणो का मेल हो सकता है। एक आग है तो दूसरा पानी है। फरीदुन और जहाक के खानदान का आपसी मिलाप कैसे सम्भव है? ज्योतिषी सितारे देखें और बुद्धिमान सोचें कि आखिर जाल की भाग्यरेखा क्या कहती है और हमारे खानदान की किस्मत म आगे क्या लिखा है?

ज्योतिषियो ने पूरा एक दिन इस काम मे लगा दिया। अन्त मे वे प्रसन्नचित्त साम के पास पहुचे और यह शुभ समाचार सुनाया कि रूदाबे एव जालजर का मिलन शुभ है। इन दोनो से एक दिलेर औलाद पैदा होगी जो अपनी तलवार के दम पर दुनिया को झुकायेगी। इरान के दुश्मनो के दात खट्टे करेगी और पहलवानो का नाम रोशन करेगी।

साम ज्योतिषियो की बातें सुनकर खुश हुआ और उनको दरहम और दीनारें बख्शी। उसके बाद सन्देश वाहक को जालजर के पास इस पैगाम के साथ भेजा कि मैं तुम्हारे फैसले से पूरी तरह राजी नही हू, मगर चूकि तुम्हे वचन दे चुका था कि तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूगा इसलिए तुम्हारी खुशी म ही मेरी खुशी है। मैं यहा से शहशाह मनुचहर के पास जा रहा हू ताकि उन्हे यह सूचना देकर उनसे इजाजत लू।

☐ ☐

रूदाबे और जालजर के बीच पैगाम ले जाने वाली औरत बहुत चालाक थी। जब जाल के पास साम का पत्र पहुचा, तो उसने यह खुशखबरी उस

औरत के द्वारा रुदावे के पास पहुचाई। रुदावे ने खुश होकर उसे ईनाम दिया। जब वह औरत रुदावे के कमर मे निकल रही थी, उस समय सीनदुख्त ने उसको देख लिया और पूछा कि वह कौन है और यहा क्या कर रही है ? औरत ने बडी चालाकी मे बात बताई कि मैं दुखियारी औरत हू। कपडे व जेवर लेकर बडे घरा म बेचने जाती हू। शाह काबुल की बेटी ने मुझसे कुछ कीमती कपडे मगाए थे, वही देकर लौट रही थी। सीनदुख्त ने पूछा कि रुदावे ने जो कीमत उन चीजो की दी है वह कहा है ? इस पर उस औरत न फौरन जवाब दिया कि शहजादी न कल देने को कहा है।

इस बात को सुनकर सीनदुख्त का शक पक्का हो गया। उसने उस औरत के पास रुदाब का दिया कपडा और अगूठी देखी तो क्रोध से उबल पडी। उस औरत को महल से बाहर निकलवाकर फिर रुदावे के पास पहुची और बोली—"बेटी, यह कौन सा तरीका तुमने अपनाया है ? सारी जिन्दगी मैंने तुम्हे प्यार से रखा, पाला-पोसा, तुम्हारी हर इच्छा पूरी की और अब तुम मुझसे अपने दिल की बातें छुपा रही हो ? यह औरत कौन है ? यहा क्यो आई थी ? वह अगूठी तुमने किसके लिए भेजी है ? तुम शाही खानदान की लडकी हो। तुमसे ज्यादा खूबसूरत व गुणी कोई दूसरी लडकी नही है। क्या तुम अपनी बदनामी करवाना चाहती हो और मा को शोक म डुबोना चाहती हो ?"

मा की फटकार सुनकर रुदावे ने सर झुका लिया। उसकी आखो से दो मोटे मोटे आसू लुढक कर गालो पर बह आए। उसन मा से कहा—"मैं जालजर के अनुराग मे उसी दिन से बध गई हू, जब से वह जाबुल से काबुल आया। मैं उसकी वीरता की दीवानी हो चुकी हू। मेरा चैन और आराम सब कुछ छिन गया है। हमने साथ साथ बैठकर बातें की हैं, एक-दूसरे को वचन दिया है, मगर ऐसा कोई कदम नही उठाया जिससे आपकी इज्जत को ठेस पहुचे। जालजर मुझसे विवाह करना चाहता है। इजाजत पाने के लिए उसन इस बात की सूचना अपने साम को दी। पहले वह गमगीन हुए फिर उन्होन बेटे की खुशी देखी। यह औरत वही खुशखबरी लेकर आई थी और उसी की खुशी से मैंने यह अगूठी जाल को भेजी थी।"

सीनदुख्त ने बेटी के मुह से जब ये बातें सुनी तो ठगी-सी रह गई।

उसके बाद उसने रुदाब से कहा कि जालजर नामवर पहलवान साम नारीमान का बेटा है। ईरान का शाह यह विवाह होना कभी पसन्द नही करेगा क्योंकि उसके मन मे जहाक के प्रति विष भरा हुआ है। हो सकता है कि वह इस खबर को जानकर क्रोध म आकर कही पूरे काबुल को ही वीरान न कर दे और हमारे खानदान को जड स उखाड फेंकें। इसलिए इस बात को लकर इतनी खुशी ठीक नही है। इतना कहकर सीनदुख्त ने उस औरत को बुलाकर उसस प्यार से व्यवहार किया और इस भेद का छुपाए रखने के लिए कहा। फिर वह बेटी के बिस्तर के सिरहाने गई जहा रुदाबे लेटी रो रही थी।

☐ ☐
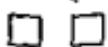
मेहराब जब रात को महल म दाखिल हुए तो उसन सीनदुख्त को दुखी और परेशान पाया। मेहराब ने सीनदुख्त से पूछा कि क्या बात है, जो वह इतनी उदास और परेशान नजर आ रही है?

सीनदुख्त ने चिन्तित होकर कहा कि मैं आने वाली मुसीबत की घडी से भयभीत हू। जब यह महल, यह दौलत, ये दोस्त, यह महफिल कुछ भी बाकी नही रहेगा। हमने कितनी मेहनत और लगन स पौधा लगाया था। उसकी किस प्यार से सिंचाई और गुडाई की थी। अब जब उसके साय मे बैठन का समय आया, तो वह जमीन पर गिर गया। उस दरख्त न केवल दुख और चिन्ता के अलावा कुछ न दिया। बस इसी सोच विचार स मेरा मन व मस्तिष्क परेशान है। साफ दिखाई दे रहा है कि कुछ भी स्थिर नही है। पता नही, इसका क्या अजाम होने वाला है।

मेहराब को यह सुनकर ताज्जुब हुआ। फिर उसने सीनदुख्त म कहा कि हा, यही जमाने का दस्तूर है। हमसे पहले जिनके पास महल और खजाना था, वह भी इस नश्वर ससार स चल गए। इस ससार म स्थिर कुछ भी नही है। एक आता है, दूसरा चला जाता है। मगर यह फलसफा तो बहुत पुराना है। इसमे नई क्या बात है जो आज तुम इस पर इतनी चिन्ता करके अपने को दुखी बना रही हो? सीनदुख्त की आखें भर आइ। उसने धीरे म कहा कि मैंने हजार दफा म तुमसे बात कही थी। मगर वह भेद नही खोला था। लेकिन अब मैं तुमसे वह भेद छुपा सकती हू। हमारी

बेटी, जालजर की ही बाते करती है। उसको हर तरह के उपदेश देकर, समझा-बुझाकर हार गई। मगर उसका दिल जालजर की ओर से नही हटता।

इतना सुनते ही मेहराब अपनी जगह से उठ खडा हुआ। म्यान से तलवार निकाली और चीख पडा कि रुदाबे को मेरी इज्जत का भी खयाल नही। वह खानदान की इज्जत खाक मे मिलाना चाहती है। अच्छा है कि मैं उसी का खून इस धरती पर बहा दू।

सीनदुख्त ने लपककर पति का दामन पकडा और कहा कि कुछ मेरी भी सुनो। जो चाहो सो करो, मगर बेगुनाह का खून मत बहाओ। मेहराब ने पत्नी को धक्का देकर अलग कर दिया और चीखा कि काश! मैं रुदाबे को उसी दिन दफना देता जिस दिन वह पैदा हुई थी। वह कम से कम इस तरह का कदम उठाकर मुझे बदनाम तो न कर पाती। अगर साम और मनुचहर ने यह भेद जान लिया कि जालजर न जहाक के खानदान की लडकी को दिल दे दिया है, तो वह हमम से किसी को भी जिन्दा नही छोडेंगे। उसी दम हम कत्ल कर देंगे।

सीनदुख्त ने जल्दी से कहा—"भयभीत मत हो! साम को यह भेद पता है और वह शाह के पास गया हुआ है ताकि उसका मन फेर सके!"

मेहराब सीनदुख्त की बात सुनकर आश्चयचकित रह गया और बोला —"ए औरत! साफ साफ कहो, मुझसे कुछ भी न छुपाओ! मैं कैसे इस बात पर यकीन कर लू कि पहलवानो का सरताज साम हमसे रिश्ता करन की बात सोच सकता है! अगर मनुचहर व साम का भय न हो तो सच्ची बात तो यह है कि जाल मे बेहतर दामाद हमे नही मिलेगा। किस तरह शाह के क्रोध से बचा जाए?"

सीनदुख्त ने कहा—मैंने तुमसे सब कुछ सच कहा है। मेहराब की उत्ते-जना कम नही हुई थी। उसने आदेश दिया कि फौरन रुदाबे को बुलाओ।

सीनदुख्त पति के तवर से डरी हुई थी कि कही रुदाबे को कोई दुख न पहुचे सो पति से उसने वचन लिया कि वह रुदाबे को किसी प्रकार की हानि नही पहुचायेगा। तभी वह बेटी को आवाज देगी, वरना नही। मेहराब न वचन दिया कि वह रुदाबे को वसी ही लौटायेगा जैसी वह मेरे

पास आयगी। सीनदुख्त बेटी के पास पहुची। उसको खबर सुनाई कि मेहराब उसके भेद को जान गया है और उसकी जान बख्श दी है। रुदावे बिना किसी भय के जालजर के प्यार मे शराबोर पिता के सम्मुख पहुची। उसको देखते ही मेहराब गुस्से मे चीख उठा और बेटी को फटकारना शुरू कर दिया। रुदावे ने जो पिता का क्रोध दखा, तो चुपचाप आखें बन्द किए मोटे मोटे आसू गिराती रही और थोडी देर बाद अपने कमरे म वापस आ गई।

☐ ☐

यह समाचार जब शाह मनुचहर के कानो तक पहुचा तो उसके माथे पर बल पड गए और वह सोचने लगा कि फरीदुन का खानदान वर्षों जहाक के जुल्म को समाप्त करने मे सघर्ष रत रहा। अब जाल और रुदाबे का यह मिलन कौन सी खुशी देगा। कही ऐसा तो नही है कि कल जाबुल का यह शासक हमारे विरोध मे खडा होकर ईरान का शाह बनने का सपना देखने लग। अच्छा यही है कि जाल को इस विवाह के लिए मना करू।

इस बीच साम जग मे वापस लौट आया था। मनुचहर ने अपने बेटे और बुजुर्गों को उसके स्वागत के लिए भेजा। जब साम मनुचहर के दीदार के लिए पहुचा तो, स्वय मनुचहर ने उठकर उसको अपने तख्त पर साथ बिठाया और जग के हालात तथा रास्ते की थकन के बारे मे बिस्तार से जानना चाहा। साम ने शाह को दुश्मनो के किस्से सुनाए और जीत की खबर भी सुनाइ। फिर सोचने लगा कि इसी समय रुदाबे व जाल की बात भी छेड दे तो अच्छा है। शाह मनुचहर अभी खुश भी हैं। उसकी बात ध्यान से सुनेंगे। मगर शाह मनुचहर न फौरन ही साम स कहा कि अब जहा तुमने इतना कष्ट उठाया है, वही पर लश्कर लेकर काबुल और हिदुस्तान की तरफ जाओ और जहाक के परिवार की आखिरी निशानी को भी खत्म कर दो ताकि यह ससार उसके नापाक नाम से पाक हो जाए और मुझे भी सतोष मिले।

यह सुनते ही साम की जबान पर आए शब्द वही दम तोड गए। चुपचाप उसने झुककर शाह के कदमो का बोसा लिया और कहा—आपकी यदि यही इच्छा है तो मैं ऐसा ही करूगा। इतना कहकर वह फौज के साथ

सीस्तान की तरफ चल पडा।

☐ ☐

शाह मनुचहर के इरादे की खबर जब काबुल पहुची, तो पूरे शहर म सनसनी फैल गई और लोग उत्तेजित हो उठे। मेहराब का परिवार निराशा म डूब गया रुदाबे की आखो से आसू की लडिया गिरन लगी। जालजर के पास यह खबर पहुची तो, सोचा कि यह कैसा अन्याय है? जालजर यह सुनकर परेशान हो उठा। उसी हालत म वह पिता की फौज के पीछे काबुल की ओर हो लिया।

साम नारीमान ने अपने बडे अफसरो को बेटे के स्वागत के लिए भेजा। जालजर थका, उदास चेहरा लिये अन्दर आया जिस पर शिकायत का भी भाव था। जमीन चूमी और साम पहलवान को अभिवादन करने के बाद कहा—"ऐ बेदार दिल वाले पहलवान! आपका वैभव सदा बना रहे। सारा ईरान आपकी दिलेरी का गुणगान करता है। सारी जनता आपसे खुश है, मगर मैं अकेला आपसे बहुत दुःखी हू। वही लोग आपसे न्याय पाते है और मुझे आपसे सदा अन्याय मिलता रहा है। मैं परिन्दे के साथ पलकर बडा होने वाला ऐसा इसान हू, जिसने आज तक किसी को दुःख नही पहुचाया है। अभी तक किसी का बुरा नही चाहा। मेरा सिर्फ इतना अपराध है कि मैं साम का बेटा हू। मुझे पैदा होते ही मा से अलग करके पहाड पर फेंक दिया। फिर काले और सफेद का प्रश्न उठाकर खुदा से झगडा किया। तब से आज तक मैं मा बाप दोनो के प्यार से महरूम रहा तो भी खुदा ने मुझ पर दया की और सीमुग ने मुझे पाला, जवान किया। मैं युद्ध कला मे निपुण सभी गुणो से सुसज्जित एक ऐसा पहलवान हू, जिसका जवाब इस धरती पर दूसरा नही है। जबसे आपको देखा और पाया, मैंने आपकी हर आज्ञा का पालन किया और आपकी सेवा करनी चाही। सारी दुनिया मे बस मेहराब की लडकी को ही सच्चे दिल से पाने की इच्छा की जो सुन्दर और मर्यादा वाली है, सक्षेप म कहू तो हर तरह मे महान है।

निश्स्तम बे काबुल बेफरमान तो
निगेह दाश्तम राइ व पैमान तो

वेगुफ्ती कि हरगिज नि आजारमत
दरख्ती कि कश्ती वेवार आर मत

(मैंने आपके हुक्म के खिलाफ कभी कदम नही उठाया। आपके कहने मे काबुल का शासक बना। आपने वचन दिया था कि मुझे अब कभी दुःख नही देंगे और जो पेड आपने लगाया है, उसमे फल लगेंगे और आप उसे कभी नही काटेंगे।)

जे माजेदरान हदिए इन साख्ती
हम अज गुरगसरान वैदिन ताख्ती
कि विरान कुनी काख ए आबादे मन
चनीन दाद खाही हमी दादे मन

(आपने मेरी हर इच्छा पूरी करने का वायदा किया था मगर जब मैंने अपनी इच्छा आपसे कही तो आप माजन्दरान से फौज लेकर लडने आ गए। ताकि मेरी इच्छाओ का महल खाक म मिला दें। इसी तरीके से शायद आप मुझे वचन देकर न्याय करना चाहते है।)

मन इनक पीशे तो इस्तादेह अम
तन जिन्दे रश्म तोरा दादेह अम
वरेंह मि आयम वे दू नीमेह कुन
जे कावुल म पैमाइ व मन सुखन

(मैं आपके आगे आपका सेवक बना खडा हू। यदि आप चाहे तो इस जिन्दा बदन को अपने गुस्से से खत्म कर दें और आदेश दें कि मेरे तन को आरी से दो टुकडे कर दें, मगर आप काबुल के बारे मे मुझसे एक शब्द भी नही कहेंगे।)

आखिर म जालजर ने पिता से कहा—

वे कुन हर चे ख्वाही फरमान तोरास्त
वे कावुल गजन्दी बुवद आन मरास्त

(यह बात आपसे साफ कह दू कि आप जो चाहे करें मगर मैं काबुल को नुकसान नही पहुचने दूगा। जब तक मैं जिन्दा हू, मेहराव का आप हाथ नही लगा सकते हैं। पहले आप मेरा सर तन से जुदा करें फिर काबुल की तरफ कदम बढाए।)

जालजर की ये बातें सुनकर साम खामोश हो गया और चिन्ता मे डूब गया। आखिर कुछ देर बाद अपना सर उठाया और कहा—"मेरे दिलेर बेटे! आपकी शिकायत उचित है कि मैंने तुमको प्यार देने मे अपना कर्तव्य नही निभाया। मैंने तुम्हारी कोई इच्छा पूरी नही की जबकि मैंने तुम्हारी हर आरजू पूरी करने का वचन दिया था। शाह का आदेश मैं टाल नही सकता था। इसलिए फौज लेकर आना पडा। मगर तुम गमगीन मत हो। अपने तेवरी के बल तोडो। मेरे साथ बैठो। हम मिलकर इस समस्या का समाधान ढूढेंगे। लेकिन साथ ही साथ यह भी जरूरी है कि मैं शाह को तुम्हारे प्रति मेहरबान और उनका दिल तुम्हारे लिए नम बनाऊ। यह भी बहुत जरूरी है।"

इसके बाद साम ने खतनवीस को बुलाने का आदेश दिया ताकि वह शाह के नाम पत्र लिखवा सके। साम ने शाह मनुचहर को सम्बोधित करते हुए लिखा कि शहशाह! मैं एक सौ बीस साल से आपकी सेवा कर रहा हू। इस लम्बे समय के दौरान, मैंने दुश्मनो की फौजो को हराकर देश के दरवाजे शाह के लिए खोले है। इरान का जो भी शत्रु मुझे जहा कही दिखा, मैंने उसको गदा मे मार गिराया। देश का बुरा चाहने वालो को कुचल डाला। मेरी तरह का पहलवान घुमावदार घटनाओ को इतना याद नही रखता, फिर भी मैं कुछ दिन पहले ही माजनदरान के दैत्यो को जो शाह के विरोध मे खडे हुए थे, उन्हे हराकर लौटा था। इसी तरह से उस अजदह को भी मार गिराया, जो पशु-पक्षी और इसान का जीना मुश्किल किये हुए था। सक्षेप मे इन गुजरे वर्षों मे मेरा बिस्तर घोडे की जीन और आराम के नाम पर रणक्षेत्र का मैदान रहा है। मैंने आपकी सेवा और सुरक्षा मे यह जिन्दगी गुजार दी। मेरी मनोकामना आपकी विजय और खुशी थी।

अब मैं बूढा हो रहा हू। मुझे खुशी है कि मैं शाह की सेवा करते-करते बुढापे तक पहुचा हू। अब बारी मेरे जालजर की है। उसको सारे गुणो से सजाकर मैंने शाह की सेवा के लिए तैयार किया है। आप उसको देखेंगे तो खुश हो जायेंगे। उसके दिल मे आपकी मोहब्बत और निष्ठा के पर जमा दिए हैं। अब जालजर की आरजू है कि वह आपकी सेवा मे हाजिर हो और जमीन का चुम्बन ले।

कुछ वर्षों पहले मैंने कुछ बुजुर्गों के सामने जालजर को यह वचन दिया था कि मैं अब उसे कभी अपने से अलग नही करूगा और उसकी हर इच्छा पूरी करूगा। अब काबुल की तरफ भी मैं शाह के आदेश के कारण ही आया हू। जालजर ने मेरा वचन मुझे याद दिलाते हुए यह प्रण किया है कि मैं काबुल में तभी दाखिल हो सकता हू जब उसकी लाश पर से गुजरू। ऐसा करने के पीछे कारण यह है जालजर मेहराब की लडकी से विवाह करना चाहता है, जो जहाक के खानदान से है।

शाह ! मेरा सिर्फ एक बेटा है। मुझे इस बात की भी चिन्ता है कि उसको दिया वचन कही टूट न जाए। ऐसे सकट के समय म आप हमारी मदद करें।

जस ही पत्र का लिखना समाप्त हुआ, फौरन जालजर वह पत्र लेकर तेज रफ्तार घोडे पर बैठ हवा से बातें करता हुआ शाह, मनुचहर के दरबार की तरफ दौड पडा। मनुचहर के पास पहुचा, तो उसने साम के बेटे के स्वागत के लिए बुजुर्गों का एक गिरोह भेजा। जालजर महल में दाखिल हुआ। जमीन चूमी और शाह मनुचहर को साम का पत्र दिया।

शाह मनुचहर ने बडे तपाक से उसका स्वागत किया और आदेश दिया कि रास्ते की धूल और थकन झाडकर जालजर को मुश्क व अम्बर की सुगन्ध से बसा दिया जाए। जब खत शाह मनुचहर ने पढा और जाल की मनोकामना को जाना तो हस पडा और जाल से कहा—"ओ दिलेर ! एसी इच्छा करके तुमने मेरी परेशानी बढा दी है। मैं तुम्हारी इस इच्छा से बहुत खुश तो नही हू। मगर बूढे साम की बात को टाल भी नही सकता। कुछ दिन तुम मेरे पास रुको ताकि मैं बुद्धिमानो, धर्म-पण्डितो से सलाह मशविरा कर सकू।"

इसके बाद महफिल सज गई। खाने रखे गए। शराब, शबाब, साज व सगीत से फिजा गूज उठी। तीन दिन तक ज्योतिषी सितारे मिलाते रहे और अन्त में शाह मनुचहर को यह शुभ समाचार मिला कि यह रिश्ता मुबारक साबित होगा। जाल से जन्मा बेटा बहादुर और नामवर पहलवान होगा। सुनकर शाह मनुचहर बहुत खुश हुआ और उसने बुद्धिमानो और पण्डितो को बुलाया ताकि वे जालजर की अक्ल की परीक्षा ले सकें और देख सकें कि जालजर कितना तेजस्वी है।

□ □

इधर मेहराब को जब साम की फौज का पता चला तो वह सीनदुख्त और रुदाबे पर क्रोधित होकर बोला कि उसकी बेवकूफी से काबुल शेर के चगुल मे फस चुका है। काबुल को वीरान करने के लिए शाह मनुचहर ने जो फौज भेजी है, उसका और साम का मुकाबला कौन कर सकता है। हम तबाह व बर्बाद हो गए। अब इस तबाही से बचने का एक ही तरीका बचा है कि मैं तुम्हारा सर भरे बाजार म तलवार से अलग करू ताकि मनुचहर का क्रोध शात हो। जनता तबाह और बर्बाद होने से बच जाए।

सीनदुख्त एक समझदार, दयावान औरत थी। उसने मेहराब से विनती करते हुए कहा कि मेरी एक बात गौर से सुनो, बाद मे भले ही मेरी हत्या कर देना। ठीक है कि हम पर सकट आन पडा है। उसको टालने के लिए अच्छा है कि तुम खजाने का मुह खोल दो। मुझे बहुमूल्य उपहार दो, जिसको लेकर मैं साम के पास जाऊ और उसको भेंट देकर किसी तरह उसको इस बात पर राजी करू कि वह काबुल पर हमला न करें। मेहराब ने जवाब दिया कि हमारी जान खतरे म है। ऐसे समय मे खजाने की किसको चिन्ता है। खजाने की कुजी उठाओ और जो चाहो करो।

सीनदुख्त ने चलने से पहले मेहराब से वचन लिया कि वह उसके पीछे रुदाबे को कोई दुख नही पहुचाएगा। इसके बाद उसन खजाना खोला। उसमे से सोना मोती निकाले। तीस अरबी घोडे और तीस ईरानी घोडे, सोने के साठ जाम, जो मुश्क अम्बर, याकूत और फिरोजे से भरे थे और सौ ऊटो पर विभिन्न उपहारो को लादकर वह साम के खेमे की तरफ बढी।

साम के पास खबर पहुची कि काबुल से उपहारो का काफिला आया है। साम का आदेश मिलते ही सीनदुख्त खेमे मे दाखिल हुई और साम के सम्मुख पहुचकर उसने अदब से झुककर जमीन का चुम्बन लिया और कहा कि मैं काबुल के शासक की ओर से उनके भेजे उपहार एव सदेश लेकर आई हू। साम ने नजरें उठाकर जो सामने देखा तो, दो मील तक मेहराब के भेजे घोडो-ऊटो और उपहारो की पक्ति खडी थी। यह देखकर साम आश्चर्य मे पड गया। साम के सामने फिर समस्या आन खडी हुई कि यह उपहार यदि वह स्वीकार करता है तो, मनुचहर की प्रताडना सुननी पडेगी कि वह

शत्रुओ की भेंट स्वीकार करता है। यदि यह सब कुछ लौटा देता है तो बेटे का दिल दुखेगा और साम का वचन टूटेगा।

साम चिन्ता मे डूब गया। आखिर उसने सिर उठाया और सीनदुख्त से कहा कि यह भेंट वह जालजर को दे दे। यह आदेश सुनते ही सीनदुख्त की खुशी की सीमा न रही और इस खुशी मे उसने साम के परो पर मोती बिखेरने का आदेश दिया और कहा, "इस दुनिया मे आप जैसा कोई दूसरा मददगार नही है। आपकी आज्ञा का पालन बुजुर्ग भी करते है और आपके आदेश के आगे ससार का सर झुका हुआ है। यदि मेहराब से कोई अपराध हुआ है, तो इसमे काबुल की जनता का क्या दोष, जो आम फौज के साथ आए? काबुल निवासी आपके प्रशसक और आपके समर्थक है। आपकी खुशी मे वे जिन्दा हैं, आपके परो की धूल को सिर आखो पर चढाते है। जिस खुदा ने सूरज और चाद, मौत और जिन्दगी बनाई है, उसके बारे म सोचें और निर्दोषो का खून न बहाए।'

साम स दशवाहक की इस वाक्पटुता को सुनकर चकित रह गया और सोचने लगा कि आखिर मेहराब ने इतने सारे दिलेरो को छोड इस औरत को ही क्यो भेजा है? साम ने सीनदुख्त से कहा कि मैं जो भी पूछू, उसका सही जवाब देना। तुम कौन हो और मेहराब से तुम्हारा क्या रिश्ता है? रूदाबे देखने सुनने मे तथा अक्ल और चाल चलन मे कैसी है? जाल रूदाबे पर किस हद तक मरता है?

सीनदुख्त ने साम की बात सुनकर कहा कि यदि आप मेरी जान बख्श दें तो मैं आपसे सारी बातें साफ-साफ कह दू। साम ने उसकी जान बख्श दी। इसके बाद सीनदुख्त न कहा—'नामवर! मैं मेहराब की पत्नी और रूदाबे की मा सीनदुख्त, जहाक के खानदान से हू। मेहराब क महल म हम सब आपके प्रशसक ह और आपके प्रति हमार दिलो म सम्मान एव प्यार भरा ह। मैं आपक पास इसलिए आई हू ताकि जानू कि आपक मन मे क्या है? अगर हम पापी व बुर खानदान स हैं और शाही खानदान स रिश्ता बनाने के काबिल नही है तो मैं आपके सामने खडी हू, आप चाह तो मुझे मार दें और चाह जजीर म बधवाकर कैद मे डलवा दें। मगर काबुल वासियो के दिन काले न बनाए। उन बेगुनाहो के खून मे अपने हाथ न रगें।

साम न आखें उठाकर सीनदुख्त को देखा। समझदार [illegible] विचार रखने वाली शेर की तरह बहादुर उस औरत की बात का साम ने जवाब दिया कि ऐ समझदार औरत! इस तरह से दुखी एवं परेशान न हो। तुम्हारा परिवार सुरक्षित है! मैं तुम्हारी बेटी से रिश्ता का इच्छुक हू। मैंने शाह को इसी सिलसिले मे पत्र डाला है ताकि वह इच्छा का ध्यान रखें। मैं भी कोशिश म लगा हू। इसलिए चिन्ता की कोई बात नही है। मगर यह रुदाबे कैसी अप्सरा है, जिसने जालजर का दिल इस तरह मुटठी म जकड लिया है। मुझे उसको दिखाओ ताकि म उसका रग व रूप देख सकू कि आखिर वह कैसी है।

ये बातें सुनकर सीनदुख्त खुश हुई और साम से कहने लगी कि आप कष्ट करें और हमारे गरीबखाने को रौनक बख्शें। हम भी खुशी होगी और आप भी वहा रुदाबे को देख लेंगे! हमे अगर आपने यह सम्मान दिया तो, आप देखेंगे कि सारा काबुल आपकी किस तरह पूजा करता है!

साम हसा और कहने लगा कि अब फिक्र की कोई बात नही। यह इच्छा भी पूरी हो जायगी। जैसे ही शाह का आदेश पहुचेगा। हम बुजुर्गों, सिपाहियो और काबुल के महत्वपूर्ण लोगों के साथ काबुल के अतिथि बनेंगे। साम के इस जवाब को सुनकर सीनदुख्त मुतमइन हुई और खुश-खुश साम के पास से काबुल लौट आई।

☐ ☐

उधर शहशाह मनुचहर जालजर की अक्ल एव समझ की परीक्षा ले रहा था। जालजर बुद्धिमान पडितो के सामने बैठा उनके प्रश्नो का उत्तर दे रहा था। उसी मे से एक बुद्धिमान ने जाल से पूछा कि मैंने बाहर हरे-भरे दरख्त देखे और हर वृक्ष म तीस शाखें थी। इसका भेद बताओ? दूसरे ने पूछा कि दो घोडे मैंने देखे है। इनमे से एक सफेद और दूसरा काला है। दोनो एक-दूसरे के पीछे दौडते रहते है, मगर कोई किसी से आगे नही निकल पाता है। इसका कारण क्या होगा?

इस तरह के उससे अनेक प्रश्न किये गए जिसका जवाब उसने एक के बाद एक इस तरह से दिया कि वह बारह दरख्त साल के बारह महीने हैं! उसी तरह काले सफेद घोडे रात और दिन हैं!

इस तरह से जालजर ने सारे प्रश्नों के उत्तर बड़ी समझदारी से देना आरम्भ किया और अन्त में बुद्धिमानों एवं पण्डितों को अपनी बुद्धि की प्रखरता से प्रभावित किया। उसकी यह तजी और समझदारी देखकर मनुचहर बेहद खुश हुआ।

□ □

सुबह उठकर जालजर तैयार हुआ और शाह मनुचहर से चलने की इजाजत मांगी और कहा कि रुदाबे इंतजार कर रही होगी। सुनकर शाह मनुचहर हंसा और कहने लगा—'आज के दिन तुम मेरे पास और ठहरो। कल तुमको साम के पास भेज दूंगा।'

इसके बाद शाह मनुचहर ने डुग्गी पिटवा दी कि सारे दिलेर, पहलवान, बहादुर, कोने कोने से जमा हों और अपनी तलवार के जौहर, तीर-कमान का हुनर और जो भी युद्ध कला उनको आती है, उसकी नुमाइश करें और अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करके, अपने बल का परिचय दें।

जालजर तीर व कमान लेकर घोड़े पर बैठा और मुकाबले के मैदान में उतरा, जहां पुराने दरख्तों की पंक्तियां थीं। जालजर ने तीर कमान पर चढ़ाया और छोड़ा। तीर पेड़ के तने के अन्दर से सनसनाता हुआ दूर चला गया। यह देखकर दर्शकों की वाहवाही से वातावरण गूंज उठा। एक के बाद एक परीक्षा में वह सफल होता चला गया। उसका बल देखकर शाह मनुचहर बहुत प्रभावित हुआ।

□ □

शाह मनुचहर ने साम के पत्र का उत्तर लिखवाया कि तुम्हारा पैगाम मिला जिससे तुम्हारी खैरियत मालूम हुई। दिलेर बेटे जाल की हर तरह की परीक्षा ली। लड़का बुद्धिमान् व युद्ध-कला में दक्ष है। उसकी इच्छा पूरी कर दी है और अब उसको प्रसन्नचित्त उसके पिता के पास भेज रहा हूं। दिलेरों से बुराई दूर रहे और हमेशा वह कामयाब और प्रसन्नचित्त रहें।

जालजर के पैर खुशी के मारे जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। उसने पिता के पास फौरन संदेश भेजा कि शाह ने हमारी आरजू पूरी कर दी है। यह खुशी से खिल उठा और बेटे के स्वागत की तैयारी करने

लगा। उसने मेहराब व सीनदुख्त के पास खबर भेजी कि जाल शाह के हुक्म से वापस लौट आया और साथ मे शुभ समाचार भी लाया है कि शाह ने उसकी इच्छा मान ली है। इसलिए अपने वायदे के अनुसार अपने सारे दल-बल के साथ आपके महल मे हम आने की तैयारी कर रहे है।

मेहराब के गालो के गुलाब खिल उठे। सीनदुख्त को अपने पास बुलाया और उसकी प्रशसा करते हुए कहा कि तुम्हारी राय नेक थी, जिससे सारे हालात ठीक हो गए। एक बडे शाही खानदान से हमारे सम्बन्ध बने और हमको आदर एव सम्मान मिला। खजाने का मुह खोल दो। मोती लुटाओ और जाबुलिस्तान के शाह की खातिर म जो चाहो करो। स्वादिष्ट भोजन, शराब, गाना, साज व आवाज का बढ़िया इन्तजाम करो।

ज्यादा देर नही गुजरी थी कि साम दिलेर अपने बहादुर बेटे जालजर और सिपाहियो के सग बडी शान से मेहराब के महल मे पधारे। जसे ही साम की नजर रुदाबे पर पडी जो स्वग की अप्सरा की तरह सजी हुई थी, उसके रूप और गुण को देखकर ठगा रह गया और मन-ही मन बेटे की पसन्दगी की प्रशसा करने लगा।

एक महीना हसी-खुशी से गुजर गया। इसके बाद साम नारीमान ने सीस्तान का रुख किया। जाल एक सप्ताह और मेहराब के महल मे रहा। इसके बाद रुदाबे व सीनदुख्त के साथ और बुजुर्गो के साथ जाबुल लौट आया।

जाबुल आइने की तरह सजा हुआ था। साम ने बहुत बडे जश्न का इन्तजाम किया था। बहू और बेटे के स्वागत मे उसने सोना और मोती निछावर कर दिये थे। इसके बाद जालजर जाबुलिस्तान के तख्त पर बठा और शाह मनुचहर के आदेश अनुसार पताका हाथ में उठा युद्ध करने माजन्दरान की तरफ चल पडा।

□ □

कुछ महीने बाद रुदावे का उदास उतरा चेहरा देखकर सीनदुख्त चिन्तित हुई और बेटी से पूछने लगी कि—

बेदू गुफ्त मादर कि एह जाने माम
चे बुदत कि गश्ती चनीन ज़र्दफाम

(मा की जान कुछ कहो तो कि तुम्हे क्या तकलीफ है जो इस तरह से तुम दिन-ब दिन पीली होती जा रही हो ?)

मा की बात सुनकर रुदाबे ने अपनी परेशानी कही—

चुनान गश्ते थी रुाब व पशुमुर्दे अम
तो गुई कि मन जिन्दे या मुरदे अम

(पता नही मुझे क्या हो गया है जो नीद नही आती और मैं थकी थकी रहती हू। लगता है कि मैं जिदा नही, मुर्दा हू।)

सीनदुख्त को पता चला कि बेटी रुदाबे गर्भवती है। जसे-जसे महीने चढ रहे थे। रुदाबे की बुरी हालत थी। एक दिन रुदाबे मूर्च्छित हो गई। यह देखकर सीनदुख्त परेशानी के मारे रोने चिल्लाने लगी। यह खबर जब जालजर के पास पहुची, तो वह परेशान होकर रुदाबे के सिरहाने पहुचा। रुदाबे का यह हाल देखकर उसकी आखें भर आई और दिल दर्द से फटने लगा। रात को जब रुदाबे पसीने से नहा गई तो उसकी यह हालत देखकर जालजर को याद आया कि चलते हुए उससे सीमुर्ग ने क्या कहा था। जालजर के चेहरे पर मुस्कराहट फल गई और उसने सीनदुख्त को यह बात बताई।

जालजर ने आग का अलाव सुलगवाया और उसमे सीमुर्ग का पख डाल दिया। एकदम से चारो तरफ अधेरा छा गया। थोडी देर बाद ही सीमुर्ग वहा पहुच गया। सीमुर्ग को देखकर जालजर ने सादर सर झुकाया। सीमुर्ग ने जालजर को प्यार किया और दिलासा देते हुए कहा कि—

चनीन गुफ्त सीमुर्ग कइन गम चेरा अस्त
बेचश्म हज़ बर अन्दर्म नम चेरा अस्त
अज इन सर व सीमीन बर माह रुइ
यकी शीर बाशद तोरा नाम जुइ

(दास्तान! तुम्हारी आखें क्यो नम है? परेशानी की जगह खुशखबरी है कि यह चाद से चेहरेवाली एक पुत्र को जन्म देने वाली है, जो बडा नामवर होगा।)

सीमुर्ग ने आने वाले बच्चे की प्रशसा मे जमीन व आसमान के कुलाबे मिला दिए और अन्त मे कहा कि चूकि बच्चा बहुत बडा है इसलिए एक

तेज खजर मैं दे रही हू। इसको अपने पास रखो। सीमुग की बताई तरकीब के अनुसार नौ महीने बाद हकीमो को बुलाया गया। उन्होंने रुदाबे को शवत पिलाया जिससे वह बेहोश हो गई। तव हकीम ने रुदाबे का पेट काट कर रुस्तम को बाहर निकाल लिया।

रुस्तम ने बहुत बचपन मे ही युद्ध की सारी कला सीख ली। उसकी इच्छा थी कि वह ईरान के दुश्मन को पछाडन रणक्षेत्र मे जाए। रुस्तम को पिता जालजर ने अपने पिता साम नारीमान का गदा दिया। इसके बाद रुस्तम घोडे की जिद्द करने लगा। वह जो घोडा देखता और उस पर बैठता तो उसकी कमर झुक जाती। आखिर उसने एक दिन घोडे का बच्चा मैदान मे घास चरता देखा। रुस्तम उसको देखकर आग बढा, मगर रखवाले ने उसको रोका और कहा कि इस पर कोई सवारी नही कर सकता है। यह बहुत अडियल है। इसका नाम रक्षक है। इसको चाहने वाले बहुत हैं। जो भी इस पर जीन कसता है और बैठने की कोशिश करता है, उस पर इसकी मा हमला कर देती है।

यह बात सुनकर भी रुस्तम ने रक्श पर चढने का अपना इरादा नही छोडा। जसे ही मादा घोडी आगे बढी, रुस्तम ने उसके सर पर एक घूसा मारा। मादा घोडी सर झुकाए, बिना लात मार, अस्तबल म जाकर खडी हो गई और रुस्तम उचककर रक्श की पीठ पर जा बठा। रक्श की पीठ झुकी नहीं। उसी तरह वह अकडी सीधी पीठ किय रुस्तम को बिठाए दौडती रही।

रुस्तम और रक्श सदा साथ रहते। रुदाबे और जालजर रुस्तम जैसे बेटे का पाकर निहाल हो गए थे।

दास्तान-ए-सोहराब

एक दिन रुस्तम जब सोकर उठा तो उसने अपने मन को उदास पाया। तरकश मे तीर भरे और कमर कस वह शिकारगाह की तरफ जाने का इरादा कर अपने घोडे रख्श पर जा बठा और उसको एड लगाई। रख्श हवा से बातें करता तूरान सीमा के पास पहुच गया। उस बियाबान मे उसने गूरखरो के झुण्ड के झुण्ड बिखरे देखे, जिन्हे देखकर रुस्तम के उदास चेहरे पर खुशी की लाली दौड गई और खुशी से उसने रख्श की लगाम खीची और नीचे कूदा। तीर व कमान, गदा और कमन्द मे देखते ही-देखते उसने कई गूरखर मार गिराए।

झाड और पेडो की सूखी टहनियो को जमा करके उसने एक अलाव सुलगाया और उस पर एक गूरखर को भूनना आरम्भ कर दिया। उसके बाद पेट भरकर शिकार खाया और चैन की नीद सो गया। रख्श घास चरता हुआ रुस्तम के पास ही घूमता रहा।

उस शिकारगाह से सात-आठ तूरानी घुडसवारो का गुजरना हुआ। घोडे के खुरो के निशान देखते, उनका पीछा करते हुए एक पानी के झरने के पास पहुचे, जहा रख्श पानी पी रहा था। रख्श के देखते ही उन्होंने उसको पकडना चाहा और कमन्द उसकी गर्दन की तरफ फेंकी। रख्श ने गुस्से मे जवाबी हमला किया और किसी को लात मारी किसी की गर्दन अपने दातो से दबाई। इस तरह से उनमे से तीन सवारो को मार गिराया। यह देखकर अन्य सवारो ने रख्श की दीवानगी पर काबू पाने के लिए हर तरफ से कमन्द फेंकी और उसको कैद कर लिया। फिर रख्श को हर ओर से खीचते हुए वे सवार उसे अपने शहर तूरान की तरफ ले गए।

रुस्तम जब सोकर उठा तो उसे रख्श कही नजर नही आया। थोडी देर इधर-उधर ढूढने के बाद वह रख्श के लिए चिन्तित हो उठा। दुख मे डूबा मन बार-बार यही सवाल कर रहा था कि वायुवेग से दौडने वाले उस

घोडे को वह आखिर कहा ढूढे ? अबा, तरकश, गदा और म्यान म तलवार बाधे, रुस्तम पैदल चलत हुए इस बात म भी उत्तेजित था कि कैसे इस बियाबान को पदल पार करे और युद्ध की इच्छा रखने वालो के साथ क्या व्यवहार करे। उसको इस खयाल से अपमान का अहसास हो रहा था कि जब तुक पूछेंगे कि रख्श कैसे चोरी हुआ, तो उसको बताना पडेगा कि उस समय, रुस्तम जैसा होशियार पहलवान बेखबर पडा सो रहा था। अपने मन को कडा कर वह रख्श के पैरो के निशानो के पीछे-पीछे हो लिया।

रुस्तम जसे ही समनगान शहर के समीप पहुचा, उसके आने की खबर जगल की आग की तरह वहा के बादशाह व जनता के बीच फल गई कि ताजबख्श पहलवान पैदल ही चला आ रहा है। उसका घोडा रख्श शिकार-गाह मे कही भाग गया है।

हमी गुफ्त हर कस कि इन रुस्तम अस्त
व या आफताब सपीदेह दम अस्त

(हर कोई यही कह रहा था कि यह रुस्तम पहलवान है या सुबह का उगता सूरज है।)

शाह अपन दरबारियो के सग रुस्तम के स्वागत के लिए राजमहल से निकला और रुस्तम के समीप पहुच कर घोडे स उतरा और कहा कि तुम मेरे दोस्त हो। तुमस जग क्या करना। इस शहर मे तुम्हारे आने से हम सब खुश है। तुम्हारी हर इच्छा हमारे सर आखो पर है।

रुस्तम के मन मे सिपाहियो स घिरे बादशाह को देखकर जो शका उठी थी, वह बादशाह के विनम्र सम्बोधन से जाती रही। उसकी बातो को ध्यान से सुनने के बाद, रुस्तम न कहा कि इस चरागाह से रख्श बिना लगाम और जीन के जाने कहा चला गया है। सिरकडो के झुण्ड के पास जो छोटा सा झरना है, वहा से रख्श के पैरो के निशान समनगान शहर तक है। मैं अहसानमन्द हूगा यदि आप रख्श को वापस दिला दें। इस नेक काम के लिए आपको धन्यवाद दूगा। यदि रख्श नही मिला तो, मैं बहुतो के सर धड से अलग कर दूगा।

बादशाह ने रुस्तम के क्रोध को देखकर उसको धीरज बधाया कि ऐसी बातें उसके व्यक्तित्व से मेल नही खाती। वह शाही महमान है। रख्श को

ढूँढने म उग्रता दिखाने मे कोई लाभ नही। बेहतर है कि वह आराम स चलकर शाही महल म आराम करें और शराब व लजीज खाने से अपनी थकान दूर करें। इस बीच रख्श भी मिल जायेगा—

कि तुनदी व तेजी नयायद बेकार
बे नर्मी बरआयद जे सूराख मगर

(तजी और उग्रता से काम नही बनता है। नर्मी से साप भी अपने सूराख स निकल आता है।)

रुस्तम शाह की बातो को सुनकर खुश हुआ और उसका चिंतामुक्त मन जब शाही महल म महमान बन थकान उतारने पर राजी हो गया। बादशाह रुस्तम को अपने महल मे सम्मान के साथ ले गया और प्रेमपूर्वक अपने पास बिठाया और हुक्म दिया कि ज्योतिषियो को फौरन हाजिर किया जाए ताकि वह रख्श के पाए जाने की सम्भावना पर स्वय रुस्तम पहलवान के सामने विचार विमर्श कर सकें। इसके बाद साज व आवाज और शबाब व शराब की महफिल जमी। रुस्तम थका हुआ था। उसको जल्द ही नीद आ गई। जब वह सो गया तो सेवकी ने उसका बिस्तर लगा कर गुलाब व अम्बर से बसा दिया।

आधी रात गुजर चुकी थी। समय ने रात के ढलने का गजर बजाया, तभी सुगन्धित शमा हाथो म उठाए एक काया आहिस्ता-आहिस्ता चलती हुई रुस्तम के सिरहाने आकर खडी हो गई। जसे कुछ कहना चाह रही हो मगर उसको किसी भेद की तरह अपने पर्दे मे छपाए हो। उस पर्दे के पीछे एक सुदर चाद जैसी कन्या थी, जिसका चेहरा अन्धेरे मे सूरज की तरह दमक रहा था। उसके जिस्म से रग व खुशबू का सैलाब उमड रहा था। उसका लम्बा कद सर्व के दरख्त की तरह ऊचा और सीधा था। उसके दोनो गाल यमन के अकीक की तरह सुर्ख थ और उसके होठ ऐस थे जिन्हे देखकर आशिको का दिल उनके सीने मे तडपकर रह जाए। खुदा के बनाए इस हसीन शाहकार को अपने सामने पाकर रुस्तम जैसा बहादुर भी हैरान रह गया। उसने खुदा की महानता के आगे मन ही-मन सर झुकाया और पूछा

बे पुरसीद अज व गुफ्त नाम तो चीस्त
चे जुई शबे तीरेह काम तो चीस्त

(तुम कौन हो, तुम्हारा नाम क्या है? इतनी रात गए तुम यहा किस लिए आई हो?)

उस सुन्दर कन्या ने रुस्तम को जवाब दिया "मैं समनगान बादशाह की लडकियो म से एक हू। मेरा नाम तहमीना है। मैं अपने दुख के बारे मे आपको बताना चाहती हू कि इस ससार मे मेरा जोडा इन बादशाहो के बीच कोई नही है, जिसको मैं चुन सकू। फिर आगे बोली

ने परदे बेरून कस नदीदेह मरा
न हरगिज कस आवा शनिदेह मरा

(मुझे बेनकाब आज तक किसी ने नही देखा है। यहां तक कि मेरी आवाज भी गैर मर्द ने नही सुनी है।)

कुछ पल ठहरकर तहमीना ने कहा कि आपकी बहादुरी के बेहद चर्चे सुने थे कि आप दैत्य, शेर, चीते, घडियाल किसी से भी नही डरते। आपके बाजुओ मे इतना बल है कि आप सबको पछाड कर रख देत हैं। काली अधेरी रात मे आप इस तरह तूरान की सीमा मे दाखिल होने मे भी नही हिचके। एक गूरखर को भूनकर अकेले ही खा लेते है। जब भी आपकी गदा चलती है तो शेर व चीन तक थर्रा उठते है। उकाब अगर आपकी नगी तलवार देख लेता है तो भय मे शिकारगाह की तरफ जल्द उडान भरने का साहस नही जुटा पाता है। आपके द्वारा फेंकी कम द का निशाना अचूक है और आपके चलाए तीरो के भय से बादल तक खून के आसू रोने लगत हैं। आपके बारे मे ये सारी बातें सुन सुनकर, मैं दातो तले उगली दबाती थी। ऐसे ही मर्द को पाने की कामना मेरे मन मे थी कि खुदा ने आपको इस शहर मे भेजा। मुझे तो आपको पाने की इच्छा है। यदि आप भी एसा सोचते है तो, मैं हाजिर हू। परिन्दा व मछलियो के अलावा यहा हमे देखने वाला कोई नही है। सच पूछें तो मैं आपको अपने पूरे वजूद के साथ पसन्द करती हू और खुदा की मर्जी हुई तो आपसे एक पुत्र रखती हू। चूकि आप शूरवीर हैं, इसलिए खुदा मुझे वैसी ही सन्तान भी देगा जो पहलवानी म हमारा नाम रोशन करेगा। तीसरी जो सबसे महत्वपूर्ण बात है कि आपके घोडे रक्श को मैं कही से भी ढूढकर ले आऊगी, चाहे मुझे पूरा समनगान ही क्यो न छानना पडे। इतना कहकर

तहमीना खामोश हो गई।

रुस्तम ने अपने सामने यू परी चेहरे वाली हसीना को जो बात करते देखा तो उसके होश उड गए। चूकि उसने रख्श को ढूढ निकालने का प्रण लिया था, जिसके लिए उसको धयवाद देना जरूरी था, इसलिए रुस्तम ने तहमीना की बातो का जवाब दिया कि—

वेफरमूद ता मोवदी पुर हुनर
बियायद बेख्वाहाद वराअज पिदर

(एक हुनरमन्द बुजुग आकर तहमीना के पिता स उसका हाथ रुस्तम के लिए मागने का निवदन करेगा।)

शाह समनगान के पास जब यह खबर पहुची, तो उसन खुशी म यह रिश्ता मजूर किया। अपने रस्म व रिवाज क अनुसार उसन दोनो का विवाह कर दिया।

□ □

जब सूरज का गोला अधेरी जुल्फो को झटककर ऊपर आया, उस समय रुस्तम ने तहमीना स विदाई ली। रुस्तम न अपने बाजू पर बधा बाजूबन्द खोला जिसकी बडी चर्चा थी। उसको तहमीना के हवाले करता हुआ बोला—"यदि लडकी हुई तो उसके बालो म यह सजा देना ताकि उसके भाग्य का सितारा चमके। यदि लडका हुआ तो उसके बाजू पर बाप की यह निशानी बाधना और बताना कि वह साम व नारीमान जसे पहलवानो के वश म है। इतना कहकर रुस्तम ने उस परी चेहरा तहमीना की आखो का चुम्बन लिया। तहमीना रोते हुए रुस्तम से अलग हुई और रुस्तम ने अपने दुख को छुपा लिया।

सुबह शाह समनगान ने रुस्तम से उसका हाल चाल पूछा कि उसकी आवभगत म कोई कमी तो नही रह गई। फिर रख्श क मिलने की खुशखबरी रुस्तम को सुनाई। अपन सामने रख्श को पाकर रुस्तम न उसको प्रेम से थपथपाया। शाह से विदा ली और रख्श की पीठ पर जीन कसी और हवा से बातें करता हुआ समनगान से सीस्तान की तरफ चल पडा और रास्ते भर गुजरी यादो की मिठास म डूबा रहा। सीस्तान म जाबुलिस्तान की

तरफ घोडा मोडा मगर वतन पहुचकर किसी के आगे ज़ुबान न खोली कि इस बीच उसने क्या देखा और क्या पाया ।

☐ ☐

चू नोह् माह् बेगुजश्त बर दुख्त-ए शाह्
यकी कूदक आमद चू तावन्देह् माह्
(नौ महीने बाद शाह् की बेटी ने एक चाद से बेटे को जन्म दिया ।)

जो खानदान शुद व चेहरा शादाब कर्द
वरा नाम तह्मीनह् सोहराब कर्द
(वह हसता था तो उसका चेहरा खिल उठता था । उसका नाम तह्मीना ने सोहराब रखा ।)

चो यक माह् शुद हमचू यक साल बूद
वरश चुन बरे रुस्तम जाल बूद
(जब वह एक महीने का हुआ तो लगता था साल का है । उसका सीना रुस्तम और जाल पहलवानो जैसा था ।)

चो सह् साल शुद साजे मैदान गिरफ्त
पजुम दिल-ए-शीर मर्दान गिरफ्त
(वह जब तीन साल का हुआ तो युद्ध कला म दक्ष हो गया । जब पाच साल का हुआ तो वह पूरा शेर दिल मद बन गया ।)

चो दह् साल शुद जे आन जमीन कस नबूद
कि यारा अस्त बा उ नबद आजमूद
(जो दस साल का हुआ तो उसके बराबर का कोई इस जमीन पर न था जो उससे युद्ध कर सके ।)

बरे मादर आमद परसीद अज़ वई
बे दु गुफ्त गुस्ताख व मन बेगुई
(एक दिन सोहराब मा के पास आया और बडी निडरता से पूछने लगा कि—)

जे तुख्म कियम व अज कुदामीन गोहर
चे गुयम चू परसद कसी अज पिदर

गर इन पुरसिश अज वेमान्द नहान
नमानम तोरा जिन्देह अन्दर जहान

(मैं किसके वश से हूँ, किसका बेटा हूँ—जब कोई मुझसे मेरे बाप का नाम जानना चाहेगा, मैं क्या जवाब दूंगा। मेरे इस सवाल के जवाब को अगर तुमने छपाया तो मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।)

सोहराब की बातें सुनकर तहमीना ने कहा कि इतनी जल्दबाजी ठीक नहीं है। पहले मेरी बात सुनो, सुनकर खुश हो।

तो पूरे गवे पीलतन रुस्तमी
जे दस्ताने सामी व सज नीरमी

(तू हाथी जैसी काया रखने वाले रुस्तम पहलवान के बेटे हो जिसके बाप और दादा साम नारीमान और जालजर जैसे पहलवान थे।)

इतना कहकर तहमीना अपनी जगह से उठी और रुस्तम का भेजा खत बेटे के पास लाई और बोली कि तुम्हारे बाबा ने इस खत के साथ अपने बेटे के लिए तीन थैली सोने से भरी और तीन कीमती याकूत ईरान से भेजे थे। जो कासिद यह खत लेकर आया था, उसने यह जबानी पैगाम भी दिया था कि इस भेद को शाह अफरासियाब को कभी पता नहीं चलना चाहिए क्योंकि वह रुस्तम पहलवान का जानी दुश्मन है और तूरान के लिए भी किसी लानत से कम नहीं है। हो सकता है कि वह तुमसे बदला ले और माँ और बेटे दोनों को मरवा डाले। तहमीना ने आगे सोहराब से कहा—

पिदर गर वे दानद कि तो जिन निशान
शदस्ती सरअफराज गर्दनकुशान
हमान गह बेख्वानद तोरा निज्देह खीश
दिल ए-मादरत गदद अज दर्दे रीश

(तेरे बाबा को मैंने पैगाम में तेरे बारे में नहीं बताया। यदि उन्हें पता चल जाता कि उनका पुत्र उन्हीं की तरह है तो वह फौरन तुझे अपने पास बुला लेते और तेरी माँ का कलेजा तेरी जुदाई का गम न सह पाता।)

यह सुनकर सोहराब ने माँ से पूछा—'आखिर इस भेद को तुमने मुझसे क्यों छुपाया जबकि रुस्तम जैसे नामी पहलवान के नाम से जग की तारीख लिखी जायगी। ऐसे खानदान की हकीकत को मुझसे छुपाने का

क्या तुक था। अब मैं एक फौज तैयार करूंगा और तुर्कों से युद्ध करूंगा। शाह काऊस के विरोध मे खडा हो ईरान से तूस तक जाऊगा। उस समय मेरे आगे गुरगीन, गुदज, गिव, नौज़र, बहराम जस नामी पहलवान भी नही टिक पायेंगे।

वे रुस्तम दहम गज व तख्त व कुलाह
निशानामश बरगाह काउस शाह

(रुस्तम को ताज, तख्त, खजाना दूगा और उसको काउस के तख्त शाही पर बादशाह की तरह बिठाऊगा।)

मैं ईरान से तूरान तक युद्ध करूगा और सब जगह विजय-पताका फहराता हुआ अफरासियाब से उसका तख्त छीनूगा और आपको ईरान की मलिका बनाऊगा।

चू रुस्तम पिदर बाशद व मन पिसर
वेगेती नामानद यकी ताजवर
जो रौशन बुअद रुए खुरशीद व माह
सितारे चिरा बर फराजद कुलाह

(यदि रुस्तम जैसा बाप और सोहराब जैसा बेटा हो तब ससार मे कोई भी बादशाह नही टिक पायेगा। जब सूरज और चाद चमक सकते हैं तो फिर सितारो के सिर पर मुकुट क्यो?)

इतना कहने के बाद सोहराब मा से बोला कि पहले तुम मुझे एक घोडा लेकर दो। जिसके खुर फौलाद के हो, जो हाथियो का बल और परिन्दे की उडान मछली की फुर्ती और हिरन की चुस्ती रखता हो। फिर देखना मैं क्या करता हू। तहमीना ने बेटे की बात सुनी और बेहतरीन घोडा देने का वचन दिया। अस्तबल खोले गए। लोग अपने बेहतरीन घोडो को लेकर सोहराब के पास पहुचे। सोहराब ने घोडा पसन्द करना आरम्भ किया। मगर जिस घोडे पर वह उचककर बैठता, उसी की पीठ जमीन से आ लगती। यह देखकर सोहराब उदास हो गया। सारे घोडेवान अपने घोडो के साथ निराश लौटने लगे। तभी उनमे से एक आदमी आगे बढा और सोहराब से कहा कि उसके पास रख्श की नस्ल से घोडे का एक बच्चा है जो

सोहराब के बताए गुणों से भरपूर है। यह सुनकर सोहराब का चेहरा खुशी से खिल उठा।

रुख्श की नस्ल का वह घोड़ा पल भर में सोहराब के आगे पेश किया गया। उसका कद और बल देखकर सोहराब ने उसको पसन्द कर लिया। प्यार से उसकी पीठ थपथपायी और उस पर जीन कसकर सवारी की। सोहराब उसकी फुर्ती व चुस्ती देखकर कह उठा कि बेहतरीन घोड़ा मेरे हाथ लगा है। इसके बाद सोहराब घर लौटा और एक बड़ी फौज जमा की जिसमें दक्ष योद्धा थे।

सोहराब ने अपने नाना से सहायता व नेतृत्व का अनुरोध किया और बताया कि वह ईरान की तरफ फौज लेकर बढ़ने वाला है। शाह समनगान ने नवासे की जो यह दिलेरी देखी तो उसका मन रखने के लिए उसको हर प्रकार का समर्थन देने का वचन दिया। ताज, तख्त, जिरह बख्तर, घोड़े, हथियार, सोना चांदी मोती, हीरे उसको दिए और दूध पीते बच्चे की इस बहादुरी पर आश्चर्यचकित हो उसे पूरे शाही ठाठ से लड़ने के लिए विदा किया।

☐ ☐

शाह अफरासियाब को सूचना मिली कि सोहराब ने युद्ध का बेड़ा उठा लिया है। अपनी फौज में वह इस तरह अलग दिखता है जैसे चमन में सर्व का दरख्त जबकि उसके मुंह से दूध की बू आती है मगर शाह काऊस से लड़ने का हौसला रखता है। संक्षेप में उसकी प्रशंसा में यही कहा जा सकता है कि देखने में जैसा आता है उससे कहीं ज्यादा गुणवान है।

शाह अफरासियाब यह सुनकर खुश हुआ और हंसा। फिर उसने हुक्म दिया कि हुमान और बारमान जैसे युद्ध में दक्ष योद्धाओं की अध्यक्षता में बारह हजार दिलेर सिपाहियों में तैयार फौज सोहराब को दी जाए। इस सहायता द्वारा सोहराब आगे बढ़ेगा और उस फौज से जूझने के लिए रुस्तम आगे बढ़ेगा। ऐसे समय में यह भेद खुलने न पाए कि रुस्तम और सोहराब बाप-बेटे हैं। रुस्तम जैसे परिपक्व पहलवान इस बहादुर नन्हें पहलवान के हाथों मारा जाएगा। जब ईरान बिना रुस्तम के कमजोर पड़ जायगा उस समय में शाह काऊस का जीना हराम कर दूंगा। मान

लो कि रुस्तम क हाथो सोहराब की हत्या हो जाती है तो भी उस पहलवान का दिल खून के आसू रोएगा।

इस षडयत्र का नक्शा बना लेने के बाद दोनो पहलवान योद्धा सोहराब के समीप पहुचे और शाह अफरासियाब का भेजा उपहार जो दस घोडो और दस ऊटो पर भरा हुआ था, दिया और साथ ही शाह का लिखा खत भी दिया जिसमे उसने सोहराब को प्रोत्साहन देते हुए लिखा था कि अगर तुम ईरान के तख्त को हासिल कर पाए तो समझो इस ससार मे न्याय का राज होगा। यहा से वहा तक रास्ते म कोई रुकावट नही होगी। समनगान और तूरान व ईरान एक हो जाएग। तुम्हार पास कुछ सिपाही भेज रहा हू। तुम हाथी दात के तख्त पर मोतियो का ताज पहनकर बैठो और मेरे भेजे सिपाहसालार हुमान और बरमान पर विश्वास रखो। वे तुम्हारा साथ देंगे और तुम्हारी आज्ञा का पालन करेंगे। जब सोहराब ने शाह अफरासियाब के उपहार देखे तो प्रसन्न हुआ। मगर हुमान अपने सामने लम्बे-चौडे शूरवीर को देखकर ठगा-सा रह गया। सोहराब ने शाह का पैगाम सुना और उनका खत पढा।

सोहराब ने फौज को ईरान की तरफ कूच करन का आदेश दिया। सोहराब को देखकर कोई भी उसम युद्ध की चुनौती नही ले सकता था। चाहे वह शेर हो या मगरमच्छ। फौज के कूच से सब तरफ एक हगामा मच गया। रास्ते मे जो भी आया, वह कुचला गया।

□ □

ईरान सीमा पर एक सफेद किला था, जिसका (रक्षक) हुजीर जैसा बलवान जगजू योद्धा था। वहा गजदहुम की एक बेटी गिदआफरीद भी थी, जो बाप की तरह ही युद्ध-कला मे निपुण थी। मगर गजदहुम अब बूढ़ा हो चुका था। हुजीर ने किले के ऊपर से सोहराब की फौज को आते देखा और नीचे उतरा ताकि सोहराब को अच्छा सबक सिखा सके। सोहराब ने हुजीर को देखकर अपने घोडे को एड लगाई और सफेद किले की तरफ तेजी से बढ़ा।

सोहराब को तन्हा देखकर हुजीर ने पूछा कि क्या तुम अकेले ही युद्ध करने आए हो, तो समझो तुम घडियाल के जबडे मे फस चुके हो। सोहराब

ने पूछा कि 'तुम कौन हो, तुम्हारा नाम क्या है ? तुम्हारे चाहने वाले कहीं तुम्हारी मौत पर रोए न !' यह सुनकर हुजीर ने कहा कि मेरे मुकाबले का कोई दूसरा योद्धा जमीन पर नही है। मेरा नाम हुजीर है और मैं इस किले का रक्षक हू। अभी तुम्हारा सर धड से अलग किए देता हू। उसकी ललकार सुनकर सोहराब हस पडा। भाल, तलवार और तीरो से दोनो के बीच युद्ध छिड गया। अत मे सोहराब हुजीर का सर धड से अलग करना ही चाहता था कि हुजीर ने उससे जान बख्शने की विनती की, जिसे सुनकर सोहराब ने उसको क्षमा कर दिया और बदी बनाकर हुमान के पास भेज दिया। हुमान यह देखकर दाता तले उगली दबाकर रह गया। सफेद किले के अदर जब खबर पहुची कि हुजीर बदी बना लिया गया है, तो वहा कोहराम मच गया। औरतो मर्दों के रोने चिल्लाने की आवाजें बुलन्द हो गई।

जब गजदहुम की बेटी गिदआफरीद को पता चला कि सिपाहसालार बन्दी बना लिया गया है, तो दुख से उसने ठडी सास भरी और उदास होकर गहरे सोच मे डूब गई। गिदआफरीद एक ऐसी लडकी थी जो युद्ध-कला मे निपुण थी और उसके मुकाबले का दूसरा कोई हमउम्र नही था। वह हुजीर की इस पराजय से अपने को बहुत अपमानित महसूस कर रही थी। बिना समय गवाए उसने झटपट एक फौजी दस्ता तैयार किया और अपने बालो को जिरह मे छुपाया, कमर पर तलवार कसी और घोडे पर बैठ वह किसी शेरनी की तरह किले के दरवाजे से बाहर आई। अपने फौजी दस्ते के पास पहुचकर उसने सिपाहियो को ललकारा, तो ऐसा महसूस हुआ जैसे बादलो के बीच बिजली कडकी हो। पहलवानो को समाप्त करने की चुनौती सुनकर सोहराब मुस्कुराया, फिर होठ भीचकर मन ही मन कहा कि अब कौन मुसीबत मे फसने इधर आ रहा है। सोहराब ने जिरह-बख्तर पहना और बाहर की तरफ निकला।

गिदआफरीद ने कमान पर तीर चढाया और एक के बाद एक सोहराब की तरफ फेंकने लगी। सोहराब ने ढाल सिर के सामने करके घोडा दुश्मन की तरफ दौडाया। गिदआफरीद ने कमान कधे पर टागी और भाले को उछालकर सोहराब की तरफ निशाना बाधा और फौरन ही कमन्द फेंकी। सोहराब को यह देखकर क्रोध तो आया पर वह यह भी समझ चुका था

कि दुश्मन युद्धकला मे निपुण है। अपनी तरफ आने वाले भाले को सोहराब ने हाथ से रोका और फौरन गिदआफरीद की कमर पर दे मारा और उसको जीन से नीचे गिरा दिया। गिदआफरीद ने किर्च म्यान स निकाली और सोहराब के भाले पर मार दी। भाले के दो टुकडे हो गए और गिद-आफरीद जीन पर सभलकर बैठ गई। मगर यह भी समझ गई कि उसका मुकाबला सोहराब से है, जिसके सामने टिकना कठिन है। कुछ सोचकर उसने घाडे का एड लगाई और सरपट दौडाती हुई किले की तरफ भागी।

सोहराब ने जो यह दखा कि दुश्मन हाथ से निकला जा रहा है तो उसने घोडे को गिदआफरीद के पीछे दौडाया। जब करीब पहुचा तो उसन लपककर हाथ वढाया और सवार की टोपी पर हाथ मारकर उसका तुक पकड लिया। टोपी के हटते ही गिदआफरीद के लम्बे बाल कधे पर बिखर गए। यह देखकर सोहराब चकित रह गया और सोचने लगा यदि ईरान की औरते इतनी दिलर हैं, तो उनके मर्दों का क्या हाल होगा। वह समझ गया कि अभी तक वह लडकी से युद्ध कर रहा था। गिदआफरीद उसी हालत म घोडा दौडाती भागती जा रही थी। यह देखकर सोहराब न कमन्द निकाली और उसकी तरफ फेंकी, जो उसके कमर मे जाकर कस गई। सोहराब के खीचन से गिदआफरीद घोड़े की पीठ से नीच जमीन पर आन गिरी। सोहराब ने उसके पास पहुचकर चेतावनी देते हुए कहा कि मुझसे अब आजाद होने की कोशिश मत करना। पहले यह बताओ कि तुम जैसी सुन्दर लडकी को मुझसे युद्ध करने की ऐसी क्या मजबूरी आन पडी?

गिदआफरीद न सोहराब से कहा कि हमार बीच हो रहे इस युद्ध को दोनो तरफ खडे योद्धाआ ने देखा है। मेरे खुले बालो स सब कुछ समझ गए है। वे जरूर आपस मे बात कर रहे होगे कि आप जसा शेरो का शेर पहलवान, एक लडकी स लड रहा है। यह बात आपकी बदनामी का कारण बनगी। इसलिए बेहतर है कि हम आपस म समझौता कर लें। इसी म हमारी भलाई और अक्लमन्दी है। चूकि दोना फौजें आमने सामने खडी है। ऐसी हालत म इस युद्ध विराम को फिर स रणक्षेत्र मे बदलने की कोशिश उचित नही है। वास्तव म वह सफेद किला, उसका खजाना, यह फौज, यहा तक कि उसका स्वामी भी तुम्हारे आदेश का नौकर है और तुम

इन सबके मालिक बन चुके हो। इतना कहकर गिर्दआफरीद ने अपने चेहरे का नकाब हटाया और चेहरा सोहराब की तरफ घुमाया।

सोहराब उसके काले बालो की ओर तो पहले ही आकर्षित हो चुका था। अब जो उसका चेहरा देखा तो लगा जैसे वह स्वर्ग वाटिका मे पहुच गया हो। उसके गाल रस भरे खोशे थे। उसकी हिरनी जसी दोनो आखो पर कमान जैसी भवे थी। सोहराब के दिल पर उस लडकी के हुस्न का जादू चल गया और मन ही मन कहने लगा कि तुमसे मुलाकात भी हुई तो रणक्षेत्र मे।

सोहराब ने चन्द पल बाद गिर्दआफरीद की बात का जवाब देते हुए कहा कि ठीक है। मगर एक बात याद रखना कि तुममे मुझसे लडने की ताकत नही है।

गिर्दआफरीद ने चेहरा किले की तरफ घुमाया और चलने को मुडी। सोहराब भी उसके पीछे पीछे हो लिया। जैसे ही किले के दरवाजे के पास गिर्दआफरीद पहुची, दरवाज़ा खुला और उसने अन्दर दाखिल होते ही फौरन दरवाजा बन्द हो गया। सोहराब बन्द दरवाजे के पीछे ही रह गया।

किले के बूढे, जवान, बच्चे सभी हुजीर के कद हो जाने और गिर्दआफरीद के इस तरह युद्ध पर निकल जाने से दुखी और चिन्तित थे। गिर्द-आफरीद के पिता गज़्दहुम को जैसे ही बेटी के आने की खबर मिली वह गिर्दआफरीद की तरफ लपका और उससे कहने लगा 'मेरी नेकदिल शेरनी। तेरी जुदाई से तेरे बाप का दिल वीरान हो गया था। एक तरफ तुझे युद्ध मे जाने का शौक है, तो दूसरी ओर अपना यह रूप दिखा रही है। कहीं ये दोनो बातें हमारी बदनामी का कारण न बन जाए। बहरहाल खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि तू शत्रुओ के चगुल से सही सलामत लौट आई है।'

पिता की बात सुनकर गिर्दआफरीद खिलखिलाकर हस पडी। सिपाहियों को देखने के लिए उसने जो किले के बाहर झाका तो किले के बन्द दरवाज़े के सामने सोहराब को घोडे पर बैठा देखा। उसको देखकर गिर्दआफरीद बोली कि ए जवान मर्द! क्यो बेकार मे कष्ट उठा रहे हो। लौट जाओ क्योकि अब तुम मुझे नही पकड सकते हो! सोहराब ने गिर्दआफरीद की बात सुनकर कहा कि वह सारे वायदे क्या हुए जिसमे तुमने यह किला,

यह फौज और खजाने का मालिक मुझे बनाया था ? सुनकर गिदआफरीद हसी। सोहराब क्रोध से बोला

वेदू गुप्त सोहराव कि एइ परी चहर
वे ताज व वेतख्त व वेमाह व वेमहर
कि इन बारह बे खाक पस्त आवरम
तोरा एइ सितमगर वेदस्त आवरम

(ए चाद जसे चेहर वाली परी ! मैं तख्त व ताज, चाद और चकोर की की सौगध खाकर कहता हू कि इस किले की बुनियाद को खाक मे मिला दूगा। एक बार तुम मरे हाथ लग जाओ तो फिर मजा चखाऊगा।)

सोहराब की बातें सुनकर गिदआफरीद हसी और जवाब मे बोली ईरान और तूरान म दोस्ती प्रलय तक नही हो पाएगी। इसलिए इस बात का गम मत करो। यह भी हकीकत है कि तुम तूरान के नही हो। यह क़द, यह काठी, यह पेशानी, यह सीना तुम्हारे यहा पहलवाना का हो ही नही सकता। लेकिन जब शाह को खबर मिलेगी कि एक तुर्क फौजी पहलवान आया हुआ है तो शाह और रस्तम दोनो ही तुम्हारे विरोध म खडे हो जाएग और याद रखो कि तुम रुस्तम जसे नही हो। य दोनो मिलकर तुम्हारी सारी फौज का सफाया कर देंगे। मैं नही कह सक्ती कि तुम्हारा क्या हश्र करेंगे। बहरहाल अब तुम्हारे लिए सिफ एक ही रास्ता बचा है कि तुम अपनी फौज को तूरान कूच करने का हुक्म दो और स्वय अपने देश लौट जाओ।

गिदआफरीद की बात सुनकर सोहराब ने अपने को अपमानित महसूस किया। क्रोध मे उसन जवाब दिया कि आज तो शाम हो गई है, मगर कल सुबह मरी तलवार और तीर तुम्हार इस अपमान का करारा जवाब देंगे। इतना कहकर सोहराब लौट गया।

सोहराब की इस तरह क्रोध भरी चुनौती सुनकर सफेद किले म रोना पीटना मच गया। गजदहुम विचारों मे डूब गया ताकि कोई तरकीब निकाल सके। आखिर मे थक कर उसन मुशी का बुलाया और शाह के नाम एक खत लिखने को कहा। खत के शुरू म बादशाह की प्रशसा मे चन्द पक्तिया लिखवाइ, फिर इधर की खबर देते हुए आग लिखवाया कि एक पहलवान

आया था, जो मुश्किल से चौदह साल का था। वह सब की तरह लम्बा और सूरज के समान ओजस्वी मुखमण्डल वाला था जिसके कन्धे शेर की तरह बलिष्ठ थे। ऐसे हाथ-पैर रखने वाला पहलवान आज तक तुर्कों में मैंने नहीं देखा था।

चू शमशीर हिन्दी बे चग आयदश
जे दरिया व अज कूह नग आयदश
चू आवाज़ ए-उ रमद गुर्रनदे नीस्त
चू वाजू ए-उ तीग बर्रनदे नीस्त
ब ईरान व तूरान चनो मर्द नीस्त
जे गर्दान कस उ रा हम आवुरद नीस्त
बे नाम अस्त सोहराब गुर्द-ए-दिलेर
न अज़ दीव पीचद न अज़ पील व शीर

(जब वह अपनी हिंदुस्तानी तलवार चलाता है तो समुदर और पहाड शरम से गड जाते हैं। उसकी आवाज़ का मुकाबला बिजली की कडक और बाजुओ की मजबूती के सामने तेज तलवार भी नही टिक सकती। ईरान व तूरान मे ऐसा बाका जवान नही है। उसकी तुलना किसी भी पहलवान से नही की जा सकती है। उस शूरवीर का नाम सोहराब है, जो न तो शेर, न हाथी और न दैत्य से डरता है।)

गजदहुम ने सोहराब की बहादुरी की चर्चा करते हुए पत्र मे आगे लिखवाया कि जो भी कहा जाये, मगर ऐसा विश्वास जागता है कि यह या तो रुस्तम का या रुस्तम के समान किसी पहलवान का वशज है। हुजीर अभी उसी का बन्दी बना हुआ है। सक्षेप मे कहू, तो मैंने तूरान के सब सवारो को देखा है मगर ऐसा ओजस्वी पहलवान मेरी नज़रो मे अब तक नही गुजरा।

गजदहुम ने यह पत्र खुफिया तरीके से शाह के पास भेजा ताकि तुर्क सवारो की निगाह सदेशवाहक पर न पड सके।

□ □

सुबह होते ही तूरान सिपाहियो ने कमर कसी और अपने सिपाहसालार सोहराब के पीछे हो लिए, मगर सफेद किले के पास जाकर उन्होंने देखा कि

दरवाजा खुला है और किले मे न आदम है न आदमजात। किले के तहखाने के चोर रास्ते से गजदहुम के साथ सभी भाग गए थे। अब किला खाली पडा था। सोहराब किसी शेर की तरह दहाड रहा था मगर उसको उस चोर रास्ते का पता नही था। इसलिए हाथ मलता हुआ सोच रहा था गिद-आफरीद कही नजर नही आ रही है।

□ □

इधर जब खत ईरान के शाह काऊस के पास पहुचा तो उसे यह जान कर दु ख हुआ कि तूरान का पहलवान फौज के साथ चढाई करने को आगे बढ रहा है। बादशाह ने फौरन फौज के महत्त्वपूण योद्धाओं व पहलवानो की सभा बुलाई ताकि सब मिलकर इस समस्या पर विचार करें। तूस, गूदज, गिव गुरगीन, बहराम, फरहाद सभी नामी पहलवान जमा हो गए। उन सबने जब गजदहुम का पत्र पढा तो एकमत होकर बोले कि इस जैसे पहलवान का मुकाबला करना हमारे बस की बात नही। अच्छा हो कि इस बडे काम के लिए रस्तम की सहायता मागी जाए। गिव को जाबुलिस्तान भेजा जाए ताकि वह रस्तम को सविस्तार इस तूरानी पहलवानो का विवरण देते हुए कहे कि ईरान का तख्त व ताज खतरे म है।

□ □

गिव खत लेकर जाबुलिस्तान की तरफ रवाना हुआ। जब जाबुलिस्तान करीब आया तो उसने खुशी का नारा लगाया, जिसको सुनकर रस्तम को पता चल गया कि ईरान से सवारी आई है। फौरन स्वागत की तैयारी की गई। गिव ने रुस्तम को शाह काऊस का खत दिया। रस्तम ने पत्र खोलकर पढा, जिसम उसकी बहादुरी की तारीफ में शाह न ससार की कोई उपमा नही छोडी थी और अन्त मे लिखा था

दिल व पुश्त गर्दान-ए-ईरान तोइ
बेचगाल व नीरूइ शीरान तोइ

(तुम ईरान के दिल और उसके रक्षक हो जिसके हाथो म शेर के जैसा बल है।)

रस्तम पूरा खत पढकर मुस्कराया और गिव से तूरानी पहलवान सोहराब का बयान सुनकर सोच मे पड गया। उसको याद आया कि शाह

शाह काऊस का यह फैसला सुनकर गिव का कलेजा मुंह को आ गया कि रुस्तम का स्वागत शाह ने किस तरह किया। रुस्तम का यह अपमान देखकर सारे दरबार को सांप सूंघ गया। शाह काऊस के रौद्र रूप और अपमानजनक व्यवहार ने रुस्तम को तो दीवाना ही बना दिया और वह शाह काऊस पर चीख पड़ा कि आपका हर काम पहले से बदतर है। आपको यह तख्त व ताज शोभा नहीं देता। आप उस तुर्क पहलवान को जिन्दा फांसी पर चढ़वाएं क्योंकि जो बुरा चाहता है उसको सजा मिलनी चाहिए। मेरे रख्श और मेरी तलवार के प्रभाव में राम, समसार, माजनदरान, मिस्र, चीन और हामावरान हैं। आप भी मेरे कारण आज जिन्दा हैं। फिर आपके दिल में मेरे लिए इतनी दुश्मनी क्यों? इतना कहकर रुस्तम ने जोर से तूस के हाथ पर अपना हाथ मारा और गुस्से से जाने को मुड़ा और रख्श पर सवार होकर बोला—

चू खश्म आवरम शाह काउस कीस्त
चेरा दस्त याजद बे मन तूस कीस्त
मरा जूर व फीरूजी अज दावर अस्त
न अज बादशाह व न अज लश्कर अस्त

(यदि मुझे ताव आ गया तो फिर मेरे लिए न शाह काऊस की कोई कीमत है और न तूस की, जिसने मेरी तरफ हाथ बढ़ाने की जुरत की है। मेरे बाजुओं का बल और विजय ही निर्णय करने वाले हैं, न कि बादशाह और उसकी फौज।)

जमीन बन्देह व रख्श गाह मनस्त
नगीन गुर्ज व मगफर कुलाह मनस्त
सर नीजे व गुर्ज यार मन अन्द
दो बाजू व दिल शहरयार मन अन्द

(यह रख्श ही मेरा साम्राज्य है और यह गदा व जरा मेरा ताज है। भाले व गदा मेरे यार हैं। मेरा दिल और ये मेरे दोनों बाजू जिनका मैं बादशाह हूं।)

शब तीरेह अज तीग रख्शान कुनम
बर आवुरद दीगे बर सर अफशान कुनम

चे आजार दम उ न मन बन्दे अम
यकी बन्द-ए-आफरीनन्दे अम

(अन्धेरी रात को मैं अपनी तलवार मे रोशनी देता हू। यदि इसको चला दू तो कटे हुए सिर ही सिर बिखर जाएगे इस जमीन पर। मैं आजाद पैदा हुआ हू न कि किसी का गुलाम। इसलिए मैं सिफ खुदा का बन्दा हू।)

दिलेरान बेशाही मरा ख्वास्तन्द
हुमान गाह व अफसर वियारास्तन्द
सुए तख्त शाही नकरदम निगाह
निगाह दाश्तम रस्म व आईन-ए-राह

(दिलेर मुझे शाह बनाना चाहते थे और तख्त शाही पर मुझे बिठाना चाहते थे मगर मैंने सिंहासन की तरफ नजरें उठाकर भी नहीं देखा क्योंकि मेरी नजरें नेकी और सत्य की राह पर टिकी हुई थी।)

इतना कहने के बाद भी रुस्तम का गुस्सा शात नही हुआ और उसने कहा कि जब शाह कबाद सहायता माग रहे थे। उस समय मेरे पितामह साम खडे न होते, तो आज काऊस को यह ताज व तख्त नसीब न होता। वे ही उन्हें अलबुर्ज पर्वत की कैद से आजाद करके ईरान लाए थे। अच्छा है कि अब सोहराब पहलवान इस ईरान की धरती पर आकर बच्चे और बुजुर्ग का वजूद मिटा दे। तुम सब मिलकर इस समस्या का हल ढूढो। अब ईरान मे कोई मुझे आज के बाद नहीं देखेगा। अब इस जमीन पर सिफ गिद्ध मडराएगे। इतना कहकर रुस्तम ने रख्श को एड लगाई और रख्श हवा मे बातें करने लगा।

रुस्तम के इस तरह चले जाने से सबका दिल दुखी हो उठा क्योंकि रुस्तम मानो गडरिया था और वे सब उसके रेवड। सभी गुदर्ज को उलाहना दे रहे थे कि तुम्ही इस घटना के जिम्मेदार हो क्योंकि शाह तुम्हारी ही सुनते हैं। तुम्ही ने कान भरे हैं। अब रूठी किस्मत को तुम अपनी चाटुकारिता से वापस बुला सकते हो ?

सारे पहलवानों ने मिलकर सलाह मशविरा किया कि अब क्या करना चाहिए। इसके बाद गुदर्ज शाह काऊस के पास गया और शाह को पुरानी दुश्मनी व बुरे दिनो मे रुस्तम की सहायता की सारी घटनाए याद दिलाई

और कहा कि रुस्तम के बिना ईरान तबाह हो जाएगा। शाह काउस की आखें खुल गइ। पिछली सारी घटनाए नजरो के सामने घूम गइ और वह अपने व्यवहार पर लज्जित हुआ। उसने गुदर्ज से कहा कि तुम्हारा उपदेश सही है। तेजी और गुस्से से काम बनता नही बिगडता है। जसे भी हो, तुम रुस्तम को मनाकर मेरे पास लाओ ताकि मेरी चिन्ता व दु ख की कालिमा छट।

गुदज शाह काउस के पास से बाहर आया। जब पहलवानो को काउस की शर्मिन्दगी का पता चला तो वे घोडे दौडाते हुए रुस्तम की तरफ भागे और चारो तरफ से घेर लिया। सबन रुस्तम का गुणगान करते हुए कहा कि आपके पैरों के नीचे सारी दुनिया है। आपका तख्त हमारे सर आखों पर है। आपसे छुपा तो नही है कि काऊस बेवकूफ है और बिना सोचे-समझे बोलता है। अगर आप शाह से नाराज़ है तो ईरानव सियो का गुनाह क्या है ? शाह काऊस अपने किए पर शर्मिन्दा है।

उन सबकी बातें सुनकर रुस्तम ने जवाब दिया कि मुझे काउस की ज़रा भी परवाह नही है। मैं उससे क्यो डरू। मरी दुनिया तो यह घोडा और मेरे बाज़ू हैं। वह भूल जाता है कि उनकी हर लडाई को मैंने ही जीत म बदला है। मैं खुदा के अलावा किसी से नही डरता।

गूदज ने जब रुस्तम का क्रोध कम होत देखा तो कहा कि सच्चाई तो यह है कि शाह काऊस बुरी तरह से उस तूरानी पहलवान से भयभीत हैं। फिर, ईरान की रक्षा हम सबका कतव्य है। गूदज की बातो से रुस्तम का दिल व दिमाग ठण्डा हुआ और सबके मनाने से वह शाह काउस के पास जाने को राजी हुआ। शाह काऊस ने रुस्तम को दूर से आता दखकर उसके स्वागत म बाहे फैलाई और अपने व्यवहार के लिए क्षमा मागी और कहा कि इस विकट समस्या के समाधान के लिए मैंने तुम्हे बुलाया था। जब तुम देर से पहुचे तो चिन्ता के कारण मैं उत्तेजित हो गया। यदि मरे किसी शब्द से तुम्ह दु ख पहुचा है, तो मैं उसके लिए फिर से क्षमा मागता हू। शाह का विनम्र स्वर सुनकर रुस्तम ने कहा कि आपका हर हुक्म हमारे सिर आखो पर है। शाह काउस ने कहा कि आज साज व आवाज, ऐश व तरब की महफिल जमती है। कल लडाई के लिए फौज कूच करेगी।

शाही बाग में जश्न का इंतजाम हुआ। शराब से मस्त और खुशी मे डूबे सारे पहलवान व योद्धागण देर रात तक शराबनोशी करते रहे।

□ □

सुबह ने जब अपनी कोलतार जैसी चादर दूर फेंक दी, उस समय एक लाख सिपाहियों की फौज ने कूच का नगाड़ा बजाया। जब फौज चली तो इस काफिले से हवा नीली और जमीन काली हो रही थी। फिर दो मील तक खेमे गाड़े गए। इस शोर को सुनकर दूसरी ओर सोहराब के कान खड़े हुए। उसने दूर से ऊंचाई पर खड़े होकर इस फौज का पड़ाव देखा। हुमान इतनी बड़ी फौज देखकर भयभीत हो उठा। उसको देखकर सोहराब हंसा और बोला 'इस समय शाह अफरासियाब का नाम लेकर मैं इस मैदान को खून के समन्दर में बदल दूंगा।' इसके बाद सोहराब ने शराब का जाम भरा और बिना किसी गम के खुशी-खुशी उसको पी गया। उसको युद्ध आरम्भ होने की कोई चिंता नहीं थी।

मगर दूसरी तरफ शाह काऊस के सिपाही मैदान के चारों तरफ एक दुर्ग की परिधि बनाते हुए फैल रहे थे और धीरे धीरे कस्बे पहाड़, टीले और मैदान में लोगों व योद्धाओं की संख्या बढ़ती ही जा रही थी। खेमों के अलावा जमीन कहीं नजर नहीं आ रही थी।

शाम ढली, सूरज ने मुंह मोड़ा और अपने काले डैने फैलाए। उस समय रुस्तम शाह काऊस के पास पहुंचा और कहा कि मैं भेष बदलकर दुश्मन का हाल चाल लेने जाना चाहता हूं ताकि देखूं कि उधर के हालात क्या हैं। रुस्तम की बात सुनकर शाह काऊस ने यह काम उसी पर छोड़ते हुए कहा कि रुस्तम स्वयं फैसला कर सकता है क्योंकि रणक्षेत्र का ज्ञान उसको अधिक रहता है।

रुस्तम ने तुर्कों का भेष बदला और हिसार के अंत तक गया। जब वह किले के समीप पहुंचा, तो उसको तुर्क सिपाहियों का शोर सुनाई पड़ा। रुस्तम किले में इस तरह दाखिल हुआ जैसे हिरनों के झुण्ड में शेर घुसता है।

तुर्क योद्धा युद्ध के भय से मुक्त चमकते चेहरे लिए खुशी में एक-दूसरे का [illegible] हुए जाम पर जाम चढ़ा रहे थे। समामनी के आगे म

माहौल गूंज रहा था। यह माहौल देखकर रुस्तम को सोहराब की महानता एव रणक्षेत्र की निपुणता का पता चला कि वह कितना बडा योद्धा है। मन ही मन रुस्तम सोचने लगा कि समनगान म जो मेरा बेटा तहमीना के पास पल रहा है उसको मैं इसी नौजवान पहलवान के पास रण विद्या सीखने के लिए भेजूगा, क्योकि इस उम्र मे यू लश्कर लेकर ईरान की तरफ रुख करना कोई मामूली बात नही है।

जब रुस्तम और अन्दर दाखिल हुआ तो उसको तख्त पर बैठा सोहराब नजर आया। उसके बलिष्ठ कन्धे, चौडा सीना, लम्बा कद देखकर उसकी आखें चमकी जैसे उसने एक शादाब सव के दरख्त को सामने खडा देख लिया हो। सोहराब का चेहरा खिले गुलाब जैसा हो रहा था और सीना शेर की भाति तना हुआ था। उसी के पास एक तरफ अफरासियाब का सरदार हुमान बठा हुआ था और दूसरी तरफ तहमीना का भाई जिन्दारज्म बैठा हुआ था। रुस्तम को सोहराब को पहचानने मे देर नही लगी।

रुस्तम योद्धाओ की भीड से दूर एक ऐसी जगह जा बैठा, जहा स सारा दृश्य उसको एक साथ नजर आ रहा था। सब अपने म मस्त एक-दूसर की प्रशसा करते हुए खुशिया मना रहे थे। तभी जिन्दारज्म किसी काम से बाहर की तरफ आया तो एक लम्बे चौडे पहलवान को वहा बैठा देखा। वह शकित हो सोचन लगा कि इस डील डौल का तो कोई पहलवान हमारे बीच नही है। फिर, यह कौन है जो इस तरह हमारे बीच यू बठा है। उसने आगे बढकर रुस्तम से पूछताछ करना आरम्भ कर दिया। रुस्तम उसके पैने प्रश्नों का क्या उत्तर देता सो रुस्तम ने एक भरपूर घूसा उसकी गदन पर जमा दिया। उसकी रूह बदन छोड गई और उसकी लाश वही छोडकर रुस्तम बाहर निकल आया। जिन्दारज्म को तहमीना क बेटे क साथ इसलिए भेजा था ताकि वह सोहराब को, अपने बाप रुस्तम के पहचानने मे मदद करेगा।

इधर सोहराब को चिन्ता लगी कि उसके पास से उठा जिन्दारज्म पहलवान यानी उसका मामा अभी तक क्यो नही लौटा। बडी देर से सोहराब को उसकी खाली जगह अखर रही थी। आखिर सोहराब ने बेचन होकर उसको देखने के लिए अन्य सिपाहिया को भेजा। वे दुखी लौटे और

उन्होंने यह बुरी खबर सुनाई कि वह बहादुर पहलवान तो मुर्दा पड़ा है। सुनते ही सोहराब अपनी जगह से उचका और बाहर की तरफ लपका। उसके पीछे सारी महफ़िल चल पड़ी। सबने देखा कि फौज का सबसे बलवान पहलवान ज़िन्दारज़्म मुर्दा पड़ा है। सोहराब ने उत्तेजित होकर कहा कि आज कोई भी सिपाही सोएगा नहीं। सारी रात नेज़े पर खड़े होकर पहरा देना होगा क्योंकि हमारे यहां एक भेड़िया घुस आया है जिसने सबसे बेहतर भेड़ का शिकार कर लिया है। अगर खुदा मेहरबान रहा तो कमन्द और अपने घोड़े की नस्ल से ईरान व उसके निवासियों को कुचलकर रख दूंगा।

इतना कहकर सोहराब ने तख़्त पर बैठकर सबको बुलाया और कहा कि यदि मैं इस महान युद्ध में मारा जाऊं तो इसका यह अर्थ हरगिज़ मत लगाना कि हमारी लड़ाई खत्म हो गई।

☐ ☐

तुर्क लिबास पहने जब रुस्तम शाह काऊस की तरफ लौटा तो उसको देखकर गिव ने म्यान से तलवार निकाल ली। यह देखकर रुस्तम ने उसको डांटते हुए उसके सर पर एक ज़ोर का घूंसा जमाया तब गिव ने रुस्तम को पहचान कर हंसना शुरू किया। मगर फौरन ही चोट के दर्द से कराहना भी शुरू कर दिया। फिर गिव ने रुस्तम से पूछा कि इस अंधेरी रात में, वह पैदल कहां से आ रहा था। रुस्तम ने हंसकर कहा कि नेकी करने के सिवा और कुछ करने नहीं रह गया था। यह कहकर रुस्तम शाह काऊस के पास पहुंचा। रुस्तम ने बादशाह से तूरान योद्धाओं का हाल-चाल बताने के बाद सोहराब के व्यक्तित्व का बयान करते हुए कहा कि ऐसा पहलवान तो ईरान में भी नहीं है। उसको देखकर लगता है जैसे साम पहलवान के परिवार का हो। इसके बाद रुस्तम ने तूरानी फौज के पहलवान योद्धा को मार डालने की बात बताई और शाह काऊस से विदा लेकर वह सारी रात लश्कर की तरतीब देने में व्यस्त रहा।

☐ ☐

जब सूरज ने अपनी सुनहरी ताज उठाई तो सारी दुनिया रोशनी से भर उठी। सोहराब ने ज़िरह बख़्तर पहना और काले घोड़े पर बैठा। कमर

मे हिंदुस्तानी तलवार बंधी थी और सिर पर शाही टोपी थी। सोहराब हुजीर के पास जाकर बोला—तुमको मेरी रहनुमाई करनी पडेगी। रास्ते के बारे म सारी जानकारी देनी पडेगी। एक बात याद रखना कि धोखा और झूठ मेरे साथ नही चलेगा। चूकि तुम मेरे साथ हो और आजाद भी होना चाहते हो तो इस बात का ध्यान रखना कि जरा भी बेईमानी चलने न दूगा। ईरान के बारे मे जो कुछ जानना चाहूगा, वह सब सच-सच बताना पडेगा। इस काम के ईनाम के रूप मे तुमको धन व खिलअत दूगा। यदि तुमन खबरें गलत दी तो तुम्हे कारागार मे डाल दूगा।

हुजीर ने सोहराब की बात सुनकर कहा कि आप ईरान के सिपाहियो के बारे म जो कुछ पूछेंगे मैं आपको सच-सच बताऊगा। झूठ क्यो बोलूगा। मुझे मालूम है कि सच से अच्छा और झूठ स बदतर इस दुनिया म दूसरा कुछ नही है। सोहराब ने कहा कि मैं गिव, तूस, गूदज, बहराम और प्रसिद्ध पहलवान रस्तम के बारे म जानना चाहता हू। पहले यह बताओ कि इन तम्बुओ के बीच वह खेमा किसका है जिसका पर्दा दीबा के विभिन्न रगो से सजाया गया है। वहा पर सौ हाथी है। एक काला घोडा और फिरोजे का जडा तख्त है। उस खेमे पर सूय की तरह सुनहरे रग की पताका पहरा रही है, जिसकी छड का मूठ सुनहरा है और उस पर ऊदे कासनी रग का गिलाफ चढा हुआ है। जिसका खेमा चारो तरफ से योद्धाओ से घिरा हुआ है। उस पहलवान का नाम बताओ।

हुजीर ने जवाब दिया कि यह खेमा शाह काऊस का है। इसी तरह से उसने सारे पहलवानों के खेमे सोहराब को बताए। आखिर म सोहराब ने पूछा कि हरी पताका वाला वह खेमा किसका है जहा पर वह पहलवान भारी और मजबूत कधो के साथ बैठा है। ऐसा व्यक्तित्व तो मैंने ईरान के पहलवानो म नही देखा। उसकी पताका भी सबस बडी है। उस पर अजदहा की तस्वीर बनी है और पास बडा सा घोडा खडा है?

हुजीर न पल भर ठहरकर सोचा कि यदि वह रुस्तम का पता सही बता देगा तो यह अद्भुत पहलवान जाने क्या हानि रुस्तम को पहुचाए। बहतर है कि मैं रस्तम का नाम न लू और यह भेद सोहराब से छुपाए ही रखू। यह फसला करके हुजीर न सोहराब को जवाब दिया कि चीन स कोई

सालार आया हुआ है। सोहराब ने पूछा कि उसका नाम क्या है तो हुजीर ने बताया कि मैं तो यहा किले म था। मुझे इस चीनी पहलवान के बारे म कुछ पता नही है।

सोहराब का जिज्ञासु मन उदासी की पर्तों मे डूब गया। आखिर उसको रुस्तम का पता चल पाया। मा ने चलते हुए पिता की जो पहचान बताई थी, वह तो इसी पहलवान से मिलती जुलती है। उस मन शकित था कि आखिर हुजीर की बताई बात को कितना सच माने। मगर दूसरा कोई चारा भी उसके पास न था। आखिर सोहराब से रहा नही गया और उसने हुजीर से पूछा कि क्या बात है कि तुमने सारे पहलवानो क खेम दिखाकर उनकी प्रशसा मे जमीन आसमान एक कर दिया, मगर जो इन सारे पहलवान का सरदार है, उस महान पहलवान रुस्तम के बारे म एक भी शब्द तुम नहीं बोले। रुस्तम तो पूरी दुनिया का पहलवान है और हर देश, हर सीमा का वह रक्षक है। ऐसे योद्धा की यू छुपकर रहने की कोई तुक समझ मे नही आती। तुमने यह बात पहले ही बताई थी कि रुस्तम सबसे महत्वपूर्ण पहलवान है। जब काऊस शाह इतनी बडी फौज के साथ स्वय रण-क्षेत्र म आये हैं, उस समय रुस्तम जैसे पहलवान क न होने पर मन म शक होता है।

सुनकर हुजीर को जवाब दते नहीं बना। फिर भी उसने बात बनाते हुए कहा कि बहार का मौसम है। जरूर रुस्तम जाबुलिस्तान की तरफ गए हुए होगे। जश्न व महफिल का दौर जारी होगा। हुजीर की बात सुनकर सोहराब ने कहा कि यह बात मत कहो कि जग से रुस्तम ने पीठ मोड ली है। इस युद्ध के लिए ईरान के शाह ने हर कोने से पहलवानों एव योद्धाओं को जमा किया है। ऐसे सकट के समय रुस्तम जैसा पहलवान गायको के सामने बैठा सगीत का मजा ले रहा होगा? तुम्हारी इस बात को सुनकर सारी दुनिया कहकहा लगाएगी। तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो। याद रखो, तुमने मुझे वचन दिया है। यदि वह शर्तनामा तुमने तोडा तो मैं तुम्हारा सिर धड से अलग कर दूगा। मैं भेद जानना चाहता हू, न कि उल्टी-सीधी बातें सुनने का उत्सुक हू। पहले कह चुका हू कि सच बोलने की कीमत दूगा —मोतियो से भर दूगा।

सोहराब की बातें सुनकर हुजीर ने जवाब दिया कि जो भी रुस्तम जैसे पहलवान से युद्ध करने का साहस जुटाएगा, वह इस दुनिया मे नही टिकेगा। रुस्तम की ताकत के आगे बलवान हाथी भी कुछ नही है और उसके घोडे रख्श के आगे सारे घोडे बेकार है। उसके एक बार गदा घुमाने से दो सौ लोग जान से हाथ धो बैठते हैं। उसके [illegible] मे सौ पहलवानों की ताकत है और उसका कद दरख्त से भी ऊचा है। यदि रण-क्षेत्र मे उसे गुस्सा आ गया तो क्या हाथी, क्या शेर, क्या पहलवान, सबकी गर्दन मरोड कर रख देता है।" रुस्तम के बारे मे जब हुजीर बता रहा था, उस समय उसके मन मे यह बात उमड रही थी कि इस बलवान को रुस्तम की ताकत का अन्दाजा हो जाए तो अच्छा है वरना यह उसको मारकर ही दम लेगा। मैं यदि झूठ बोलने पर मार डाला जाऊ तो क्या फर्क पडता है। मगर मेरे सच बोलने से अगर रुस्तम मारा जाता है तो इस ईरान को कौन बचाएगा। सारे पहलवान बूढे हो रहे है और उनमे रुस्तम सरीखा तेज भी नही है कि वे दुश्मन के दात अकेले खट्टे कर सकें। इसलिए मुझे इस जवान का हौसला पस्त करना पडेगा। ऐसा सोचकर हुजीर ने जोश मे कहा कि आप मेरे खून से हाथ रगना चाहे तो रग लें, मगर हकीकत यह है कि—

हमी पीलतन रा न ख्वाही शिकस्त
हुमाना कत आसान नयायद बेदस्त
न बायद तोरा जुस्त ब उ नबद
बर आरद वे आवुरद गह अज तो गर्द

(आप हाथी जैसी काया रखने वाले रुस्तम को हरा नही सकते हैं। पहले तो उस तक पहुचना ही बहुत कठिन है। फिर उससे लडना आपके बस की बात नहीं है क्योंकि उससे पजे लडाना स्वय अपनी मिट्टी छटवाना है।)

सोहराब ने उसकी बडी-बडी बातें सुनकर अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड लिया ताकि उसके चेहरे के भाव को हुजीर पढ न ले। हुजीर की भेद-भरी बातो को सुनकर सोहराब ने अजीब सा महसूस किया। इसके बाद वह गहरी सोच मे डूब गया। फिर कुछ सोचकर एक सुनहरी टोपी जिरह-बख्तर के नीचे छुपाई और एक तुर्की रोमी टोपी सिर पर लगाई। इसके बाद तीर-कमान, माला, कमन्द और गदा को उठाया और तेजी से घोडे पर बैठा।

उसकी रगो म गम खून जोश मार रहा था।

सोहराब हाथ म भाला पकडे चिघाडता हुआ घोडा दौडा रहा था। रास्ते की धूल आसमान को ढक रही थी। सोहराव के बाजुओ की मछलियों को तडपता और उसके वायुवग को दखकर आस-पास एसा सन्नाटा छा गया जैस सूरखर के झुण्ड शेर को आता देखकर झाडिया मे दुबक जाते है। ईरान की शाही फौज म एसा पहलवान किसी की नजर से नहीं गुजरा था। साहराब ईरानी योद्धाओ व पहलवानो की भीड को चीरता हुआ सीधे शाह काऊस के पास पहुचा और शाह को ललकारत हुए कहा—"ओ आजाद मद काऊस, तुम किस तरह का युद्ध इस मैदान मे करोगे ! कैस तुम शाह काऊस बन बैठे जबकि तुम्ह शेरो की जग का कुछ ज्ञान ही नही है। मैं यह भाला अगर अपनी मुटठी म घुमाकर फेंकू तो यह सारे तुम्हारे योद्धा एक क्षान मे बेजान हो जायेंगे।

"उस दिन जब जिन्द पहलवान मरा था ता मैंने सौगन्ध खाई थी कि ईरान का कोई भी हथियारबन्द मेर हाथ से बचकर नही जायेगा और काऊस को जिन्दा फासी पर चढाऊगा। कहा हैं, ईरान के नामी पहलवान ! क्यो नही वे मुझसे युद्ध करने के लिए आगे बढते ! ' इतना कहकर सोहराब खामाश हा गया। मगर ईरान की तरफ स उसको जवाब देने के लिए किसी ने मुह नही खोला।

सोहराब ने कमान चढाई और एक ही तीर से सत्तर खेमो की कीलो को एक साथ उखाड दिया। एकाएक तम्बू नीचे जमीन पर आन लगे। यह देखकर फौज मे एक सनसनी सी फैल गई और भयभीत शाह काऊस को सन्मा पहुचा। उसने पुकार कर कहा—"कोई है जो जाकर रुस्तम को इस घटना की खबर दे कि उस तूरानी पहलवान का दिमाग अक्ल स खाली हो रहा है ? मरे पास रुस्तम जैसा कोई दूसरा पहलवान नहीं है जिसे मैं रुस्तम के स्थान पर युद्ध करने को कह सकू। इसलिए रुस्तम का फौरन यहा पहुचना जरूरी है।"

तूस शाह काऊस का यह सन्देश लेकर रुस्तम के पास पहुचा। शाह का पगाम सुनकर रुस्तम झुझलाकर कहन लगा कि हर बादशाह की तरह शाह काऊस ने मुझे एकदम बुलवाया है। फिर गुस्से से बोला—

गही जग बूदी गही साज़-व-बज़्म
नदीदम ज़े काऊस जुज रज-ए-रज्म

(कभी कहत हैं जग करो तो कभी साज-आवाज के साथ बज्म म रहने को कहते हैं। सच है, काऊस के हाथों सिवाए युद्ध के दुख के मैंने कुछ हासिल नही किया।)

बाहर निकलकर रुस्तम ने रख्श पर जीन कसने का हुक्म दिया। सिपाहियों को चुना और खेम म मैदान की तरफ जो निगाह दौडाई तो दूर से गिन का कुलाह नजर आया। बाहर जल्दी चलने का शोर सुनकर बबरे बयान (रुस्तम का विशेष चीते की खाल का बना वस्त्र) पहनते हुए रुस्तम ने मन-ही मन कहा कि यह आजादी की नहीं, बल्कि एक इसान के अह की पर मतुष्टि की लडाई है। रुस्तम ने किसानी कमरबन्द कसा और रंग पर बैठकर सरपट ईरान की तरफ भागा।

रण क्षेत्र मे रुस्तम सोहराब को दखकर एक बार फिर बुरी तरह प्रभावित हो उठा। सोहराब अपने सिपाहियो से अलग जाकर रुस्तम से बोला कि अकेले लड़ें तो कसा रहेगा। मैं नही चाहता कि हमारी फौजें एक दूसरे का खून बहाए। रुस्तम ने नजरें उठाकर उस मजबूत काठी वाले पहलवान को ऊपर से नीचे तक देखा।

रुस्तम ने सोहराब से कहा कि ओ जवान! जरा जोश ठण्डा करो। जमीन खुश्क है और हमारे सिर पर गम व नम हवा बह रही है। युद्ध करते हुए मैं बुढापे की दहलीज पर आन खडा हुआ हू और इस बीच असख्य योद्धाओं को मौत की मीठी नींद सुला चुका हू। जो भी मुझसे युद्ध करने आया है, मैंने बिना किसी फर्क के उसको हरा दिया। इसलिए पहले मुझे अच्छी तरह से देख लो, फिर मुझसे युद्ध करने का प्रण लो। मेरी बहादुरी के गवाह ये पर्वत, यह मैदान, यह दरिया और ये मिनारे है, जिन्होंने मुझे लडते देखा है। मेरी मर्दानगी की परखा है कि कैसे मैंने हर परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। इसलिए मेरे दिल मे तुम्हारे लिए रहम उमड रहा है और मैं नही चाहता कि तुमको मसल कर रख दू। मुझे तुम्हे देखकर महसूस होता है कि तुर्क पहलवानो म तुम-सा कोई भी नहीं है और ईरान मे तुम्हारा जोडा ढूढने से भी नही मिलेगा।

रुस्तम का आखिरी जुम्ला सुनकर सोहराब का दिल धड़क उठा। उसने रुस्तम म पूछा कि क्या मैं आपसे एक सवाल कर सकता हू जबकि आपने मेरा नस्त के बारे मे जिज्ञासा प्रकट की है। इसलिए मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हू। क्या आप मेरे सवाल का जवाब सही देंगे ? मुझसे कुछ भी नही छुपाएग कि—

मन इद्रून गुमानम कि तो रुस्तमी
कि अज तुम्मे नामवर नीरमी

(मुझे महसूस हो रहा है कि जैसे आप नामवर पहलवान नारीमान के वशज हो और आपका नाम रुस्तम है।)

रुस्तम ने सोहराब को देखा और जवाब दिया कि—

चनीन दाद पासुख कि रुस्तम नीयम
हम अज् तुरम-ए-साम नीरम नीयम
कि उ पहलवान अस्त व कहतर अम
न ब तख्त व गाहम न व अफसर अम

(मैं रुस्तम नही हू और न ही साम नारीमान और जाल का वशज हू। वह नामवर पहलवान हैं और म एक बहुत मामूली आदमी जिसके पास न तख्त है न सल्तनत है न दरबार है।)

रुस्तम का यह जवाब सुनकर सोहराब के दिल पर बिजली-सी गिरी। निराशा म डूबते हुए उसे महसूस हुआ कि जस एकाएक चमकीला दिन रात के अधेरे म डूब गया हा।

□□

रुस्तम और सोहराब ने जग के लिए कमर कसी और अपने-अपने हथियार लेकर मैदान म उतर पडे। वे जब भाले स युद्ध कर चुके तो दोना सवारो न तीर व कमान उठाया। थोडी देर बाद कमान की डोरी खुल गयी तो दोना फिर आमने सामने खडे हुए।

वेशमशीरे हिन्दी बर आविख्तन्द
हमी जे आहन आतश रीख्त द

(और अपनी म्यान म हिन्दुस्तानी तलवारें खीची और उनकी टकराहट से फिजा गुजा दी। एसा लगा कि तलवारो की नकार स चिंगारिया निकलने

लगी हैं ।)

वे जख्मे अन्दरून तीग शुद रीज़ रीज़
चे जख्मी की पैदा कुन्द रस्ताखीज

(उस घाव से जो महाप्रलय ले आता है, उसी के बल से तलवार के टुकड़े-टुकड़े हो गए ।)

इसके बाद दोनो ने जीन से अपनी-अपनी गदाए उठाइ और एक दूसर पर चोट करने लग । इनकी ताकत के आगे गदाए भी आगे से झुक गइ । घोड़े भी थक गए थे । उनके बदन के जिरह बख्तर चाक चाक हो चुके थे । दो दिलेर योद्धाओ का चेहरा धूल स, बदन पसीने और खून से नहा गये थ, जबान और हल्क मे प्यास से काटे चुभन लग थे । दोनो कुछ देर के लिए एक-दूसर से दूर खड़े हो गए और घोडो के सुस्तान और प्यास बुझाने का मौका दिया । दोनो के चेहरे पर न दया थी न प्यार । विचित्र बात तो यह थी कि पशु-पक्षी सब अपने बच्चो को प्यार करत हैं और उनको हर कष्ट मे बचात हैं । मगर यहा खुदा को कुछ और ही मजूर था । बाप-बेटे अपने-अपने बल का प्रदशन करन मे लग हुए थे ।

रुस्तम मन ही मन सोच रहा था कि मैंने अभी तक एक भी ऐसा योद्धा नही देखा । इस जग के सामने तो सफ़ेद दैत्य से मेरा युद्ध फीका पड गया है और मैं इस युद्ध से निराश-सा हो रहा हू । इस जवान ने तो मुझे जग म बेहाल कर दिया है ।

घोडे सुस्ता चुके थे । दोनो दिलेर घोडो पर सवार हुए । तीर-कमान उठाई और एक-दूसरे के सामने आन खडे हुए । दोनो तरफ की फौजें खडी खडी यह तमाशा देख रही थी । दोनो ने इस तरह से एक-दूसर की ओर तीर फेंके जैसे दरख्तो से पत्तिया झड रही हो । तीरो की बारिश स उनकी ढालें उनको बचा रही थी । उनके बल के आगे हथियार पुराने और बेकार साबित हो रहे थे ।

रुस्तम चाहता तो अपने हाथों से पवत भी उठा लेता था, मगर जब उसने सोहराब की कमर मे हाथ डालकर उसे पछाडना चाहा तो उसे महसूस हुआ कि सोहराब स्थिर एव जड है । उसको अपनी जगह से हिलाने का अथ था केवल थकन और निराशा हाथ लगती । सोहराब ने अपनी गदा

उठाई और रुस्तम के कन्धे पर दे मारी। रुस्तम इस बार मे बिलबिला उठा। उसका चेहरा देखकर सोहराब हसा और कहने लगा कि ए सवार! जब आपमे दिलेरो की गदा की चोट सहने की ताकत नही है तो फिर इस बुढापे म जवान बनने का शौक क्यो चर्राया जो मुझ जैसे पहलवानो से लडने चले आए?

रुस्तम यह बात सुनकर क्रोधित हो उठा और तूरानी सिपाहियो की तरफ झपटा। यह देखकर सोहराब ने ईरानी फौज पर हमला बोल दिया। पलक झपकते ही असख्य ईरानी व तूरानी सिपाही इन दोनो पहलवानो के हाथो मौत के घाट उतार दिए गए। यकायक रुस्तम भयभीत हो उठा कि कही सोहराब शाह काऊस को उसके घोडे से उतारकर मार न डाले। फौरन वह सोहराब सिपाहियो मे घिरा खडा है। उसका भाला व तलवार खून से रंगे हैं और जमीन खून का तालाब बनी हुई है। सोहराब किसी शेर की तरह शिकार किए जा रहा है। यह दृश्य देखकर रुस्तम चिंघाडा

बेदू गुफत कएइ तुर्क खूनख्वारे मद
जे ईरान सिपाह जग ब तो कि कद
चिरा दस्त य मन नमूदी हमे
चू गुग आमदी दर मियान रमे

(ए खून के प्यासे तुर्क! तुमसे किसने कहा कि ईरान की फौज पर हाथ उठा? यह मेरी और तेरी जग है न कि सिपाहियों की जो तू भेडो के झुण्ड मे किसी भेडिये की तरह टूट पडा है।)

सोहराब ने रुस्तम से कहा कि पहले आप तूरानी फौज की तरफ बढे थे वरना मुझे इन बेगुनाहो के खून बहाने की क्या जरूरत थी। रुस्तम ने जवाब दिया कि अब शाम ढल रही है। मगर कल सुबह, सूरज के उगते ही इस बात का फसला हो जायेगा कि वास्तव मे तीरअन्दाज और तलवार चलाने वाला दिलेर पहलवान कौन है।

□□

रात हो गई थी। सोहराब अपने खेमे मे वापस पहुचा और हूमान को बुलाकर सिपाहियो की खैरियत पूछी कि जब वह हाथी जैसा पहलवान तुम लोगो की तरफ आया तो तुम पर क्या गुजरी? मैंने उसके जैसा दिलेर

पहलवान अभी तक नही देखा है। बूढा है मगर युद्ध करने से अभी उसका दिल भरा नही है। इस उम्र मे भी उसके बदन म हाथी जसा बल और हाथो मे शेर के पजे जैसी फुर्ती मौजूद है।

हुमान ने सोहराब से कहा कि जिस जगह आपने कहा था, वही पर फौज खडी थी। एकाएक वह मस्त हाथी किसी पड के तन की तरह हमारी तरफ टूटा और एक साथ ढेरो सिपाही मार गिराए। फिर पलक झपकत ही वह पलटा और ईरानी फौज की तरफ दौडा।

सोहराब ने कहा कि अफसोस की कोई बात नही है। कल का दिन आने दो। भाले और तलवार के वार से बादलो को भी खून क आसू रुला दूगा और एक भी दुश्मन कल बचने नही पाएगा। कल बहादुरी का दिन है। अभी तो जाम मे शराब डालकर माज व आवाज का मजा लेत हैं।

□□

उधर रुस्तम जब फौज के पडाव की ओर लौटा तो उसके खेम मे गिव पहलवान आया। रुस्तम ने उससे पूछा कि सोहराब न सिपाहियो के साथ क्या किया? गिव ने उसको जवाब देते हुए कहा कि इतना बलवान पहलवान अभी तक नजरो स नही गुजरा है। तजी से हमला करता हुआ सिपाहियो के बीच से गुजरता हुआ वह तूस पहलवान की तरफ बढा। तूम गदा उठाए घोडे पर बैठा था। सोहराब ने अपनी उसी झुकी हुई गदा स तूस पर इस जोर से वार किया कि उसकी गन्ना का सर दूर जा गिरा। हम समझ गए कि इसके मुकाबले की ताकत हममे नही है। हमन पहलवानी क तौर-तरीको को हाथ से जाने नही दिया सो सिपाहियो ने उसका पीछा नही किया।

यह खौफनाक बयान सुनकर रुस्तम चिन्तित हो उठा। फिर शाह काऊस के खेमे की तरफ बढा। शाह काऊस न रुस्तम का स्वागत बडी गम-जोशी से किया और उसको अपने पास बिठाकर रणक्षेत्र की खबरें जाननी चाही। रुस्तम ने शाह को जवाब दिया कि मैंने अभी तक इतनी दिलेरी और मर्दानगी किसी भी लडके म नही देखी। शेर की भुजाए और घडियाल का दिल यह लडका रखता है। सच पूछा जाए तो आज हम दोनो ने भाले, तीर और तलवार चलाना एक दूसरे को सिखाया है। उसको मैंने जब कमर से पकडकर गिराना चाहा और वह मजबूती से खडा रहा तो लगा कि पवत

हवा मे हिल सकता है, मगर इस सवार को गिराना कठिन है। शाम हो चुकी थी। सो लडाई बन्द हुई और मैं आपके हुजूर म हाजिर हुआ।

जब रुस्तम उसी तरह चिन्तित अपन खेमे मे लौटा तो वहा अपने भाई जवारे को हैरान-परेशान बैठा देखा। उसकी आखो से भय और चिन्ता टपक रही थी। रुस्तम ने भोजन लाने का आदेश दिया और भाई के साथ अकेले म बैठकर, रणक्षेत्र मे जो कुछ आज गुजरा था, कह सुनाया। फिर कहन लगा कि जब मैं सोहराब से लडने जाऊ तो तुम पताका ऊपर रखना और फौज को युद्ध के लिए तैयार और खुद को होशियार रखना। अगर मैं जीत गया तो रण-क्षेत्र मे जाने की जल्दी नही होगी और मैं तुम्हार पास लौट आऊगा। अगर इसका उल्टा हुआ तो तुम्हे दु खी होन की जरूरत नही है। तुम सब जाबुलिस्तान पिता जाल के पास लौट जाना। तुम मा को दिलासा देना और खुश रखना। कहना कि मेरे गम को इतना दिल पर न लगाए और अपने को सभाले क्योकि यह दुनिया किसी की नही है। आखिर आज नही तो कल, मुझे यह ससार छोडना ही पडता। इस रीत को मैं बदल नही सकता। मैंने युद्ध किए, दैत्या व शत्रुओ को मार गिराया। फौजो को हराया। कोई भी ऐसा शहर और देश नही बचा है, जहा मैं युद्ध के लिए नही पहुचा, मगर इस सारी दिलेरी के बाद मौत के आग सिर झुकाना पडेगा। जमशेद शाह को याद करो। क्या वभव था! आज शाह जमशेद नही हैं। पिता जालजर से कहना कि शाह काऊस से नाराज होने से कोई लाभ नही होगा। वह यदि लडने को कह तो उनके आदेश का पालन करना क्योकि सबको एक न-एक दिन तो मौत क मुह मे जाना ही है।

□□

उधर सोहराब सारी रात दोस्तो क सग महफिल जमाए रहा, लेकिन उसका दिल व दिमाग स्थिर नही था। उसने हुमान से कहा कि वह पहलवान जो मुझसे कल जोर-आजमाई कर रहा था, वह बाहुबल मे किसी तरह मुझसे कम नही है। पता नही क्यो, जब मैं उसकी तरफ आख भरकर देखता हू तो मेरा दिल नम पडन लगता है और चेहरा शर्म से लाल होने लगता है। मा ने बाबा की जो निशानी मुझे बताई थी, वह सब मैं उसम देख रहा हू। मुझे शक है कि वही रुस्तम है। मगर अपना नाम मुझसे छुपा रहा है। ऐसा

न हो कि मैं बाबा से युद्ध करूं और अपने भाग्य को अंधेरे में डुबो दूं।"

हुमान ने मक्कारी से कहा—"मैंने रुस्तम को कई बार रण क्षेत्र मे देखा है। यह पहलवान रुस्तम नही है।"

□□

सूरज ने जैसे ही अपनी सुनहरी किरणें बिखेरी, रात ने अपने काले डैने समेट लिए। सोहराब नीद से जागा। जिरह-बख्तर पहन, तीर व कमान, भाला, गदा लेकर वह घोडे पर बैठा और युद्ध के मैदान की तरफ चल पडा।

तहमतन यानी रुस्तम ने बबरेबयान पहना, हथियार उठाए, रक्श घोडे पर बैठा और रण-क्षेत्र की तरफ चल पडा।

जैसे ही सोहराब की नजर आते हुए रुस्तम पर पडी, उसके दिल मे प्यार उमडने लगा और हंसकर पूछने लगा—"दिलावर! आपकी रात कैसे गुजरी और अब दिन कैसे गुजारेंगे? इस युद्ध का इरादा क्यो नही छोड देते? कहिए तो मैं आपके कन्धे से तीर व कमान उतार लू और बदले की भावना को हम दोनो दिलो से निकाल फेंकें और दोस्त बनकर युद्ध का इरादा छोड दें। एक साथ बैठें, और जाम भरें। मेरे दिल मे जाने क्यो आपके लिए बहुत ज्यादा प्यार उमड रहा है। आप जरूर ऊंची नस्ल और दिलेर पहलवान परिवार से हैं। आप मुझसे अपने को न छुपाए और अपना सही नाम बताए। मुझे शक है कि आप जालजर के बेटे रुस्तम हैं। मैंने आपको बहुत ढूंढा। सबसे पूछा, मगर किसी ने आपका नाम नही बताया। आप तो मुझे अपना नाम बता दें।"

रुस्तम ने सोहराब की बात सुनकर कहा—"अरे जवान मर्द! कल तक सारी बातें लडाई और मरने मारने की कर रहे थे। हथियार डालने और शराब पीने का कोई जिक्र नही था। आज ये सब बेकार की बातें और युद्ध रोकने की कोशिशें मत करो। मैं तुम्हारे जाल और फरेब में फंसने वाला नही हूं। तुम जवान हो, तो मैं बच्चा नही हूं। जिन्दगी के उतार चढाव बहुत देखे हैं। हजारो से मिला हूं। अब देखना है कि खुदा ने हमारी तकदीर मे लिखा क्या है?"

सोहराब ने जवाब दिया—"बहादुर बुजुर्ग! मेरी सबसे बडी इच्छा है कि मैं आपको मौत के मुंह में जाने से बचा लूं और आप इस दुनिया से जाने

के लिए अपने बिस्तर पर ही अपनी आखें बन्द करें। अगर आपको बहुत जल्दी है और मौत का सामना करना ही चाहते हो तो फिर खुदा की मर्जी पर छोडने के अलावा हमारे पास कोई दूसरा रास्ता नही है। घोडे से उतरिए। लडाई शुरू करते हैं।"

दोनों पहलवान अपने-अपने घोडो से नीचे उतर आए और उनको बाधा। एक-दूसरे की कमर म हाथ डाला और इस तरह गुथ गए जसे दो अजदहे एक-दूसरे से लिपट गए हो। सुबह से शाम तक दोनो पहलवान इस कोशिश मे लगे रहे कि एक दूसरे को पछाड दें। चेहरे और बदन से खून बह रहा था, मगर दोनो युद्ध किए जा रहे थे।

अन्त मे सोहराब ने शेर की तरह दहाड मारी और रुस्तम को कमर से पकडकर यकायक दोनो हाथो से सर के ऊपर उठाया और पूरी ताकत से जमीन पर दे मारा और उचककर उसके सीने पर चढ बैठा और म्यान से खजर निकाला ताकि रुस्तम का सिर धड से अलग कर दे। यह देखकर रुस्तम अपनी जान की खैर मनाने लगा। कुछ सोचकर बडी नर्मी से सोहराब से कहा—"जवानमर्द! हमारा रिवाज यह है कि जब दो पहलवान कुश्ती लडते हैं तो एक दूसरे को पहली बार जमीन पर पटकने पर खजर नही उठाते। अगर दूसरी बार भी पहला दूसरे को जमीन पर पटक देता है ता फिर रिवाज के अनुसार उसका सिर धड से अलग कर सकता है।"

□□

हुमान सोहराब की प्रतीक्षा मे था। जब सोहराब के लौटने म देर हुई तो वह घोडे पर बैठकर उसे देखने निकला। कुछ देर बाद हुमान ने सोहराब को शिकारगाह के पास देखा। करीब पहुचकर उससे कुश्ती का हाल पूछा। सोहराब ने सारा माजरा कह सुनाया। सुनकर हुमान दुख मे चीख उठा कि क्या तुम्हारा दिल जिन्दगी मे भर चुका है, जो हाथ मे आए हुए शिकार को छोड आए हो? आज तक किसी दिलेर न हाथ मे आए दुश्मन को आजाद नही किया है। पता नही, वक्त अब क्या गुल खिलाता है।

सोहराब ने कहा—"दुखी मन हो। यह पहलवान मेरे पजे से आजाद नही हो सकता। कल फिर वह मैदान म आ रहा है। फिर कुश्ती होगी और इस बार मैं उसका सिर धड से अलग कर दूगा।"

□□

जब रुस्तम सोहराब के चंगुल से छूटा तो सारी नामक चश्मे के किनारे पहुचा। हाथ-मुह धोया, पानी पिया और सिजदे मे गिर गया।

कहते हैं कि शुरू मे रुस्तम के बदन म इतनी ताकत थी कि यदि वह चलते हुए जरा-सा ज्यादा जोर पजो पर डालता, तो वहा की जमीन नीचे धस जाती थी। अपने इस बल से स्वय रुस्तम भी बहुत परेशान था। इसलिए एक बार रुस्तम ने रो रोकर खुदा से दुआ मागी थी कि वह रुस्तम के बदन का बल कम कर दे ताकि वह आराम से कदम रखता हुआ जमीन पर चल सके। खुदा ने उसकी दुआ सुन ली और उसके बदन का बल घट गया।

आज रुस्तम ने खुदा के सामने खडे होकर यह दुआ मागी कि उसके बदन का घटा बल उसको वापस मिल जाए। इस बार भी खुदा ने उसकी विनती सुन ली और रुस्तम के बदन म नयी ताकत व स्फूर्ति दौड गई। उस बल के सग रुस्तम चिघाडता हुआ लडाई के मदान की तरफ बढा।

उधर से सोहराब कमान और कमन्द हाथ मे उठाए शेर की तरह गुर्राता हुआ रुस्तम की तरफ बढा। आखिर पवतकाय दो पहलवान एक-दूसरे के सामने पहुचकर ठहर गए। सोहराब रुस्तम के नय जोश व खरोश-भरे इस व्यवहार से चकित होकर बोला कि ओ शेर के पजे मे छूट जाने वाले! क्या तुम्हारा दिल जीने म भर चुका है जो दाबारा रण-क्षेत्र मे आ गए हो! और आज यह दिलेरी जो तुम दिखा रहे हो, पहले अपना नाम-पता तो बताओ।

रुस्तम ने कोई जवाब नही दिया। दोना पहलवान घोडे से उतरे और कुश्ती लडने म व्यस्त हो गए। उनके ऊपर उनकी मौत किसी परिन्द की तरह मडरा रही थी। सोहराब ने रुस्तम की कमर पकडी और चाहा उसे पछाडे मगर उसकी कमर किसी पवत की तरह जड थी। इस बार आसमान ने दूसरा रग दिखाया। रुस्तम न किसी अजदहे की तरह सोहराब को ऊपर उठाया और जमीन पर दे पटका! रुस्तम को पता था कि सोहराब जमीन पर पडा नही रह पायेगा। इसलिए उसने कमर से फौरन खजर निकाला और सोहराब का कलेजा चीरकर रख दिया। सोहराब दद से तडप उठा और ठण्डी सास भरी। नेकी और बुराई के बारे मे उसने सोचा, फिर रुस्तम

की तरफ देखा और कहा कि ओ दिलेर। आखिर तुमने मुझे खून मे नहला ही दिया। इसमें तेरा कोई कसूर नहीं, बल्कि होना यही था। अभी तो मेरी उम्र के लड़के कहेंगे कि हमारा साथी पहलवान इतनी जल्दी मर गया फिर सोहराब एक आह खींचकर बोला—

निशान दाद मादर मरा अज पिदर
जो महर अन्दर आमद सान्म बेसर
हमी जुस्तमश ता बेबीनमश रुइ
चनीन जान दादम वे इन आरजुइ

(मा ने मेरे बाबा की निशानी (तावीज) के साथ मुझे भेजा था कि मैं जब उन्हे ढूंढ लूंगा तो वह मुझे पहचान लेंगे मगर अफसोस यही है कि मैं उन्हे तलाश करता रहा और आज उन्हें देखे बिना मौत को गले लगा रहा हूं।)

कनुन गर तो दर आब माही शवी
व या चुन शब अन्दर स्याही शवी
व गर चुन सितारे शवी बर स्पहर
बे बुर्री जे रुइ जमीन पाक मोहर

(मगर तुम उससे बचकर नहीं जा पाओगे, चाहे मछली बनकर पानी मे जा छुपो या रात की कालिमा मे छुपो या सितारे बनकर आसमान पर टंग जाओ। वह तुमको पकड लेंगे।)

वे ख्वाहद हम अज तो पिदर कीन ए-मन
जो बीन्द खश्तस्त बालीन ए-मन
आज आन नामदारान गदन कुशान
कसी हम बुद निजदे रुस्तम निशान
कि सोहराब कुश्तेस्त व अफकन्दे ख्वार
हमी ख्वास्त करदन तोरा ख्वास्तार

(जब मेरी लाश देखेंगे तब मेरे बाबा तुमसे बदला लेंगे। इन बड़े पहलवानो और नामवरो मे से कोई रुस्तम को यह निशानी दिखाए और उन्हें खबर दे कि सोहराब तुम्हें ढूंढता रहा और अब वह इस तरह खाक मे पडा दम तोड रहा है।)

ये बातें सोहराब के मुह से सुनकर रुस्तम सन रह गया। आखो के सामने तारे टूटने लगे और चारो तरफ अधेरा छा गया। एकाएक वह बेहोश हो गया। जब रुस्तम को होश आया तो उसने देखा कि सोहराब खून मे नहाया उसके सामने जमीन पर पडा है।

रुस्तम न सोहराब का सर अपनी जाघ पर प्यार से रखा और एकाएक पीडा से चीत्कार कर उठा कि रुस्तम की नस्ल इस जमीन से अब मिट जायेगी। फिर रुस्तम ने सोहराब से पूछा कि बताओ अपने पिता की कौन-सी निशानी तुम्हारे पास है? मैं रुस्तम हू। खुदा करे मेरे ये हाथ कट जाए जिनसे मैंने अपने बेटे का कलेजा चीरा है। इतना कहकर रुस्तम फफककर रो पडा और गम म अपना चेहरा तथा बाल नोच डाले।

सोहराब ने रुस्तम की जब यह हालत देखी तो पूछा कि ए पहलवान! अगर रुस्तम तुम्ही हो, तो फिर मुझसे यह बात छुपाई क्यो? मैंन तो हर तरह से तुम्हारा नाम और पता जानना चाहा था। मगर तुम्हारे दिल म मेरे लिए जर्रा बराबर भी प्यार नही उमडा। मेरा जोशन खोलो और देखो। जब मैं फौज के साथ ईरान की तरफ चलने लगा था, उस वक्त मेरी मा डबडबाई आखो से मेरे पास आइ थी और यह ताबीज मरे बाजू पर बाधकर कहा था कि यह तुम्हार पिता रुस्तम की यादगार है। रास्ते म काम,आयेगी। मगर अफ्सोस जब यह काम आई तो मेरे जाने का समय आ गया है।

रुस्तम ने जल्दी से सोहराब के लिबास का बन्द खोला और अपना तावीज उसने सोहराब के बाजू पर बधा देखा। यह देखकर रुस्तम गम से पागल हो उठा। उत्तेजना से कपडे फाडने और रोने चिल्लाने लगा कि ओ दिलावर बेटे! ए मेरे जवान बेटे! अभी तो तुम्हार गालो क गुलाब ताजा थे कि तुम मुरझा गए! अभी तो तुम्हारी उम्र का सूरज पूर शबाब पर भी नही चढा था कि तुम अधेरे मे डूब गए! अपने पिता क हाथो कत्ल हुए और बहार आन म पहले ही पतझड बन गए। सोहराब रुस्तम का यह दुख देखकर ठण्डी सास भरकर कहने लगा कि खुदा की मर्जी यही थी। अब इस तरह मे रोने चिल्लाने और शोक मनान स क्या हासिल होगा? मेरी किस्मत म यही लिखा था कि पिता क हाथो मारा

जाऊ। वही हुआ। जब आप यू ग़म न मनाए।

□□

सूरज डूबने को आया और जब रुस्तम फौज के पडाव की ओर नही लौटा तो शाह काऊस ने बीस फुर्तीले सवारो को रुस्तम की खबर लेने के लिए रण क्षेत्र की तरफ भेजा। उन्होंने वहा पहुचकर देखा कि दोनो घोडे बधे हुए है और जीन पर रुस्तम नही है। वे समझे रुस्तम युद्ध में काम आ गया। वे फौरन उल्टे पाव यह सदेश देने शाह काऊस की तरफ दौडे।

फौज मे इस खबर से सनसनी फैल गई। सारे बहादुर एव पहलवान शाह काऊस के पास पहुचे। शाह काऊस ने आदेश दिया कि एक सवार फिर जाकर पता चलाए कि रुस्तम का क्या हुआ और सोहराब का अब क्या इरादा है। यदि रुस्तम को कैद कर लिया गया है तो ये नौ पहलवान उसको स्वतत्र कराने की कोशिश करें। उस समय हम तूरान की फौज पर हमला करेंगे और इस समस्या का समाधान निकालेंगे।

दूर से सोहराब ने जब घोडो के दौडने की आवाज सुनी तो रुस्तम से कहने लगा कि मेरा समय तो खत्म हुआ। तूरानी फौज सकट मे पड गई है। आप कोशिश करें कि ईरानी फौज तूरानी सिपाहियो को परेशान न करें। उनकी कोई गलती नही है। वे मेरी इच्छा का आदर करते हुए मेरे साथ यहा आए थे। मैंने उन्हें बडी आशाए दिलाई थीं। उनसे कहा था कि जब मैं और मेरे बाबा रुस्तम एक हो जाएगे तो इस दुनिया को अपने कदमो पर झुका लेगे। अफसोस, मैं अपने बाबा के हाथो मौत के सिवा कुछ न पा सका। जब सफेद किले पर मैंने हमला किया था तो ईरानी सिपाहसालार को कैदी बनाया था। मैंने उससे भी आपका पता बहुत पूछा। उसकी सारी बातें बेतुकी थीं। उसने मुझसे सब भेद छुपाया और आज उसी के कारण यह अधेरा देखना पडा। आप उसका ध्यान रखें कि उसको कोई हानि न पहुचे। मा ने आपकी पहचान ज़बानी बताई थी, जब मैं आपको देखता था तो सारी बातें मैं आराम पाता था, मगर यकीन नही होता था। खुदा को यही मजूर था। मैं बिजली की तरह आया और हवा की तरह जा रहा हू। मगर आपको दुनिया मे दोबारा जरूर पाऊगा। इतना कहकर सोहराब की आवाज टूटने लगी

और आखें आसुओ स भर गई।

ये बातें सुनकर रुस्तम का कलेजा मुह को आने लगा और सास लेन म बहुत कठिनाई महसूस होने लगी। टूट दिल और भीगी आखो के साथ रुस्तम रग्श पर बैठा और फौज के पडाव की तरफ घोडा दौडाया। ईरानी सिपाहियो न जब दूर स रुस्तम को आते देखा तो खुदा को धन्यवाद दिया। मगर जब रुस्तम करीब पहुचा और उसका फटा लिबास, चेहरे पर खराश और गम से उसे बेहाल देखा तो सबने इसका कारण पूछा। रुस्तम न बताया कि उसने अपन ही हाथो अपने बेटे को कत्ल कर दिया है। यह सुनकर सारे सिपाही गम से चीख उठे।

रुस्तम न गम से निढाल होकर कहा कि न तो मुझे दिल की खबर है, न तन का होश है। लेकिन अब तुम लोग तूरानी फौज पर आक्रमण नही करोगे। आज मुझसे जो काम हुआ है, वही गुनाह के लिए काफी है। इसी बीच रुस्तम का भाई जवारेह आ गया। भाई का फटे हाल देखकर ताज्जुब मे पड गया। रुस्तम ने उसस कहा कि हुमान को खबर कर दे कि वह अपनी तलवार म्यान मे रखे। सोहराब का यह हाल हुजीर के कारण हुआ है। उसको अपने सामने लाने का आदेश रुस्तम ने दिया।

हुजीर की बात सुनकर रुस्तम दुखी हुआ और क्रोध म आकर उसकी हत्या करने के लिए आगे बढा। मगर बीच म ही उसे रोककर पहलवानो न उसकी जान बख्श देने की विनती की। तग आकर रुस्तम अपना ही खजर उठाकर खुद अपना सिर तन से जुदा करने वाला था कि गूदरज ने उसे समझाया कि इससे क्या फायदा? अब तो जो हो चुका, वह वापस नही हो सकता है। इसलिए सोहराब की मौत उतनी महत्वपूर्ण नही जितना किसी पहलवान का नाम अमर हो जाना महत्वपूर्ण है। रुस्तम के मन मस्तिष्क की उत्तेजना शात होने लगी। वह गूदरज स बोला कि तुम शाह काऊस के पास जाओ और मेरा पैगाम उनसे कहना कि अब रुस्तम ज्यादा दिन जिन्दा नही रहेगा। अपने ही खजर से अपने जिगर के टुकडे का सीना चीर दिया है। शाह से मेरी विनती है कि उनके खजाने म जो 'नौशादर' है, वह मेरे जख्मी बेटे के लिए मुझे एक जाम भरकर दे ताकि मैं अपने बेटे को बचा सकू। मैं अभी जिन्दा हू। उनकी और उनके राज्य की मैं रक्षा करूगा।

गूदरज यह पैगाम लेकर शाह काऊस के खेमे मे पहुचा और सारी बात बताकर रुस्तम द्वारा कही दवा मागी । शाह काऊस न सारी बात ध्यान से सुनी और मन-ही मन सोचा कि रुस्तम जैसा पहलवान का बेटा सोहराब है जो पहले ही इस बात का दावा कर चुका है कि वह मुझे मिटा देगा और ईरान को जीत लेगा। ऐसे समय मे यह दवा रुस्तम को भेजना ठीक नही है। कल कही य दोनो बाप-बेटे मिल गए तो मेरा क्या होगा ? उसने दवा देने से इकार कर दिया और अपना भय भी बयान कर दिया ।

यह जवाब सुनकर गूदरज हवा की तरह रुस्तम के पास पहुचा और शाह काऊस के इकार की बात रुस्तम को बताकर कहा कि बेहतर है कि रुस्तम,आखिरी वक्त बेटे के सिरहाने रहे ताकि इस अधेरे मे डूबते हुए दिल व दिमाग को कुछ रोशनी मिल सके ।

अभी रुस्तम बीच रास्ते म ही था कि कोई तेजी से उसकी तरफ सूचना देने बढा कि—

कि सोहराब शुद जे इन जहाने फराख
हमी अज़ तो ताबूत ख्वाहद न काख
पेदर जुस्त व बर जद यकी सर्द बाद
बे नालीद व मुजगान बे हम बर निहाद

(सोहराब इस दुनिया को छोड चुका है। अब उसे न महल चाहिए न तख्त न ताबूत । यह खबर सुनकर बाप ने एक लम्बी आह खीची और रोते हुए पलकें एक दूसरे पर रखी ।)

रुस्तम रख्श से नीचे उतरा और सिर पर टोपी की जगह जमीन की खाक उठाकर डालने लगा और बैन करने लगा कि य दोनो हाथ काटकर रख दू जिन्होने खजर उठाया था । अब किस तरह और किस मुह से तहमीना को यह खबर दूगा कि मैंने उसके बेटे—अपने जिगर के टुकडे—को अपने ही हाथो से मार डाला । मुझ पर सब लानत भेजेंगे कि मैंने अपने खानदान नाम पहलवान के नाम पर धब्बा लगाया है । इस खबर म पिता जालजर व मा रूदाबे का क्या हाल होगा ।

रुस्तम सोचने लगा कि किस तरह से जोश व खरोश से भरा यह

जवान कल इस मैदान मे विजय पताका लहराने आया था। आज व ो से उसका तावूत उठ रहा है।

जब सोहराब की मौत की खबर काऊम के पास पहुची तो वह रुस्तम को दिलासा देने पहुचा। रुस्तम का इतना बुरा हाल देखकर शाह काऊम को बहुत दु ख हुआ। उसने सोहराब को याद करते हुए उसके बल और दिलेर व्यक्तित्व की प्रशसा की और कहा कि अब रुस्तम को इस दु ख म अपने को मजबूती से सभालना चाहिए और इस हकीकत को समझ लेना चाहिए कि जो इस दुनिया म आया है, वह एक दिन वापस जरूर जायेगा चाहे देर मे चाहे जल्दी, इसलिए रुस्तम कब तक बेटे के शोक म डूबा रहेगा।

रुस्तम ने शाह काऊम से कहा कि वह बिल्कुल टूट चुका है। उसमे कुछ भी करने की शक्ति नहीं रह गई है। यदि शाह काऊस उचित समझें तो जवारेह को हुमान के पास भेजें ताकि उसकी सुरक्षा म तूरानी फौज सुरक्षित समनगान लौट जाए।

शाह काउम ने रुस्तम का अनुरोध सुना और कहा कि बेशक मैं उस तुर्क के व्यवहार से खुश नही था। मगर यह कोई बदला लेने का समय नही है। जब रुस्तम इस तरह दु ख मे डूबा है तो मैं भी उसके दु'ख मे बराबर शरीक हू। इतना कहकर शाह काऊस अपनी फौज के साथ ईरान लौट गया।

□□

शाह काऊस के ईरान की तरफ कूच कर जाने के बाद रुस्तम वहा तन्हा रहकर जवारेह की वापसी का इन्तजार कर रहा था ताकि वह तूरानी फौज की सुरक्षित वापसी का समाचार जान सके।

जवारेह के आने के बाद रुस्तम ने जाबुलिस्तान की तरफ जाने की तैयारी कर ली। उसके आने की खबर जब जालजर के पास पहुची तो सारा सीस्तान शोक मे रोता बिलखता वहा पहुच गया।

सिपह पीश ताबूत मी रानदन्द
बुजुर्गान वेसर खाक बेफिशानदन्द

चू तावूत रा दीद दस्तान साम
फरुद आमद अज अस्पे जरींन लगाम
तहमतन पियादेह हमी रफ्त पीश
दरीदेह हमे जामे दिल करदे रीश

(सिपाही तावूत क आगे आगे चल रहे थ और तावूत क पीछे रोन हुए बुजुर्ग। जैसे ही जालजर की नजर दूर स तावूत पर पडी वह अपन घोडे से उतर गया। रुस्तम पैदल चल रहा था। उसका दिल टुकडे-टुकडे था, कपडे फटे थे और चेहरा ग़म से बेहाल था।)

सारे पहलवानों ने तावूत को दखकर कमर खम की और सम्मान मे सिर झुकाया। तावूत को ऊट की पीठ स नीचे उतारकर ज़मीन पर रखा गया तो रुस्तम रोता हुआ जालजर को सम्बोधित करता हुआ आगे बढा और बेटे के तावूत पर सिर रखकर बोला—"इस तग तावूत मे मेरा बाघ सोया पडा है।" रुस्तम की बात सुनकर जालज़र की आखें खून के आसू रोईं। रुस्तम ने दु ख मे प्रलाप करते हुए कहा—"तुम चले गए और मैं दुखी और अपमानित यहा रह गया।" जालजर ने पोते की उम्र देखकर आश्चर्य प्रकट करते हुए दु खी स्वर मे कहा—"इस नन्ही सी उम्र म उसने इतनी दिलेरी का काम किया और गदा हाथ मे उठाया। वह सचमुच अजूबा था। ऐसे बच्चे रोज कहा पैदा होते हैं।" इतना कहकर जालज़र ने अपनी आखें बन्द कर ली जिनमे से लगातार आसू झर रहे थे।

रुदावे ने जब सोहराब की लाश देखी तो गम से उसका कलेजा फटने लगा। बेटे का गम और पोते की मौत की खबर सुनकर वह कहने लगी कि जब इसके खेलने खाने के दिन थे तो वह चल बसा। जाबुलिस्तान के लोगो के चेहरे गम मे स्याह और आखें दुख स लाल हो रही थीं।

जिसने भी यह खबर सुनी कि बाप के हाथो बेटा मारा गया, उसकी आखे आसुओ से भर आइ। रुस्तम ने अपन हाथो स बेटे का कफन सजाया और तावूत बनाया। सोहराब को दफनाए हुए कइ दिन गुजर गए थे, मगर रुस्तम का दिल खुशी को फिर हासिल न कर सका और स्वय मे बार-बार यही कहता कि जमाने की मार से कब किसका दिल जख्मी हो जाए, यह कौन जानता है।

हुमान जाबुलिस्तान स तूरान की तरफ लौट गया और शाह अफरासियाब से सारी घटना बताई। सुनकर अफरासियाब चकित रह गया। उसके मन की इच्छा सोहराब की मौत से पूरी हुई। यह खबर जब ईरान पहुची तो रुस्तम के गम म सब शरीक हुए और सोहराब के लिए उनकी आखें भर आइ।

□□

सोहराब के मरने की खबर तूरान से जब शहर-ए समनगान पहुची तो सोहराब के नाना शाह समनगान दु ख स दीवाने होकर अपने कपडे फाडने लग। यही हाल तहमीना का हुआ। उसने अपने चेहरे का दु ख म नोच लिया। मुह को दोनों हाथो से पीटा और घुघराली जुल्फो को उगलियो म फसाकर खीचा। उसके चेहरे पर पडी खरोंचों से खून छलक आया और सफेद बदन पर जगह जगह जख्म के लाल निशान उभर आये। बैन करती हुई तहमीना कहने लगी

हमी गुफ्त के एइ जाने मादर कनुन
कुजाइ सर रिश्ते बे खाक व खून
चू चश्मम बे राह बूद गुफ्तम मगर
जे सोहराब व रुस्तम बयाबम खबर

(तुम कहा खून व खाक म खो गए हो। मैं तो तुम्हारी राह म आखें बिछाए बैठी थी कि मुझे बेटे सोहराब और बाप रुस्तम की खबर एक साथ मिलेगी।)

"मुझे गुमान हुआ कि तुम लौट आए हो। आह, ऐसे कोई अपने बाबा को ढूढने और पाने जाता है! तुम्हे जाने की इतनी जल्दी क्यो थी! मुझे क्या पता था बेटा, कि रुस्तम शिकारगाह म तुम्हारा ही जिगर चीरकर रख देगा।

बे परवरदेह बूदम तनश रा बे नाज़
बे रख्शन्दह रुज व शबाने दराज़
कनून आन बेखून अन्दरुन गुरके गश्त
कफन बर तने पाक उ खिरके गश्त

(मैंने किस दुलार और प्यार से तुमे पाला था! रात और दिन की

मेहनत से तेरा बदन तन्दुरुस्त बनाया था। आज वही तन खून में ...बा कब्र मे चला गया और कफन उसका लिबास बन गया।)

तहमीना अपना सीना पीटती हुई बोली—"इस दुःख को किससे कहूं। कौन है मेरी सुनने वाला। तुम्हारी जगह मैं किसको पुकारूं बोलो, अब कौन है मेरा? अफसोस! मेरा तन मन, आंखों की रोशनी बाग और महल से निकलकर खाक मे मिल गया है। मैंने तो तुम्हें बाबा की पहचान बताई थी। तावीज भी दी थी। न तुम उसे पहचान सके, न बाप की निशानी उसे दिखा सके। तुम्हारी मां तुम्हारे बिना इस कद में तड़प रही है और तुम्हारा चांदी जैसा सीना चीर दिया गया।"

बैन कर-कर के तहमीना कभी सीना कूटती, कभी मुंह पीटती, अपने बाल नोचती और इस तरह से रोती कि सुनने वाला ताव न ला पाता। फिर रोते रोते बेहोश हो जाती। जब होश में आती तो सोहराब की याद में तड़पने लगती। कभी सोहराब के घोड़े से लिपट जाती, कभी उसको थपकती, उसका मुंह चूमती, फिर सोहराब के तीर व कमान, ढाल और तलवार पर अपना सिर पटकने लगती।

> ब रूज व शब मूयेह कद व गरीस्त
> बस अज मर्गे सोहराब साली बे जीस्त
> सर अंजाम हम दर गमे उ बेमुर्द
> रवानश बेशद सुए सोहराब गुर्द

(तहमीना रात दिन सोहराब की याद मे रोते हुए कई साल जिन्दा रही। फिर एक दिन उसी गम को साथ लेकर सोहराब से आ मिली।)

दास्तान-ए-सियावुश व सुदावे

एक दिन, भोर क समय, गिव, गूदरज और तूस अय साथिया क सग बाज़ और चीते लेकर प्रसन्नचित्त शिकार खेलने गए। खूब जमकर शिकार किया। शिकार करन के जोश मे व ईरान सीमा से निकलकर तूरान के जगल म चले गय। शिकार की खोज म निकले तूस और गिव को एक सुदर लडकी नज़र आई। उसके सौदय को दखकर ये दोनो सकते म आ गए। उसके समीप पहुचकर जब उसस पूछताछ की तो उस लडकी न बताया—"मेरे पिता शराब के नशे मे धुत कल रात जब घर आए तो क्रोधित हो उन्हान मुझे मारने क लिए जहर स बुझी तलवार उठाई। मेरे सामने इसके अतिरिक्त कोई और चारा न था कि मैं भागकर इस जगल मे आ छिपू। रास्ते मे घोडा मुझे गिराकर भाग गया। अब मैं तन्हा रह गई। जो कुछ हीरे जवाहरात लेकर मैं चली थी, वे रास्त मे लुटेरो ने लूट लिए। उनके खंजर से भयभीत होकर मैं इधर भाग आई हू।"

जब उन्हान उसक कुटुम्ब के बारे म पूछा तो उसन बताया कि वह गरस्यूज के कुटुम्ब स है जो अफरासियाब का भाई है।

तूस और गिव म लडकी को लेकर झगडा आरम्भ हो गया कि उस पर किसका हक है। तूस कहता कि मैंने लडकी को पहले दखा था इसलिए वह मेरी है। गिव कहता कि उसन पहले लडकी को देखा था, इसलिए लडकी पर उसका हक है। यह झगडा और तकरार इतनी बढी कि आखिर यह तय हो गया कि इस लडकी का सर धड से अलग कर देना ही अच्छा होगा।

ऐसी स्थिति दखकर एकाएक एक पहलवान इनके बीच म बोला—'अच्छा यही है कि इसे अपने शाह काऊस क पास ल चलत है। वह जो कहेगे वह मान लेंगे।" यह बात सबको पसन्द आई और उन्होने वसा ही किया।

शाह काऊस की नजर जैसे ही उस लडकी पर पडी, वह उसके रूप

को देख उस पर रीझ गया। जब उसे पता चला कि वह अच्छे शाही परिवार से सम्बन्ध रखती है, तो उसे लगा कि कितना अच्छा होता यदि वह उसकी मलिका बन जाती। शाह काउस ने उन दोनों पहलवानों के बीच होते झगड़े का फैसला बड़ी चतुरता से किया। उन्हें बहला फुसलाकर धन दौलत और दस शानदार घोड़े देकर उनका मुंह बन्द कर दिया और लड़की को अपने हरम में भेज दिया।

नौ मास बाद उस लड़की ने एक चन्द्रमा जैसे पुत्र को जन्म दिया। जैसे ही यह समाचार काउस के पास पहुचा, वह खुशी से दीवाना हो गया और उसका नाम सियावुश रखा। फिर ज्योतिषियो और पंडितो को बुलाया ताकि लड़के की जन्मपत्री बन सके और उसकी भाग्य रेखा परखी जा सके। ज्योतिषियो ने लड़के का भविष्य अन्धकारमय और उसे पूर्ण रूप से भाग्य हीन पाया। भाग्य रेखाओं और ग्रह स्थिति देखकर ज्योतिषी सन्नाटे में आ गये।

कुछ समय बाद शाह काउस ने रुस्तम को बुलवाया और अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहा कि "तुम सियावुश को अपनी शरण में ले लो। इसे अपने साथ ज़ाबुलिस्तान ले जाओ और सारे 'हुनर' से इसे सुसज्जित कर दो।"

रुस्तम ने सियावुश को शिकार और घुड़सवारी, तलवार और गदा चलाने, शाही तौर-तरीकों व अन्य छोटे मोटे अस्त्र शस्त्र चलाने में ऐसा दक्ष और निपुण बना दिया था कि उसका मुकाबला कोई भी दूर-दूर तक नहीं कर सकता था। एक दिन सियावुश रुस्तम के समीप आया और कहा— 'आपने मुझे विद्या और कला सिखाने में कितने ही वर्षों तक कष्ट उठाया है, इसलिए मेरी इच्छा है कि मेरे पिता भी आपकी शिक्षा का चमत्कार मुझमें देख लें।"

रुस्तम को सियावुश की बात पसन्द आई। उसने उसे अनुमति दे दी। मुकुट, सिंहासन और सिपाही यात्रा के लिए तैयार हो गये। रुस्तम सियावुश के साथ शाही दरबार में पहुचा।

काउस शाह जैसे ही अपने बेटे के आगमन से अवगत हुआ, उसने आदेश दिया कि विशिष्ट योद्धा उसके स्वागत के लिए जायें और उसके ऊपर

मार्ग लुटाते हुए उसे दरबार तक लायें। जब सियावुश पिता के समीप पहुंचा तो काऊस शाह बेटे का इतना ऊंचा कद देखकर हैरान रह गया। कितना बड़ा, कितना बुद्धिमान है वह ! दिल-ही दिल मे उसने खुदा को धन्यवाद दिया। बेटे को गले लगाकर अपने समीप बिठाया। इस शुभ अवसर पर उसने आदेश दिया कि "पूरे नगर म मदिरा के घडे लुटवाए जाए, सगीत और नत्य का कायक्रम रखा जाए।"

यह कायक्रम हफ्ते भर चलता रहा। शाही खजाने का मुह खोल दिया गया। शाह ने अपने बेटे को हीरे-जवाहरात, रेशमी कपडे, घोडे, तीर और कमान से लाद दिया। इसके अतिरिक्त रेशम पर लिखा कोहिस्तान की हुकूमत का आज्ञा पत्र भी उसे दिया। वास्तव मे काऊस शाह ऐसा बेटा पाकर मन ही-मन खुशी से फूला नही समा रहा था।

एक दिन वह सियावुश के साथ बैठा हुआ था। उधर से सुदाबे आ गई जो शाह हामजारान की बेटी और काऊस की मलिका थी। उसकी ललचाई आखें सियावुश के चेहरे पर टिक गईं। उसके मन म एक अजीबो गरीब इच्छा ने अगडाई ली। उसने चुपके से सियावुश को सन्देश भेजा कि वह रात को अन्त पुर मे उसके कमरे म आ जाये। सियावुश ने क्रोध से कहलवाया—"मैं इस किस्म का आदमी नही हू।" यह उत्तर पाकर सुदाबे ने एक नयी चाल चली। रात को काऊस शाह के पास पहुची और बोली— "अच्छा हो कि आप सियावुश को अन्त पुर भेज दें ताकि वह अपनी बहनो से मिल ले। बहनें भी उससे मिलने को उत्सुक है।" यह बात काऊस शाह को पसन्द आई। उसने सियावुश को बुलाया और कहा कि—

पस परदेयह मन, तोरा ख्वाहर अस्त
च् सुदाबे खुद मेहरबान मादर अस्त

(शाही हरम मे तुम्हारी बहनें रहती हैं। इनके अलावा मलिका सुदाबे भी है जो तुम्हारी अपनी मा की तरह वात्सल्य व मातत्व से भरी हुई है।)

सियावुश के मन म विचार आया कि इस प्रकार शाह काऊस उसकी परीक्षा ले रहे है। उसने उत्तर दिया—"मुझे अन्त पुर मे भेजने के बदले वरिष्ठ योद्धाओ, रण-क्षेत्र और अनुभवी वीरो के पास भेजें तो मेरे लिए अधिक उचित होगा क्योंकि शाही अन्त पुर म जाकर मैं कौन-सी नयी बात

सीखूगा। औरतें कब बुद्धिमानी की बातें करती है।"

सियावुश के इस उत्तर से काऊस प्रसन्न हुआ। फिर भी, उसने अपनी बात दोहराई कि वह वहा जाकर औरतो, लडकियो और बच्चो से मिल आये। पिता के बार बार कहने से सियावुश मजबूर हो गया और अंतःपुर जाने को तैयार हो गया। पहरेदार सियावुश को लेकर सुदाबे के महल की ओर बढा।

सियावुश ने जैसे ही महल मे कदम रखा, सारी औरतें उसके स्वागत के लिए दौडी। सियावुश ने देखा कि महल इत्र और अगरबत्ती की महक से गमक रहा है। मदिरा का दौर चल रहा है। सगीत और साज की मद्धिम ध्वनि ने एक स्वप्नलोक का दृश्य उपस्थित कर रखा है। बीचो-बीच रेशमी कपडो से सजा एक सोने का सिंहासन है जिस पर सुदाबे बैठी हुई थी। जैसे ही उसकी नजर सियावुश पर पडी, वह अपने स्थान से उठी और आगे बढकर सियावुश को गले लगाया। उसकी आखो का चुम्बन लिया। फिर खुदा को धन्यवाद दिया कि उसने उसको ऐसा पुत्र दिया है।

सियावुश सुदाबे के प्रेम की गहराई और उस ऊपरी दिखाव को खूब समझ रहा था। वहा से उठकर वह अपनी बहनो के पास गया। बहनें उसे देखकर बहुत खुश हुई और उसे सोने के सिंहासन पर बिठाया। सियावुश काफी देर तक अपनी बहनो के समीप बैठा रहा। लौटकर पिता के पास आया और बोला—"खुदा ने आपको नेकी के सारे अवसर दिये है, फिर आपकी ओर से यह कमी क्या?" उसका यह कहना काऊस को बहुत अच्छा लगा। रात को जब वह सुदाबे के पास गया तो उसने सियावुश के व्यक्तित्व के बारे मे पूछा। सुदाबे ने उसके व्यवहार की प्रशसा करते हुए बताया कि वास्तव मे समझ और अच्छाइयो मे उसका कोई जवाब नही है। क्या ही अच्छा होता यदि मेरी किसी लडकी से इसका विवाह हो जाता। उससे प्राप्त पुत्र रत्न कितना महान और बुद्धिमान् पैदा होगा।'

काऊस को सुदाबे की बात पसन्द आई। मगर जब उसने इसी बात को सियावुश से कहा तो उसने उत्तर दिया, "मैं आपका बेटा हू। आपकी हर इच्छा और आदेश को आख बन्द करके मानने वाला हू। आपकी इस बात को सुनकर सुदाबे जाने क्या अर्थ निकालेगी। वास्तव मे मैं सुदाबे के

साथ किसी प्रकार का सम्ब ध जोडना नही चाहता ह, न उसके अ त पुर म मुझे अब कभी जाना है।"

सियावुश की बात सुनकर शाह काऊस हस पडा। उस सुदाव की चालो का पता न था। बेटे को समझाते हुए बोला, "सुदावे ने यह बात मुझम बहुत प्रेम और सदभाव से कही है। तुम विश्वास रखो। इस पर यू स देह करना उचित नही है।" पिता क कहने और समझाने से वह ऊपर से तो खामोश रहा, मगर मन की शका कम नही हुई।

सुबह हुई तो सुदावे ने अपनी बटियो को बुलवाया। स्वय सिहासन पर बठी और याकूत क लाल अनार जस रग का मुकुट सिर पर रखा। और 'हीरबुद' नाम के पहरदार को सियावुश को बुलाने के लिए भेजा। जब सियावुश आया तो उसने उसे सोने के सिहासन पर बिठाया और स्वय उसके समीप खडी होकर एक एक करके अपनी बटिया को उसके सामन स गुजरने के लिए कहा और बोली, "इनम स जिसे चाहो पस द कर लो।"

सियावुश ने जस ही आखें ऊपर उठाइ, उसन लडकियो को जान का इशारा किया और जब स्वय अकेली रह गई तो बोली—"इनको ध्यान से देखो। इनम से कौन है तुम्हारी पत्नी बनने के काबिल?" सियावुश का मन देश प्रेम स भरा हुआ था। वह सुदाव की चालो का खूब समझ रहा था। सुदावे के पिता शाह हामवारान ने धोखा देकर उसके पिता शाह काऊस को कारावास म डलवाया था। यदि उसकी पुत्री सुदावे भी उसी स्वभाव की हुइ, तब तो ईरान क भविष्य को अ धकारमय ही समझना चाहिए।

अपन प्रश्न का उत्तर जब सुदाब को नही मिला तो उसने एकाएक अपने चेहरे पर पडा नकाब हटा दिया और बडी कामुक चितवन स सियावुश को देखा। वह स्वय को सूय और लडकिया को च द्रमा समझ रही थी, सो कहन लगी, 'जिसने मुझे फिरोज़े और याकूत से जडे मुकुट को पहने हाथीदान के सिहासन पर बठे देखा है, यदि वह ससार की सारी सु दरियो और च द्रमा की आर स आखें फेर ले तो इसम आश्चय क्या है।"

फिर एक नयी अदा स बोली, "दिखावे के लिए तुम मरी बेटी से विवाह कर लो मगर मुझे वचन दो कि हर रात मेरे कक्ष मे आओगे। मैं

सीखूगा। औरतें कब बुद्धिमानी की बातें करती है।"

सियावुश के इस उत्तर से काऊस प्रसन्न हुआ। फिर भी, उसने अपनी बात दोहराई कि वह वहा जाकर औरतो, लडकियां और बच्चो से मिल आये। पिता के बार बार कहने से सियावुश मजबूर हो गया और अन्त पुर जाने को तयार हो गया। पहरेदार सियावुश को लेकर सुदाबे के महल की ओर बढा।

सियावुश ने जसे ही महल में कदम रखा, सारी औरतें उसके स्वागत के लिए दौडी। सियावुश ने देखा कि महल इत्र और अगरबत्ती की महक से गमक रहा है। मदिरा का दौर चल रहा है। सगीत और साज की मद्धिम ध्वनि ने एक स्वप्नलोक का दृश्य उपस्थित कर रखा है। बीचो-बीच रेशमी कपडो से सजा एक सोने का सिंहासन है जिस पर सुदाबे बैठी हुई थी। जसे ही उसकी नजर सियावुश पर पडी, वह अपने स्थान से उठी और आगे बढकर सियावुश को गले लगाया। उसकी आखो का चुम्बन लिया। फिर खुदा को धन्यवाद दिया कि उसने उसको ऐसा पुत्र दिया है।

सियावुश सुदाबे के प्रेम की गहराई और उस ऊपरी दिखावे का खूब समझ रहा था। वहा से उठकर वह अपनी बहनों के पास गया। बहनें उसे देखकर बहुत खुश हुई और उसे सोने के सिंहासन पर बिठाया। सियावुश काफी देर तक अपनी बहनो के समीप बैठा रहा। लौटकर पिता के पास आया और बोला—"खुदा ने आपको नेकी के सारे अवसर दिये है, फिर आपकी ओर से यह कमी क्यो ?" उसका यह कहना काऊस को बहुत अच्छा लगा। रात को जब वह सुदाबे के पास गया तो उसने सियावुश के व्यक्तित्व के बारे में पूछा। सुदाबे ने उसके व्यवहार की प्रशसा करते हुए बताया कि वास्तव में समझ और अच्छाइयो में उसका कोई जवाब नही है। क्या ही अच्छा होता यदि मेरी किसी लडकी से इसका विवाह हो जाता। उससे प्राप्त पुत्र रत्न कितना महान और बुद्धिमान पदा होगा।'

काऊस को सुदाबे की बात पसन्द आई। मगर जब उसने इसी बात को सियावुश से कहा तो उसने उत्तर दिया, "मैं आपका बेटा हू। आपकी हर इच्छा और आदेश को आख बन्द करके मानने वाला हू। आपकी इस बात को सुनकर सुदाबे जाने क्या अर्थ निकालेगी। वास्तव में मैं सुदाबे के

साथ किसी प्रकार का सम्ब ध जाडना नही चाहता हू, न उसके अ त पुर मे मुझे अब कभी जाना है ।"

सियावुश की बात सुनकर शाह काऊस हस पडा। उस सुदावे की चाला का पता न था। बटे को समझात हुए बाला, "सुदाबे न यह बात मुझस बहुत प्रेम और सदभाव से कही है। तुम विश्वास रखो। इस पर यू स देह करना उचित नही है।" पिता के कहने और समझाने से वह ऊपर से तो खामोश रहा, मगर मन की शका कम नही हुई।

सुबह हुइ तो सुदावे ने अपनी बटिया को बुलवाया। स्वय सिहासन पर बठी और याकूत के लाल अनार जैसे रग का मुकुट सिर पर रखा। और 'हीरबुद' नाम क पहरेदार को सियावुश को बुलान क लिए भेजा। जब सियावुश आया तो उसने उस सोन के सिहामन पर बिठाया और स्वय उसके समीप खडी होकर एक एक करके अपनी बेटियो को उसके सामन से गुजरने के लिए कहा और बोली, "इनम स जिसे चाहो पस द कर लो।"

सियावुश ने जैस ही आखें ऊपर उठाइ, उसने लडकियो को जाने का इशारा किया और जब स्वय अकेली रह गई तो बोली—"इनको ध्यान से दखो। इनम स कौन है तुम्हारी पत्नी बनने के काबिल?" सियावुश का मन देश प्रेम म भरा हुआ था। वह सुदाबे की चालो को खूब समझ रहा था। सुदाव के पिता शाह हामवारान ने धोखा दकर उसके पिता शाह काऊस का कारावास म डलवाया था। यदि उसकी पुत्री सुदाव भी उसी स्वभाव की हुई, तव तो ईरान क भविष्य को अ धकारमय ही समझना चाहिए।

अपन प्रश्न का उत्तर जब सुदाबे को नही मिला तो उसने एकाएक अपने चेहरे पर पडा नकाब हटा दिया और बडी कामुक चितवन से सियावुश को देखा। वह स्वय को सूय और लडकियो को च द्रमा समझ रही थी, सो कहन लगी, 'जिसन मुझे फिरोजे और याकूत से जडे मुकुट को पहने हाथी-दान के सिहासन पर बैठे देखा है, यदि वह ससार की सारी सु दरियो और च द्रमा की ओर से आखें फेर ले तो इसमे आश्चय क्या है।"

फिर एक नयी अदा से बोली, "दिखावे के लिए तुम मेरी बटी से विवाह कर लो मगर मुझे वचन दो कि हर रात मेरे कक्ष मे आओगे। मैं

अपना तन मन सब कुछ तुम्हें अर्पित कर दूगी।"

कि त मन तोरा दिदेह अम, मुर्दअम
खुरुशान व जूशान व आज़रदेह अम

(मैंने तुम्ह जब से दखा, तुम पर मर मिटी हू। मैं अपन जज्बात एव जोश स स्वय परेशान हू।)

इतना कहकर सुदाबे सियावुश के कदमो पर झुक गई और कहन लगी कि 'इस समय तुम्हारे समीप खडी हुई मैं अपना सपूर्ण अस्तित्व तुम्ह भेंट करती हू। तुम मुझसे जो चाहाग मैं तुम्ह दूगी। तुम्हारे हर आदश पर अपनी मो जान निछावर करती हू।" यह कहकर उसने वासना स प्रेरित होकर सियावुश को अपनी बाहो मे भीच लिया और एक अदभुत तृष्णा से उसके कपोलो, होठो और आखो का चुम्बन लेने लगी।

सियावुश का मुख लज्जा से लाल पड गया। मन-ही मन सोचने लगा, "यह औरत मुझ चाहे जितना उत्तेजित कर, मगर मैं पिता की धरोहर और उनके सम्मान को ठेस नही पहुचन दूगा।" इस ठोम चाल चलन और अच्छाइ क बावजूद उसन सोचा कि यह औरत इतनी दुष्ट है कि इससे अधिक कटुता भी उचित नही। क्या पता, यह षडयत्र कर शाह काऊस को उल्टा सीधा बहका दे। उचित यही है कि अभी नर्मी और मिठास स समस्या को हल करना चाहिए। यह सोचकर उसन कहा कि "तुम्हारी बेटी के अतिरिक्त किसी अन्य की इच्छा मेरे मन म नहीं है। मैं उसी से विवाह करूगा। अभी तुम अपने प्रेम के भेद को छुपाकर रखो क्योकि तुम शाही परिवार का मुकुट, ईरान की मलिका और ससार की दृष्टि म मेरी मा हो।" यह कहकर सियावुश चला गया।

रात को शाह काऊस को सुदाबे ने यह शुभ समाचार सुनाया कि "सियावुश न सारी लडकिया म स उसकी लडकी को चुना है।"

काऊस इस समाचार को सुनकर बहुत खुश हुआ और आदेश दिया कि खजान का मुह खोल दिया जाए। हीरे जवाहरात रेशम, आभूषण, मुकुट का ढेर लग गया। सुदाबे यह सब दखकर चकरा गई। उसन सियावुश को अन्त पुर म बुलाया, इधर-उधर की बातें करके बोली कि "तुमको बादशाह न इतना धन दिया है कि जिस दो सौ हाथियो पर लादा जाएगा।

लेकिन मैं उससे कही अधिक धन तुम्हे दूगी और साथ ही अपनी हसीन बेटी भी। अब बताओ तुम्हे किस बात की प्रतीक्षा है ? क्या अब भी मेरे प्यार को ठुकराओगे ?" यह कहकर सुदाबे सियावुश के परो पर गिर गई। और उससे रो रोकर विनती करने लगी—"मैंने तुम्हे जब से देखा है तभी से तुम्हारी पहली नजर के तीर से घायल हू। अपनी भावना के ज्वार और उत्तेजना व उफान मे मैं स्वय पागल हो रही हू। इस पीडा के कारण मेरे लिए दिन भी रात हो गई है और सूरज को भी जैसे गहन लग गया है। एक क्षण के लिए तुम मेरे अन्दर के लपकते शोलो को बुझा दो। तो मेरा यह बुढापा जवानी मे बदल जाएगा।" इसके बाद उसने सियावुश को धमकी भी दी कि "यदि तुमने मेरी प्यास नही बुझाई तो मैं सच कहती हू, मैं तुम्हे जीने नही दूगी।"

सियावुश सौतेली मा के इस समर्पण से बेहद लज्जित हो उठा। एक क्षण भी ठहरना उसके लिए अब मुश्किल हो रहा था। उसने सुदाबे को अपने से परे हटाते हुए कहा—"मुझसे ऐसी आशा रखना बेकार है कि मैं काम-वासना पर अपने धर्म को कुर्बान कर दूगा। ऐसे बुद्धिमान पिता से मैं बेवफाई करू और उसके विश्वास को तोड, उसकी पत्नी पर हाथ डालू और वीरता और बुद्धिमत्ता को तज दू ऐसा नामुमकिन है। तुम ईरान की मलिका हो, तुमको यह बात शोभा नही देती।" इतना कहकर सियावुश क्रोध मे भरकर सिंहासन से उठ खडा हुआ और चलने को हुआ। अचानक सुदाबे सियावुश की बाहो मे झूल गई और बोली—"चूकि मैंने अपने दिल की बातें तुमसे कह दी हैं, इसलिए तुम मुझे अब बदनाम करना चाहते हो।" यह कहकर वह चीखने लगी और अपने कपडे फाडने लगी। अन्त पुर से उसके चीखने की आवाज शाह के कानो मे पहुची और वह बदहवास होकर भागा। जब सुदाबे के समीप पहुचा तो उसे आसुओ मे डूबा, बेहाल देखा। जैसे ही सुदाबे की नजर शाह पर पडी, उसने जोर जोर से रोना और सिर के बाल नोचना आरम्भ कर दिया। पछाड खाकर वह शाह से लिपट गई और बोली—'सियावुश ने मुझ पर बुरी नजर डाली है। उसने मेरे कपडे फाडे, मुझसे जबरदस्ती करनी चाही और मेरा मुकुट फेंक दिया।" यह सुनकर काऊस विचारो मे डूब गया। उसने सियावुश को अपने पास बुलाया

और पूछा, "वास्तविकता क्या है ?"

जो कुछ गुजरा था, सियावुश ने सही सही बता दिया।

"मैंने सुदाबे को नहीं, बल्कि सुदाबे ने मुझे अपने धर्म से विचलित करने पर बाध्य किया था।"

यह सुनकर सुदाबे ने साफ झूठ बोला, "मैंने इससे कहा था कि मैं बहुत सारा धन दौलत देकर अपनी लड़की का विवाह तुमसे करना चाहती हूं। मगर इसने जवाब दिया कि न मुझे तेरी धन-दौलत चाहिए, न तेरी लड़की। मैं तो सिर्फ तेरा दीवाना हूं और सिर्फ तुम्हें चाहता हूं।' फिर उदास होकर बोली, 'शाह! मैं आपसे गर्भवती हूं और मुझे ऐसा लग रहा है कि जो जबरदस्ती मेरे साथ सियावुश ने करनी चाही है, उससे मेरा गर्भ अब ठहर नहीं पाएगा।

काऊस के सामने समस्या आन खड़ी हुई थी कि वह सच का पता कैसे लगाए और निर्दोष किसे समझे। काऊस ने चुम्बन के बहाने सियावुश का सारा शरीर सूंघा। वहां पर सुगन्ध की सुगंध न थी। फिर आगे बढ़कर उसने सुदाबे को सूंघा जो पूर्ण रूप से इत्र में भीगी हुई थी। इस हकीकत के प्रकाश में आते ही, काऊस शाह दुखी हो उठा और सुदाबे को दोषी माना। घृणा से उसने चाहा कि उसका सिर धड़ से अलग कर दे। तभी उसके मस्तिष्क में यह विचार कौंधा कि इस घटना से हामवारान से युद्ध करना पड़ेगा। दूसरे, जब वह हामवारान के कारागार में था तो उस कठिन समय में सुदाबे ने उसकी बड़ी सेवा की थी। तीसरे, चूंकि उसका दिल उसकी ओर से खट्टा हो गया था तो उसे क्षमा करना ही दण्ड लगा। चौथे उसके जो नवजात शिशु थे, मां के अतिरिक्त किसी अन्य की गोद के इच्छुक न थे। उन्हें इस उम्र में मां की आवश्यकता थी। मगर इन सारी बातों के बाद भी मलिका उसकी आंखों से गिर चुकी थी।

सुदाबे ने जब यह बात महसूस की कि काऊस का मन उसकी तरफ से हट गया है तो उसके मन में भी द्वेष की भावना आ गई। उसने एक नया षड्यन्त्र रचा। राजमहल में एक दुष्ट औरत थी। भाग्य से वह उस समय गर्भवती थी। मलिका सुदाबे ने उसे अपने पास बुलाया और अकेले में कुछ गुप्त बातें कीं। फिर कुछ धन देकर उसे इस बात पर राजी कर लिया कि

वह दवा दारू खाकर अपना गर्भ गिरा दे।

उस औरत ने सुदाबे के समझाने के अनुसार अपना गर्भ गिरा दिया। उसके गर्भ से जुड़वा बच्चे गिरे। सुदाबे ने एक सुनहरा तसला मगवाया और उसमे दत्य रूपी उन बच्चो को डाला और खुद अपने कपडे फाडकर चीखने चिल्लाने लगी। उसकी आवाज सुनकर काऊस राजदरबार से भागा हुआ अन्त पुर मे आया। उसने सुदाबे को लेटा हुआ देखा। पूरे महल मे हलचल थी और सामने सोने के तसले मे दो बच्चे मरे पडे थे। सुदाबे शाह को देख फूट फूटकर रोने लगी—"यह सब कुछ सियावुश के कारण हुआ है। मेरी दुर्दशा देखकर भी क्या आपको विश्वास नही होता कि मैं निर्दोष हू।"

शाह काऊस इन सारी घटनाओ से चकराया हुआ सीधा ज्योतिषियो के समीप पहुचा और समस्या के समाधान व सत्यता जानने की इच्छा प्रकट की। ज्योतिषियो ने एक हफ्ते के बाद सही घटना शाह को कह सुनाई—"ये दोनो बच्चे शाह के नही हैं और न ही मलिका के है।" इस बात को सुनकर शाह काऊस और अधिक विचार-मग्न हो गया और पडितो बुलाकर इस गुत्थी के सुलझाने के बारे मे पूछा।

पण्डितो ने कहा कि "केवल एक ही रास्ता है कि दोनो अपना निर्दोष होना साबित करें। वह रास्ता यह है कि दोनो को आग पर से गुजरना होगा। निर्दोष को आग की लपटे कभी नही जलायेंगी।"

यह सुनकर शाह काऊस ने मलिका सुदाबे और पुत्र सियावुश को बुलाया और इस अग्नि परीक्षा की बात उन्हे सुनाई। सुदाबे का दिल भय से धडक रहा था, सो उसने बहाना बनाया और कहा कि चूकि मेरे छोटे बच्चे हैं, इसलिए सियावुश पहले अग्नि-परीक्षा के लिए जायें क्योकि वही वास्तव मे दोषी हैं। मैं तो निर्दोष हू। मरे हुए बच्चे आपने स्वय देखे ही हैं।"

जब शाह काऊस ने सियावुश से अग्नि-परीक्षा की बात कही तो वह सहर्ष तैयार हो गया। "इस तिरस्कार और बदनामी से कहीं अच्छा है कि मैं आग के पर्वत को पार करू।"

काऊस ने आदेश दिया कि ऊटों के सौ काफिले इधन जमा करने

जाए। उस इंधन से दो चिताएं ऊंचे टीले के समान बनाई गईं। सारा नगर अग्नि-परीक्षा देखने के लिए एकत्र हो चुका था। सब भीतर-ही भीतर सूदाबे को बुरा भला कह रहे थे। वास्तव में किसी ने ठीक ही कहा कि संसार में पतिव्रता पत्नी का खोजो वरना दुराचारी पत्नी पति को कुख्याति के अतिरिक्त कुछ नहीं देती।

शाह काऊस के आदेश से लकड़ी पर तेल डाला गया। फिर उसमें आग लगा दी गई। लपटें आसमान से बातें करने लगीं। अग्नि कुण्ड के प्रकाश से रात दिन में बदल चुकी थी। सारे लोग सियावुश की भाग्यहीनता पर खून के आंसू रो रहे थे। सियावुश सफेद कपड़े पहने सिर पर सुनहरा मुकुट रखे, काले घोड़े पर सवार मुख पर एक विश्वासपूर्ण गम्भीर मुस्कान लिए पिता के समीप पहुंचा। घोड़े से उतरकर उसने पिता के आगे आदर से झुककर सलाम किया। पिता के मुख पर लज्जा के भाव देखकर बोला—"मेरे सिर पर कठिनाइयों और तिरस्कार का बोझ जरूर है, मगर जब मैं इस अग्नि-परीक्षा से गुजरकर निर्दोष होने का सबूत दे दूंगा, तब मैं वास्तव में इन सारे कष्टों और क्लेशों से मुक्ति पा जाऊंगा।" इतना कहकर सियावुश घोड़े पर बैठा, उसे एड़ लगाई और अग्नि कुण्ड की ओर बढ़ा। उसने मन ही मन खुदा को स्मरण किया। उधर सूदाबे अपने महल की छत पर से यह दृश्य देख रही थी। उसके मन में एक ही तीव्र इच्छा थी कि सियावुश इस अग्नि परीक्षा में जलकर भस्म हो जाय।

सारे लश्कर सियावुश को देख रहे थे। उनकी आंखों में आंसू मगर दिल में आक्रोश था। एकाएक सियावुश घोड़े सहित अग्नि कुण्ड में कूदा और बड़े आराम से अंगारों भरा मार्ग तय करने लगा जैसे वह अग्नि न हो बल्कि फूलों से भरी एक क्यारी हो। आग की लपटें आकाश चूम रही थीं। बीच में पहुंचकर सियावुश उन लपटों में खो गया। सभी दर्शकों के दिल धक धक कर रहे थे कि सियावुश कब इन लपटों के भयानक पर्दे से बाहर निकलता है।

कुछ समय पश्चात सियावुश मुस्कराते हुए बाहर निकला। दर्शकों की रुकी सांसें खुशी के मारे चीखों और चीत्कारों में परिवर्तित हो गईं। सियावुश और उसके घोड़े का बाल भी बांका नहीं हुआ था। उसे देखकर

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह किसी बाग की हवाखोरी से प्रसन्नचित्त लौट रहा हैं।

सियावुश को भला चगा देखकर सब एक दूसरे को मुबारकबाद दने लगे कि खुदा ने निर्दोष को बचा लिया। उधर महल म सुदाब क्रोध क मार अपने बाल नोच रही थी और आसू बहा रही थी। काऊस के समीप जब सियावुश पहुचा तो भला चगा देखकर उस अपन सीन स लिपटा लिया और राजमहल म ले गया। ऐस मुबारक अवसर पर तीन दिन तक नृत्य, सगीत और मदिरा का समारोह आयोजित किया गया।

समारोह समाप्त होने पर काऊस न अपने सलाहकारो स सुदाबे की समस्या पर बात की। उन्होने बताया कि इस घटना म सुदाब ही पूर्ण रूप से दोषी है, अत उसे उचित दण्ड मिलना चाहिए। यह सुनकर शाह काऊस न उदास मन, पीले चेहरे और कापते हुए होठो से आदश दिया कि सुदाबे को फासी पर चढा दिया जाये। सुदाबे को फासी का आदेश जब सियावुश ने सुना तो उसने सोचा, कल जब सुदाबे को फासी लग जाएगी तो उसकी मत्यु के कुछ दिन पश्चात शाह काऊस अपनी पत्नी की मृत्यु का कारण मुझे समझेंगे और उस समय उन्हे पश्चात्ताप होगा। यह सोचकर वह शाह काऊस के समीप पहुचा और उनस निवेदन किया कि "उचित यही है कि सुदाबे को क्षमा कर दें ताकि उस अपन को सुधारन का अवसर मिले और वह दोबारा एसी हरकत न करे।

अन्त मे शाह काऊस ने सुदावे को क्षमा कर दिया और उसे अन्त पुर म भेज दिया। अभी कुछ ही दिन गुजरे थे कि शाह काऊस के मन म सुदाबे का प्रेम फिर ठाठें मारने लगा और वह सुदाबे को देखने के लिए व्याकुल हो उठे। वह क्षण भर के लिए भी सुदाबे क पास स दूर नही जाना चाहत थे। इस अवसर का लाभ उठाकर सुदाब न शाह पर जादू-टाना करके उनका मन फिर सियावुश की ओर से फेरन का प्रयत्न किया। शाह काऊस मन ही मन सियावुश से रुष्ट हो गय। मगर अपनी भावना को उन्होने सियावुश पर व्यक्त न करके उसे छुपाए ही रखा।

इसी बीच एक नई घटना घटी। तूरान के शाह अफरासियाब ने ईरान पर आक्रमण कर दिया। इस समाचार से काऊस चिन्तित हो उठा और

युद्ध की तैयारी करने लगा। लेकिन पडितो ने उसे सलाह दी कि वह रण-क्षेत्र म न जाए बल्कि अपनी जगह एक शूरवीर-बलवान योद्धा को भेज जो प्रत्येक कला म दक्ष हो।

इधर सियावुश ने मन-ही मन सोचा कि यह अच्छा अवसर है। मैं काऊस शाह से रणक्षेत्र म जाने की मिन्नत करूगा ताकि सुदाबे काण्ड से मेरी जान थोडे समय के लिए छूट जाएगी और रण क्षेत्र म शत्रुओ को हराकर ससार मे अपनी बहादुरी का सिक्का भी जमा लूगा। ऐसा सोचकर वह पिता के समीप पहुचा और रणक्षेत्र म जाने की आज्ञा मागी। शाह काऊस ने बडी खुशी से उसे आज्ञा दे दी और रुस्तम को बुलाकर सियावुश की जिम्मेदारी उसे सौंप दी। शस्त्रागार से अस्त्र शस्त्र निकलवाकर फौज म बटवा दिये और फौज की कमान सियावुश को थमा दी। फौज जब चली तो शाह काऊस एक दिन उनके पास गया और जब शुभकामनाए देकर वापस लौटने लगा तो पिता और पुत्र एक दूसरे के गले मिले। शाह काऊस की आखो म आसू भर आए। दोनो के मन म आशका थी कि शायद अब वे पुन न मिल सकें और यह उनकी अन्तिम भेंट ही हो। इस प्रकार भाव विह्वल होकर पिता-पुत्र एक-दूसरे से जुदा हुए।

सियावुश और रुस्तम फौज के आगे चल रहे थे। कुछ दिनो बाद व बल्ख नगर पहुच गये। जब तूरान के शाह अफरासियाब के पास यह खबर पहुची कि रुस्तम और सियावुश जैसे पहलवान उनसे युद्ध के लिए एक भारी फौज के साथ आ रहे हैं तो उसने अपने भाइ गरसिवज़ को फौज का सिपहसालार बनाकर भेजा। बल्ख नगर के दरवाज़े पर दोना फौजें टकराइ। तीन दिन तक घमासान युद्ध चलता रहा। चौथे दिन सियावुश की फौज विजय पताका लहराती हुई बल्ख शहर मे दाखिल हुई।

सियावुश ने अफरासियाब को एक पत्र लिखा—"मैं युद्ध म विजयी होकर बल्ख शहर म दाखिल हो गया हू। यहा से जीहून नदी तक मेरी फौजें फली हैं और ससार पर मेरा साम्राज्य फैल गया है।"

अफरासियाब अपनी हार से क्रोधित हो उठा। उसने फौरन आदश

दिया कि 'सहायता भेजी जाय' और दुख व चिंता से बेचन टहलन लगा। फिर सो गया। अभी उसकी आख लगी ही थी कि वह एक डरावनी चीख के साथ सपने से जागा और पलग स नीचे गिर गया। वह भाई गरसिवज क पास दौडा और उसने देखा कि उसका भाई भय से काप रहा है। जब वह अपन होश म आया तो उसने उस चीख का कारण पूछा।

"मरे भय और चिंता का कारण एक भयानक सपना है। मैंने देखा कि एक विस्तत जगल है जिसमे साप ही साप है। धरती से आकाश तक धूल ही धूल भरी है। मेरा खेमा उसी बियाबान मे लगा है। तूरानी योद्धा उसकी रक्षा हेतु तनात हैं। इतन म जोर की आधी आई और मरा झण्डा उड गया तथा खेमा ढह गया। इसी बीच ईरानी फौज मुझ पर टूट पडी। सिपाहियो ने मुझे सिंहासन से नीचे घसीट लिया और मुझे बन्दी बनाकर काऊस बादशाह के पास ल गए हैं। वहा पर एक सुडौल सुन्दर युवक खडा था जिसने तलवार से मेरे बदन के दो टुकडे कर डाले। मैं दर्द म चीख उठा।"

अफरासियाब न फौरन ज्योतिषियो को बुलवाया। उनसे सपना बयान करके सपने का अर्थ पूछा। उन्होने पहले अपनी जान की रक्षा का वचन लिया फिर कहा, "ईरान की फौज की कमान जो शहजादा कर रहा है, वह वीर और अनुभवी है। उसके वध से अपन हाथ रगना वास्तव मे शाह के लिए नए कष्टो और कठिनाइयो का आरम्भ होगा।'

यह सुनकर अफरासियाब का मन खिन्न हो गया। उसने युद्ध की बात छोडकर सन्धि की बातचीत आरम्भ की। उसके विचार से कष्टो से बचने का केवल यही एक मार्ग बचा था कि जिन इलाको पर ईरानियो ने कब्जा कर लिया है, व उन्ही को दे दिये जाए। अफरासियाब ने ऊच नीच सोच-कर अपने भाई गरसिवज से कहा कि वह जीहून नदी के समीप जाए। उसके साथ हजारो दास और दासिया हो और अरबी घोडे तथा सौ ऊटो पर केवल कालीनें और कीमती वस्तुए हो। इसके अतिरिक्त जडाऊ मुकुट और सुनहरी म्यानो मे रखी हिन्दुस्तानी तलवारें भी हो।

जीहून नदी पर पहुचकर गरसिवज न सियावुश के पास सन्देश भेजा। फिर नाव मे बैठकर नदी पार करके बलख शहर पहुचा। सियावुश ने बहुत

प्रेमपूर्वक और सम्मानसहित उसका स्वागत किया। उसे अपने समीप बिठाया। गरसिवज़ ने पहले साथ लाए बहुमूल्य उपहार भेंट मे दिए। फिर सियावुश और रुस्तम मे निवेदन किया कि अफरासियाब सधि का इच्छुक है।

सब कुछ सुनकर रुस्तम ने हफ्ते भर का समय मागा ताकि इस बात पर अच्छी तरह सोच विचार कर ले। अकेले मे उसन सियावुश से सलाह मशविरा किया। अत मे तय पाया कि अफरासियाब अपने कुटुम्ब के कुछ सदस्यो को बतौर गिरवी उनके पास रखे। इससे उसकी नीयत नेक होने का पता चल जाएगा। दूसरे वह सारी जमीनें ईरान की वापस कर दे जिस पर तूरानियो ने कब्जा कर रखा है।

अफरासियाब ने ये दोनो शर्तें मान ली। उसने अपन परिवार के सौ लोग 'गिरवी' के रूप मे भेज दिये। साथ ही वे सारे इलाके भी लौटा दिये। इसके पश्चात सियावुश ने पिता को एक पत्र लिखा जिसे रुस्तम लेकर शाह काऊस के पास पहुचा।

शाह ईरान पत्र पढकर क्रोध से कापन लगा। उसने रुस्तम पर कटु वचनो का प्रहार किया। रुस्तम ने सफाई पश की और तथ्यपूर्ण बातें करके शाह काऊस को समझाने का प्रयत्न किया। मगर काऊस तो उस पर आग बबूला था। उसने रुस्तम पर लाछन लगाया कि "यह सब तुम्हारा किया धरा है। अपने आलस्य के कारण सियावुश को युद्ध से हटाकर सधि के लिए उकसाया, क्योकि अफरासियाब द्वारा भेजे बहुमूल्य उपहारों ने तेरी आखें चुधिया दी थी।' उसी क्रोध म भरे उसने आदेश दिया कि "रुस्तम की जगह मेरी फौज का सिपहसालार तूस पहलवान होगा।"

रुस्तम को काऊस के इस व्यवहार से दुख पहुचा। वह क्रोध और अपमान से दरबार से बाहर निकला और अपने शहर सीस्तान की ओर चल पडा। शाह काऊस ने एक पत्र सियावुश को भी लिखा जिसम उसके व्यवहार की जी भर कर निन्दा की थी—"तुम सुन्दर स्त्रियो की सगत म पडकर युद्ध करना भूल गए। अफरासियाब क परिवार के सारे सदस्यो को शीघ्रातिशीघ्र ईरान के शाही दरबार म भेजा जाए। सधि के सारे वचन तोड दिए जाए और तुम खुद दरबार मे हाजिर हो।"

सियावुश को जब यह ज्ञात हुआ तो उसे उस पत्र से बहुत दुःख पहुचा। विशेषकर इस बात से कि पिता ने रुस्तम की सिपहसालारी की मर्दवी तूस पहलवान को दे दी है। यदि वह पिता का आदेश मानकर अफरासियाब के सौ सम्बन्धियो को ईरान भेज देता है तो शाह काऊस उन्हे फौरन फासी पर चढा देंगे। यदि सन्धि विच्छेद करके वह अफरासियाब से दोबारा युद्ध करता है तो ससार उसके नाम पर थूकेगा। यहा तक कि खुदा भी उसके इस आचरण को पसन्द नही करेगा। यदि यह सब कुछ छोडकर फौज की कमान तूस के हाथो सौंपकर वह पिता के पास ईरान वापस लौट जाता है तो वहा पर सुदाबे के प्रकोप और षड्यन्त्रो से बचा नही रहेगा। ये सारी बातें सोच सोचकर उसका मन दुःखी हो रहा था। उसने पिता का पत्र वरिष्ठ योद्धाओ को दिखाया और कहा कि "मैं ही भाग्यहीन हू, किसी का क्या दोष है। मुझ पर हर पल एक नई मुसीबत टूटती है। यह सब मेरे ग्रहो का चमत्कार है। मेरे प्रति बादशाह कितने दयालु और कृपालु थे। अपने प्रेम से उन्होंने मुझे कितना विश्वास दिया था लेकिन जब से सुदाबे ने उन्हे भडकाया है, वह मेरे लिए जहर हो गया है। उसने मेरी राह मे कैसे काटे बो दिए हैं। शाही महल मेरे लिए अब कारागार से कम नहीं है। मेरे भाग्य का खिलता फूल अब सदा के लिए मुरझा गया है।"

सियावुश ने न सन्धि तोडी, न युद्ध के लिए कमर कसी और न ही पिता के पास लौटने का इरादा किया। उसके सामने बस एक उपाय था कि वह कही भाग जाए जाकर छुप जाए और शाह काऊस को इस गुप्त स्थान का पता न चल सके। अन्त मे सियावुश ने आदेश दिया कि अफरासियाब के सारे उपहार और सम्बन्धी लौटा दिए जाए। साथ ही जो कुछ घटा है, उसे बता दिया जाए। वरिष्ठ योद्धाओ ने उसे समझाया कि यू ईरान के साम्राज्य मे आखें फेर लेना उचित नही है। मगर उनके उपदेशो का उस पर तनिक भी प्रभाव नही पडा। उसने अपनी वफादारी अफरासियाब के प्रति रखी और उसे पत्र लिखा—"इस युद्ध ने मेरे दामन को केवल जहर और कडुवाहट से भर दिया है। मैंने अन्त मे यही तय किया है कि ईरान के राजसिंहासन को छोडकर तुम्हारी शरण मे आ जाऊ।" पत्र मे उसने यह भी लिख दिया कि "मैं तेहरान के रास्ते से जाकर किसी ऐसे

गुप्त स्थान पर जाकर तन्हा रहूगा, जहा गुमनाम जीवन खामोशी से गुजार सकू।"

अफरासियाब को यह सब पढकर और यह जानकर बहुत दुख हुआ कि सियावुश का भाग्य चक्र कठिनाइयो म फस गया है। उसने पीरान से सलाह-मशविरा किया कि इस बार मे क्या किया जाए। पीरान ने कहा, "सियावुश एक गम्भीर, सभ्य और बुद्धिमान शहजादा है। वह चाल-चलन से पवित्र और वचन का पक्का है। मेरी राय है कि आप उसे सम्मानपूर्वक आमत्रित करें और अपना अतिथि बनायें। काऊस कुछ दिना बाद इस ससार से चला जाएगा। तब ईरान का बादशाह सियावुश बनेगा और उस समय आपका प्रभाव ईरान-तूरान पर एक समान होगा।"

इस बात को सुनकर अफरासियाब खुश हुआ और पीरान की राय को उसने पसन्द किया। उसने सियावुश के पत्र का उत्तर लिखवाया—"मुझे तुम्हारे पिता के व्यवहार मे वास्तव मे दुख पहुचा है। जहा तक मेरा प्रश्न है, आज से तुम मेरे बेटे और मैं तुम्हारा पिता हू। पिता होने के बावजूद, मैं तुम्हारी हर आज्ञा मानने के लिए तैयार हू। इस सारी फौज और खजानो पर यहा तक कि इस देश पर तुम्हारा अधिकार है। इसके बाद यहा से वापस जाने का अब तुम्हारे पास कोई कारण नही है।"

इस पत्र को पाकर सियावुश ऊपर से तो प्रसन्न हुआ मगर मन ही-मन दुखी हुआ। वह इस समस्या से कैसे आखें मूद सकता था कि अफरासियाब का यह व्यवहार न केवल मानवता पर आधारित है, बल्कि उसमे राज नीतिक लाभ भी निहित है। मित्रता के पर्दे मे वह एक-न एक दिन शत्रुता निभायेगा। इसके पश्चात् उसने एक भावनापूर्ण पत्र पिता के नाम लिखा कि "आपके साम्राज्य की सीमा से मैं दूर जा रहा हू।" जब वह अफरा सियाब की सीमा म दाखिल हो रहा था तो जीहून नदी को पार करते हुए उसकी आखें आसुओ से तर थी। सियावुश जब तूरान की सीमा म दाखिल हुआ तो पीरान न बहुत वैभवपूर्ण सम्मान स उसका स्वागत किया। उसके साथ फौज थी, हाथी था और सिंहासन था। सबके आगे रेशमी तूरानी झण्डा लहरा रहा था। उसके पीछे, फिरोजे के सिंहासन को कधे पर रख दास चल रह थे। पीरान ने आगे बढकर सियावुश के सारे शरीर का चुम्बन

लिया। इतनी आवभगत देखकर सियावुश को अच्छा लगा कि उसका शत्रु सम्मान और प्रेम का प्रदशन कर रहा है। मगर साथ-ही साथ उसके मन मे देश प्रेम की टीस और उसकी दूरी की कसक भी उसे तडपा रही थी।

पीरान ने देखा कि सियावुश उदास है तो पीरान न सियावुश को अपने प्रेम और आदर का विश्वास दिलाते हुए कहा—"अफरासियाब के इस प्रेमपूण व्यवहार पर भरोसा करो और यहा से जाने का विचार दिल से निकाल दो। तूरान धरती की हर वस्तु तुम पर दिल व जान से निछावर होने को तयार है। तुम इस क्षण से प्रसन्नतापूवक जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दो।"

पीरान की सात्वना भरी बातो ने सियावुश के घायल मन पर मरहम का काम किया। उसकी दुविधा किसी हद तक दूर हो गई। भोजन के समय वह आपस मे इतना समीप आ चुके थे कि मानो पिता और पुत्र हो। भोजन के उपरात वे दोना अफरासियाब के राजमहल म उपस्थित हुए। राजमहल से अफरासियाब पैदल सियावुश के स्वागत के लिए आगे बढा। जब सियावुश ने उसे खडा देखा तो सम्मान के कारण अपने घोडे से उतरा और पदल अफरासियाब की आर बढने लगा। समीप पहुचकर दोनों गले मिले और एक-दूसरे के माथे व आखो का चुम्बन लिया।

इस मुलाकात के बाद अफरासियाब का मन सतोष से भर उठा और उसने सियावुश पर अपनी मेहरबानी का दरवाजा खोल दिया। फौरन आदेश दिया कि शहजादे के लिए एक सुदर राजमहल सुसज्जित किया जाए। उसम सुनहरा सिंहासन रखा जाए। जरबफ्त के गलीचे बिछाए जाए। जब सियावुश उस सुनहरे सिंहासन पर विराजमान हुआ तो अफरासियाब ने एक उत्सव का आयोजन किया और बहुमूल्य उपहार अतिथि को भेंट किये।

यह उल्लासपूण उत्सव हफ्ते भर तक चलता रहा। एक दिन अफरासियाब सियावुश के सग चौगान खेलने गया। दोनों सध्या तक उसी खेल मे मस्त रहे। जब शाम को राजमहल लौटे तो दोनो प्रसन्न थ। अफरासियाब को अनुभव हुआ कि सियावुश वास्तव मे एक वीर और सुशील शहजादा है। उसने फिर इस खुशी म सियावुश को उपहारो म लाद दिया। अफरासियाब

वास्तव मे सियावुश को मन से प्यार करने लगा था। कुछ दिन बाद तो उसका यह हाल हो गया था कि चाहे दु ख हो या सुख, प्रसन्नता हो या उदासी, वह सियावुश के बिना एक क्षण को भी नही जी सकता था। उसी की बातें उसके मन को भाती थी।

इसी तरह एक वष गुजर गया। एक दिन पीरान व सियावुश बातें कर रहे थे। पीरान ने कहा—"अफरासियाब का तो यह हाल है कि तुम्हारे अतिरिक्त उन्ह कोई अच्छा ही नही लगता। मुझे तो लगता है, तुम उनकी खुशियो की बहार, उनके नत्य और सगीत की महफिलो के बहतरीन साथी और उनके दु ख के भागीदार हो। मगर तुम्हे यह बात नही भूलनी चाहिए कि तुम काऊस शाह के बेटे, ईरान के साम्राज्य की बागडार सभालने वाले भविष्य के बादशाह हो। कही ऐसा न हो कि तुम राज्य से हाथ धो बैठो। तुम्हारा अपना कौन है ? न भाई, न बहन, न पत्नी। बल्कि तुम उस पुष्प की तरह हो जो उपवन से अलग है। अच्छा हो कि इस अकलपन को दूर करने के लिए तुम किसी लडकी को विवाह के लिए पसन्द कर लो जो तुम्हारे दु ख दद की भागीदार बन तुमको अपना सके। अफरासियाब और गरसिवज के तीन-तीन सुन्दर कन्याए हैं। मेरी चार लडकिया हैं। बडी लडकी जरीरा सितारो मे चन्द्रमा समान है। सक्षेप मे, तुम जिसे चाहो, पसन्द कर लो।"

सियावुश ने उत्तर दिया कि "इन लडकियो मे से मुझे सबसे अधिक जरीरा पसन्द है। मेरा रिश्ता उसी से उचित है।"

पीरान खुशी खुशी घर गया और जरीरा से उसका विवाह पक्का कर दिया। रात को अपनी बेटी का सोलह सिंगार करवाकर उसे सियावुश के समीप भेज दिया।

अफरासियाब के दरबार म सियावुश का सम्मान और दबदबा दिन दूना रात चौगुना बढता जा रहा था। एक दिन पीरान ने सियावुश से कहा—"तुमने कभी इस ओर ध्यान दिया है कि अफरासियाब की शान शौकत और ख्याति तुम्हारे कारण है ? अफरासियाब रात दिन तरा ही मुख देखता है। उसकी आत्मा तू है। वह सौ जान से तुझ पर निछावर है। तरा प्रेम है जो उसे अभी तक सभाले हुए है। यदि यह प्रेम व आदर की भावना पारि-

वाग्विक सम्बन्ध के गठबन्धन मे परिवर्तित हो जाये तो यह भावना अटूट और अमर हो जाएगी और तुम्हारा सम्मान भी दिन-प्रतिदिन बढता जाएगा। यह सच है कि मेरी बेटी तुम्हारी पत्नी है, मगर मुझे तो तुम्हारा ही ख्याल हरदम सताता रहता है। तुम्हे शाही दरबार मे जो महान पदवी प्राप्त है उसका तकाज़ा है कि तुम शाह के दामन मे पडे मोतियो मे से एक को चुन लो। इससे तुम्हारा सम्मान बढेगा और उन्नति होगी। अफरासियाब की लडकियो म से सबस सुन्दर लडकी फिरगीस है। यदि तुम आज्ञा दो तो मैं बादशाह से गुप्त रूप से चर्चा चलाऊ।"

सियावुश अपनी महान् आत्मा और कोमल एव निमल हृदय के कारण इस बात पर राजी न हुआ। वह जरीरा का दिल तोडना नही चाहता था। उसकी भावनाओ को ठेस पहुचाना नही चाहता या। इसलिए उसने पीरान की बातो का उत्तर दिया कि—"मेरा जीवन तो जरीरा है, वही मेरी श्वास है और वही मेरी आत्मा ! मैं उसके अतिरिक्त किसी से प्यार नही करता। न मुझे सम्मान की भूख है, न उपहारो का लालच। न मुझे चाद और सूरज पाने की कोई लालसा है, न राज्य और सिंहासन को लेने की इच्छा। मेरे लिए जरीरा मेरा सवस्व है, मेरे अच्छे-बुरे दिनो की साथी। मैं उसे किसी भी मूल्य पर छोडना नही चाहूगा, चाहे मुझे उसके लिए बडी-से-बडी हानि क्या न उठानी पडे।"

लेकिन पीरान न उसको जरीरा की ओर से हर प्रकार का विश्वास दिलाया। अन्त मे पीरान के बहुत अधिक दबाव और समझाने से वह मान गया। "अब जब मैं ईरान से सदा के लिए बिछुड गया हू, अपने पिता और रुस्तम जसे पहलवानो से दूर तूरान म हू तो बाकी जिन्दगी भी मुझे दश म दूर इसी तूरान की धरती पर गुज़ारनी पडेगी। ऐसी स्थिति मे अफरासियाब की बेटी से विवाह करन म मुझ कोई आपत्ति नही होनी चाहिए।"

पीरान अफरासियाब के सम्मुख उपस्थित हुआ और उससे फिरगीस का हाथ सियावुश के लिए मागा। अफरासियाब ने पहले बहाना किया कि "ज्योतिषियो न मुझसे कहा था कि मेरा कोई भी नवासा कीकबाद और तूर बादशाह की नस्ल से नही होना चाहिए।' यह सुनकर पीरान ने कहा—"ज्योतिषियो की बातो मे तथ्य नही है।" इधर-उधर की बातें करके उसने

किसी तरह अफरासियाब को विवाह के लिए राजी कर लिया। पीरान प्रसन्नचित्त हो विजयी भाव से सियावुश के पास पहुचा और कहा—"नय विवाह के लिए तैयार हो जाओ।" मगर सियावुश इस विवाह म झिझक रहा था। उसका मन जरीरा से बेवफाई के लिए तयार न था। उसका अतर्मन पाप भावना से भर रहा था और मुख लज्जा स लाल हो गया था। उसके मन म बार-बार प्रश्न उठ रहा था कि जरीरा जसी तन मन निछावर करने वाली प्रिय पत्नी को छोडकर दूसरी कया को कसे अपना लू ?

इधर पीरान घर लौटा और अपनी पत्नी गुलशहर को खजाने की कुजी दी ताकि फिरगीस को उपहार देने के लिए वह बहुमूल्य वस्तुए निकाले। गुलशहर ने जबरजद के तख्त, फिरोजे के प्याले, जडाऊ ताज, कान के बुदे और बहुमूल्य जूते निकाले। इसके अतिरिक्त उसने सौ बडी थालियो मे अलग अलग जाफरान और इत्र सजाए। साठ ऊटो पर बहुमूल्य कालीन, जरबफ्त और सोने के सिंहासन लादे गये। तीन सौ कनीजो को भी जो सुनहरी अमारी म बठी थी, फिरगीस को विवाह मे भेंट स्वरूप भेजा।

ईरानी रस्म और रिवाज के अनुसार, फिरगीस और सियावुश का शुभ विवाह सम्पन्न हो गया। विवाह समारोह मे दूल्हा दुल्हन को दखकर लग रहा था जैसे सूय और चन्द्र का मिलन हो गया हो। सारे देश मे हफ्ते भर तक धूम धाम स उत्सव मनाया गया। जनता तरह तरह की मदिरा और अनेक स्वादिष्ट व्यजनो का मजा लेती रही।

एक वष पलक झपकते बीत गया। इस बीच कोई अनहोनी घटना न घटी। अफरासियाब ने चीन तक फले अपन विस्तत साम्राज्य का एक बडा इलाका सियावुश को दे दिया। सियावुश फिरगीस और पीरान के साथ उस नए भाग की ओर चल पडा। चलते चलते काफिला एक ऐसे स्थान पर पहुचा जहा एक ओर ऊचे पवत थे तो दूसरी ओर समदर ठाठें मार रहा था। सियावुश को वह स्थान बहुत भाया। उसने आदेश दिया कि यहा उसके लिए एक सुदर महल बनाया जाए। राजगीरो और मजदूरो ने रात दिन मेहनत करके एक बहुत ही सुदर किला 'गुग' बनाया जो चमन, सौदर्य और बाग की हरियाली मे अपना जवाब आप था।

सियावुश एक दिन पीरान को लेकर किला देखने गया। उसे देखकर प्रसन्नता हुई कि किला हर प्रकार की सजावट के साथ तैयार है। ज्योतिषियों को बुलाकर उसने पूछा कि यह महल मेरे लिए शुभ है या नहीं।

ज्योतिषियों ने कहा—"यह आपके लिए अशुभ है।" सियावुश, जो पहले से ही अपने भाग्य से खिन्न और उदास था, उनकी बात सुनकर अधिक दु खी हो उठा। फिर पीरान को ज्योतिषियों की बात बताता हुआ बोला—"इस महल का लाभ कोई और ही उठाएगा। मैं तो इससे भी वंचित रहूंगा।"

पीरान ने उसे दिलासा दिया। फिर जब वह तूरान शहर लौटा तो उसने अफरासियाब से सियावुश के महल की बहुत तारीफ की। अफरासियाब सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और गरसिवज से बोला—"जाकर देखो तो कि सियावुश ने कैसा वैभवपूर्ण महल बनवाया है। जाकर फिरोज़े और हाथी दांत के बने उसके राज सिंहासन के सौंदर्य को देखो। जहां पर कल तक झाड़ झखाड़ था, वहां पर सियावुश ने बाग बनवा दिया है। मगर हां, सियावुश से बहुत सम्मान और आदर देकर मिलना। वरिष्ठ और बूढ़े दरबारियों के सामने उसकी खूब प्रशंसा और उसकी बहुमुखी प्रतिभा की चर्चा करना।"

गरसिवज़ अफरासियाब का संदेश और उपहार लेकर यात्रा पर निकल पड़ा। सियावुश को उसके आगमन का समाचार मिला तो वह उसकी अगवानी के लिए पैदल गया। दोनों एक-दूसरे से गले मिले। सियावुश प्रेमपूर्वक गरसिवज़ को महल में लाया। उसके आने की खुशी में एक शानदार समारोह का आयोजन किया। इसके पश्चात् जब वह फिरंगीस के महल में गया तो उसने देखा कि हाथी दांत के सिंहासन पर बड़ी शान से फिरंगीस बैठी हुई है। ऊपर से उसने अपनी प्रसन्नता प्रकट की, मगर मन-ही मन सोचा, यदि इस तरह से वर्ष भर गुजर गया तो सियावुश किसी को पूछेगा भी नहीं। आज भी उसके पास किस चीज़ की कमी है। महल है, राज सिंहासन है, खज़ाना है फौज है और इतना विस्तृत इलाका है।

संक्षेप में, जब तक गरसिवज वहां पर रहा सियावुश के ऐश्वर्य और महिमा को देखकर उसके दिल पर सांप लोटता रहा। उसके मुख का रंग,

वह सब रगीनी देखकर उड गया था, मगर ऊपर स वह हसता मुस्कराता रहा। दूसरे दिन सियावुश ने उसे चौगान खेलने का निमन्त्रण दिया। दोनो ने खेलना आरम्भ किया। गरसिवज जो गेंद मारता उसे सियावुश फुर्ती स लौटा देता था। चारो ओर ईरानी और तुर्की घुडसवार घोडे दौडा रह थे। सभी खेल मे व्यस्त थे, मगर अन्त मे ईरानी घुडसवार तुर्की घुडसवारो पर विजयी हुए। *सियावुश को अपने देशवासियो की यह विजय देखकर बहुत* प्रसन्नता हुई।

सियावुश और गरसिवज जब खेल चुके तो आकर सुनहरे सिंहासन पर *बैठ गये और दूसरे खिलाडियो का मुकाबला देखने लगे। मगर अन्दर-ही* अन्दर अपनी हार से गरसिवज अपमान की ज्वाला से तडप रहा था। अन्त मे जब उससे न रहा गया तो उसने सियावुश को चुनौती देते हुए कहा कि "चलो हम दोनो कुश्ती लडते हैं। यदि मैं तुम्हें पटक दू तो मैं तुमस बलवान् रहा, यदि तुमने मुझे हराया तो मैं कभी रणक्षेत्र मे नही उतरूगा।"

सियावुश ने गरसिवज के सम्मान के कारण उसकी चुनौती कबूल नही की और कहा—"आपके साथ बल का प्रदशन मुझे शोभा नही देता है।" सियावुश गरसिवज से लडना नही चाहता था क्योकि वह अफरासियाब का भाई और उसका अतिथि था। उसने यह सोचकर गरसिवज से कहा कि "आप किसी अन्य पहलवान को मुझसे कुश्ती लडने का आदेश दें।"

यह सुनकर गरसिवज ने दो प्रसिद्ध पहलवान, 'गर्वी' और 'दमूर' को सियावुश स कुश्ती लडने को भेजा जो वास्तव मे नामी पहलवान थे और अपना कोई जवाब नही रखते थे।

सियावुश तूरानी पहलवानो 'गर्वी' और दमूर के साथ मैदान मे उतरा। पहले वह गर्वी की ओर बढा। उसकी कमर पर बधी पटी को पकडा और उसे जमीन पर दे मारा। अब वह दमूर की ओर मुडा और उसे *गदन स पकडकर जमीन स यू उठा लिया जैसे उसके हाथ म कोई छोटा सा* पक्षी हो और उसी हालत मे वह उसे उठाकर गरसिवज के पास ले गया और ठीक सामने धरती पर छोड दिया। उसके बाद सियावुश घोडे से उतरा, *बढकर गरसिवज से हाथ मिलाया और सब मगन*, मस्त और हसी-खुशी के साथ महल मे लौट आये।

गरसिवज एक हफ्ता ठहरने के बाद अपने शहर वापस लौटा। वह ऊपर से सियावुश की योग्यता की भूरि-भूरि प्रशसा करता रहा, मगर उसके मन म सियावुश के विरुद्ध अपने अपमान का आक्रोश भरा हुआ था और वह उस पराजय से बहुत लज्जित था। जब वह शाह के दरबार मे पहुचा तो अवसर निकालकर उसने अफरासियाब के कान सियावुश के विरुद्ध भरने लगा—"कभी-कभी सियावुश के पास शहशाह काऊस का ऐलची आता है। उसके मधुर सम्बध चीन और रोम से भी हैं। इस सबको टाला जा सकता है, मगर इस सच्चाई से आखें कैसे मूदी जा सकती हैं कि वह शाह ईरान काऊस की याद मे मदिरा के प्याले तो खाली करता है, मगर भूल से भी मदिरा का प्याला उठाते हुए शाह अफरासियाब का अभिनदन नही करता है।"

गरसिवज की बातें सुनकर अफरासियाब को दु ख हुआ। उसने कहा—"मैं तीन दिन तक इस समस्या पर विचार करूगा।" अफरासियाब ने हर एक कोण स सोचा मगर उस सियावुश मे कोई बुराई नजर नही आई। उसने गरसिवज से कहा, "सियावुश ने ईरान के तख्त को त्याग कर मेरे प्रति वफादारी दिखाई है और मेरे प्रति इसी निष्ठा को अपना धम बना लिया है—

ज़े फरमान मन यक जमान सर न ताफ्त
ज़े मन उ बेजुज़ नीकोइ बर न याफ्त

(उसने कभी मेरे आदेश से मुह नही मोडा और मैंने भी उसके सदाचारी स्वभाव के बदले म उसके साथ भलाई की है।)

इतना कहकर अफरासियाब न कुछ पल सोचा और कहा कि "वास्तव मे मेरे सामने सियावुश के विरुद्ध कोई बहाना नही है। यदि उसके बाद भी मैंने उसके साथ बुरा व्यवहार किया तो लोग मुझ पर उगली उठाएगे। मुझे बुरा भला कहग। इसस तो अच्छा है कि मैं उसे वापस ईरान भेज दू।"

गरसिवज न इस बात का विरोध करते हुए कहा—"सियावुश हमारे साम्राज्य के सारे भेदो से वाकिफ है। यदि वह ईरान चला गया तो हमारे लिए कष्ट ही कष्ट है। आपने शेर पाला है और शेर पालने वाले को तो सदा खतरा लगा रहता है।"

सक्षेप मे, गरसिवज ने सियावुश और फिरगीस की जी भरकर निन्दा की। यहा तक कि अफरासियाब का मन उन दोना की ओर से फिर गया। अन्त मे गरसिवज को अफरासियाब ने आदेश दिया कि वह जाकर फिरगीस और सियावुश को ले आये।

गरसिवज मन मे शत्रुता छिपाए सियावुश के समीप पहुचा और अफरासियाब का सन्देश देत हुए कहा कि "बादशाह ने तुम्हें और फिरगीस को कुछ दिनो के लिए बुलाया है ताकि तुम उनमे भेंट भी कर लो और कुछ दिन महल मे रहकर आराम करो और शिकार इत्यादि करके जीवन का आनन्द ले सको।"

सियावुश यह आमत्रण पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। गरसिवज न जब उसका यह निश्छल प्रेम और आदर देखा तो सोचा कि यदि यह इतने प्रसन्न मन से शाह के समीप पहुचेगा, तो सब किये कराए पर पानी फिर जायेगा। उसने दिखावे के लिए मुह उतार लिया और घडियाली आसू बहाने लगा।

उसकी यह दशा देखकर सियावुश ने पूछा—"रोने की क्या बात है ?" गरसिवज ने आसू पोछत हुए कहा—'अफरासियाब ऊपर से तो तुम पर मेहरबान है, मगर अन्दर से वह तुमसे द्वेष रखता है। उसका कोई भरोसा नही है। इससे पहले भी वह अपने निर्दोष भाई और न जाने कितने सरदारो को मौत के घाट उतार चुका है। अब उसके मन मे छुपा दत्य तरे खून का प्यासा हो रहा है। अपना ध्यान रखना।" सियावुश ने कहा—"मैं बादशाह को मना लूगा। उसका दिल मरी तरफ से साफ हो जायेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।"

गरसिवज ने कहा—'अफरासियाब ने जो क्रूर व्यवहार अपने कुटुम्ब के सदस्यो व फौजी सरदारो के साथ किया है, उसको मत भूलना। यह तो उसका जाल है, जो उसने तुम पर फेंका है। मेरी राय है कि तुम पहले पत्र लिख दो ताकि मैं शाह को पत्र दू और वातावरण के खतरे की आशका को आकू। यदि खतरा न हुआ तो तुम्ह आन की इत्तिला दे दूगा। मेरा तो सिर्फ इतना ही कहना है कि दूध के जले को छाछ भी फूक फूककर पीना चाहिए।"

सियावुश का निमल मन गरसिवज की बाता से प्रभावित हो गया

और उसने एक पत्र अफरासियाब को लिखा—"आपका निमत्रण मिला, हमे हार्दिक प्रसन्नता हुई। चूकि इन दिनो फिरगीस बीमार है, उसकी देख-रेख के कारण इस समय यात्रा करना मेरे लिए असम्भव है। जैसे ही उसकी तबियत ठीक हो जायगी हम फौरन आपकी सेवा मे उपस्थित होगे।"

गरसिवज पत्र लेकर चला। रात दिन यात्रा करता हुआ तीन दिन मे ही दरबार पहुच गया। उसको इतनी जल्दी वापस आया देखकर अफरासियाब अचम्भित हुआ। गरसिवज न पहुचते ही अपनी बातो के जाल म अफरासियाब को फसाना आरम्भ किया—"न तो सियावुश मेरे सम्मान म मुझे लने आया और न मेरा आदर सत्कार किया। उसने सिंहासन के नीचे मुझे उकडू बिठाया। मैंने आपका पत्र दिया तो उस बिना पढे किनारे डाल दिया। जबानी सन्देश कहना चाहा तो उसने मुझे रोक दिया। उसके पास ईरान म बराबर पत्र आत हैं। पत्र व्यवहार का यह सिलसिला ईरान स घनिष्ठ मित्रता को दर्शाता है। उसके दरवाजे जहा ईरानियो क लिए खुल रहे है, वहा पर तूरानियो के लिए बन्द हो रहे है। यदि आप सियावुश के सम्बन्ध मे देरी स काम लेंगे तो आपको पछताना पडेगा। यदि आपकी ओर म ढील हुई तो सच कहता हू सियावुश स्वय तूरान पर आक्रमण करके ईरान और तूरान दोनो साम्राज्यो की बागडोर अपने हाथ म ले लेगा।"

इधर गरसिवज के जाने के बाद सियावुश चिन्ता और दुख के सागर म डूब गया। उसन सारी परेशानी फिरगीस को कह सुनाई। सारी बातें सुनकर फिरगीस न सिर पीट लिया और रोन लगी। उसने व्यथित होकर कहा, 'अब क्या होगा। इस द्वेष का अन्त कैस होगा जो मेरे पिता के मन म आपके लिए है। इधर आप ईरान जाना नही चाहते, उधर चीन आपको पसन्द नही हैं। फिर बताए, हमको सिर छुपाने के लिए कौन-सा आकाश मिलेगा जो खुदा आपको अपनी पनाह म रखे और आपका भविष्य उज्ज्वल बनाए।"

सियावुश ने उसे आशा दिलात हुए कहा कि "दुखी न हो, आसू पोछ डालो। चिन्ता से क्या लाभ? खुदा पर विश्वास रखो, वही हमारी सहायता करगा।"

इस घटना के तीन दिन गुजर गये। चौथे दिन सियावुश रात को सोते

से चीखकर उठ बैठा। उसका शरीर काप रहा था। फिरगीस ने फौरन शमा जलाई और पूछा, "क्या बात है?"

सियावुश न बताया कि 'मैंन सपन मे देखा है कि एक बहुत बडा दरिया बह रहा है। उसके दोनो किनारो पर आग जलान के इधन के पहाड बने हुए हैं। साथ-ही साथ ढेरो योद्धा अस्त्र शस्त्र मे सुसज्जित जमा हैं। उसमे सबसे आग अफरासियाब हाथी पर सवार है। मुझे देखते ही अफरा-सियाब के माथे पर बल पड गये। उसने फौरन वहा जमा ईंधन मे फूक मारी और गरसिवज ने उसे हवा दी। जब लपटें उठने लगी तो उन लपटो वाली चिता मे मुझे डालकर जला दिया गया।"

फिरगीम ने सियावुश को दिलासा दिया और समझात हुए कहा, "सपना तो केवल सपना है।"

अभी आधी रात ही गुजरी थी कि समाचार मिला कि अफरासियाब एक भारी फौज के साथ आ रहा है। उसी समय गरसिवज का भेजा घुडसवार सदेशवाहक सियावुश के समीप पहुचा और सन्देश दिया कि 'मैं अफरासियाब के मन पर छाई इर्ष्या और प्रतिशोध की भावना को न धो सका। जो कुछ मैंने कहा उसका कुछ भी फल न निकला। केवल उसकी सुलगती लकडियो के धुए न मेरी आखें भी आसुओ से भर दी हैं। मुझे सम्मान के स्थान पर केवल अपमान मिला। इस काले धुए म डूबा मैं तुम्हारे लिए दिशा ढूढ रहा हू।"

फिरगीस ने सियावुश को समझाया, 'पल भर की दर भी तुम्हारे लिए हानिकारक हो सकती है। फौरन घोडे पर वठो और यहा स फरार हो जाओ।" मगर सियावुश पर फिरगीस की बातो और आसुओं का प्रभाव न पडा। वह समझ गया कि उसका सपना सच निकला है। अब पीठ दिखाने से कोई फायदा नही है। आने वाली घटना के लिए उसे कमर कस लेनी चाहिए। उसने फिरगीस से विदाई ली जो पाच मास की गर्भवती थी। "तुम एक ऐसे पुत्र को जन्म दोगी जो एक महान बादशाह बनगा। उसका नाम कैखुसरू रखना। मेरे भाग्य का सूय अफरासियाब के हाथो अस्त हो रहा है। मेरा निर्दोष अस्तित्व उसके हाथो धूल म मिल जायेगा। न मुझे कफन मिलेगा, न कब्र मिलेगी। यहा तक कि मेरी मत देह के समीप आसू

बहाने वाला भी कोई नहीं होगा। जब मेरा सिर धड से अलग होगा तो उस अनजानी बियाबान धरती पर मेरा यह तन किसी लावारिस लाश की तरह सडता रहेगा। और तुम्हारा अन्त भी मेरे सामने ही है। अफरासियाब के योद्धा तुम्हे नगा कर देने म भी पीछे नहीं रहगे। उस समय केवल पीरान तुम्हारी सहायता को आयेगा और तुम्हे अफरासियाब से मागकर अपने सग ले जाएगा। उसी के महल मे तुम मेरे बच्चे को जन्म दोगी। कुछ दिन बाद जब खुसरू बडा होगा तो गिव नाम का एक पहलवान ईरान से आयेगा और खामोशी म तुम्हे और मेरे बेटे खुसरू को ले जाएगा। मेरा बेटा ईरान के राजसिंहासन पर बैठेगा, मेरी इस निमम निर्दोष हत्या का प्रतिशोध लेगा और सारे ससार को अपने साम्राज्य मे शामिल कर लेगा। उसकी सेवा और सत्ता मे केवल इसान ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी भी नतमस्तक होग।"

इसके बाद दद की पीडा से व्याकुल हृदय को सभालकर उसने फिरगीस से विदा ली। उसके कापते होठ और पीले चेहरे पर एक अनकही यतना थी। फिरगीस इस दृश्य को सहन न कर सकी और भावना से दीवानी हो, दुख से अपने बाल और मुह नोचने लगी।

सियावुश ने अपने घोडे के कान म कुछ कहा। फिर उस पर उछलकर बैठा और रण क्षेत्र की ओर चल पडा। उसके साथ थोडे-से ईरानी योद्धा थे जो जान हथेली पर लिए थे। तूरानी योद्धाओ को देखकर वे बेकाबू हो गये मगर सियावुश ने उन्हे रोका और आगे बढकर अफरासियाब को सम्बोधित करके बोला, "आप क्यो युद्ध के इच्छुक हैं और मेरे वध का प्रण करके क्यो आये हैं ?"

इससे पहले कि अफरासियाब उत्तर दे, गरसिवज ने ललकारा—"यदि तुम निर्दोष हो तो इतने योद्धाओ के सग क्यो आये हो ?"

इस वाक्य से सियावुश सारी बात समझ गया और बोला—"यह सब तुम्हारा फलाया जहर है। तुमने ही मुझे कहा था कि बादशाह मुझसे रुष्ट हैं।" फिर सियावुश ने अफरासियाब को सम्बोधित किया—'मेरा रक्त बहाना आपको अकारण कठिनाइयो मे फसाएगा। गरसिवज की बातो मे आकर आप तूरान के लिए मुसीबत मोल न लें।"

गरसिवज ने सियावुश से अफरासियाब का वार्तालाप बढ़ने नहीं दिया

और कहा कि "शीघ्रता स युद्ध आरम्भ हो ताकि सियावुश को बदी बनाया जा सक।'

इधर सियावुश अफरासियाब से सधि किय बठा था। उसने न तो स्वय हथियार उठाए, न ही योद्धाओ को म्यान से तलवारें निकालन दी। उधर अफरासियाब ने बिना समझे युद्ध करने का आदश दे दिया। तूरानी फौज ईरानियो पर टूट पडी। देखते-ही-दखत ईरानी टुकडी का सफाया हो गया और मदान खून से नहा गया। सियावुश का शरीर तीर से बेध दिया गया और वह धरती पर औधा गिर गया। गर्वी ने उसके हाथ पीछे से बाधें और गदन पर जवार रखकर उस घसीटता हुआ अफरासियाब के समीप लाया।

अफरासियाब ने आदेश दिया—"इसका सर तन से जुदा कर दो ताकि इस जड से कोई भी कोपल न फूटे। इस बियाबान तपती धरती की प्यास इसके खून से बुझा दो और लाश को फेंक दो ताकि वह बिना कफन के सड जाए।"

यह सुनकर योद्धाओ ने विरोध मे अपनी जबान खोली, 'सियावुश न आपके साथ कोइ अनुचित व्यवहार नही किया है, फिर क्यो आप उस मारना चाह रहे हैं? उसके वध पर सारी दुनिया खून के आसू बहाएगी।'

पीरान के भाई पीलसम न भी अफरासियाब को समझाया कि "अफरासियाब! यह वध करना एक पाप है। यह याद रहे आपको कि इस निर्दोष की हत्या का प्रतिशोध ईरान के शाह, रुस्तम पहलवान, अय वरिष्ठ पहलवान और योद्धा आपसे लेकर रहग। इसलिए मरा निवदन है कि शाह अभी सियावुश को बन्दीगह मे रखें और इस जल्दबाजी से अपन को रोकें और उचित समय की प्रतीक्षा करें।

अफरासियाब पीलसम की बात सुनकर शात हुआ, लेकिन गरसिवज ने उसको भडकाते हुए कहा—"सियावुश वास्तव म चोट खाया सप है। उसका सर न कुचला गया तो वह अधिक हानिकारक साबित होगा। यदि आपने उसे जीवित छोडा तो मैं आपकी सवा स अलग हो जाऊगा। मैं या तो किसी गुप्त स्थान म जा छिपूगा या फिर मत्यु को गले लगा लूगा।"

गर्वी और दमूर ने भी उसकी हा म हा मिलाई और बादशाह को

सियावुश का साथ छोडने की धमकी दी और उसे सियावुश की हत्या पर उक्साया। अफरासियाब दोराहे पर खडा चिन्ता मे डूबा था कि क्या करे। यदि सियावुश को मारता है तो बुरा है, यदि छोडता है तो उससे बुरा है।

इस बीच फिरगीस के पास सारा समाचार पहुचा। जब उसने स्थिति को इतना जटिल पाया तो वह रोती हुई शाह के सम्मुख पहुची और सियावुश की स्वतत्रता की भीख मागने लगी। फिरगीस ने अत म कहा कि यदि आप सियावुश का वध करवाते हैं तो ईरानी योद्धा इसका बदला अवश्य लेंगे। और सारी दुनिया आपके इस काम पर थूकेगी। इस लोक मे आपको निन्दा मिलेगी और परलोक मे नरक की ज्वाला आपको जलाकर ध्वस्त कर देगी। फिर वह सियावुश की तरफ मुडकर उसे सम्बोधित करते हुए बोली—'जो तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार कर रहा हो खुदा उसे कभी क्षमा न करे। काश, मेरी आखें फूट जाती ताकि मैं तुम्हे इस तरह खून मे डूबा न देखती। मैंने कब सोचा था कि पिता के कारण एक दिन मेरी माग सूनी होगी।"

अफरासियाब के सिर पर खून सवार था। उसने फिरगीस की बातो से रुष्ट होकर आदेश दिया कि "इसकी दोनो आखें फोड दी जायें। फिर इसे दूर जगल मे कैद कर दिया जाये ताकि इसकी आवाज किसी के कानो तक न पहुचे।" फिर आगे कहा कि "सियावुश को भी ऐसे स्थान पर ले जाया जाये कि इसकी चीत्कार किसी के कान मे न पडे।"

अफरासियाब का आदेश मिलते ही गरसिवज ने गर्वी को इशारा किया। वह आगे बढा और उसने सियावुश की दाढी पकड ली और उसे धरती पर घसीटने लगा। उस समय सियावुश ने इच्छा की, उसकी नस्ल से ऐसा अभिमानी पैदा हो जो उसके इस अपमान का बदला ले सके। फिर पीलसम की ओर मुह करके उसने पीरान के लिए सन्देश दिया, "मेरा अभिवादन पीरान को देना और कहना कि तुमने एक बार कहा था कि यदि मेरा बाल भी बाका हुआ तो तुम एक लाख पैदल सवार लेकर मेरी सहायता और रक्षा के लिए पहुचोगे। आज मुझे गरसिवज ने इतना अपमानित किया है कि मेरे पास उसके वर्णन के लिए शब्द नहीं हैं। मैं आज इस स्थिति मे हू कि मेरे लिए सांत्वना के शब्द कहने और दो बूद आसू बहाने

वाला भी कोई अपना नही है।"

गर्वी सियावश के बाल घसीटता हुआ उस स्थान पर ले गया जहा पर कभी सियावुश और गरसिवज ने तीरदाजी की थी। गर्वी ने एक सुनहरा तख्त लाने का आदेश दिया और उसे सियावुश की गर्दन के नीचे रख बकरे की तरह उसे हलाल कर दिया। सियावुश की गर्दन से खून के फव्वारे उफन पडे। तख्त खून से भर गया। कातिल ने उस खून को वही धरती पर उलट दिया। थोडी देर बाद वहा से एक घास उगी जिसका नाम सियावुश पड गया।

चू अज़ सरोवन दूर गश्त आफ़ताव
सरे शहरे यार अन्दर आमद बे ख्वाब
चे ख्वाबी, कि चन्दीन जमान वर गुज़श्त
न जुम्बीद हरगिज़ न बिदार गश्त

(जब सब से ऊचे वृक्षो के उस पार क्षितिज मे सूर्य अस्त हुआ तो सियावुश गहरी निद्रा मे सो गया। या खुदा! यह कैसी निद्रा थी जो समय के इतने बडे अन्तराल के बाद, वर्ष और युग बीतने के बाद भी उसने न तो करवट बदली और न उसने आखें खोली।)

हत्या की खबर जैसे ही फिरगीस को मिली, उसके दिल पर बिजली गिरी। दुख की पराकाष्ठा पर पहुचकर उसने अपने बाल और मुह नोचना आरम्भ कर दिया। पुष्प के समान गुलाबी मुह खून से तर हो गया। सारे तूरान मे हाहाकार मच गया। जब यह खबर अफरासियाब के पास पहुची तो उसने आदेश दिया कि "फिरगीस के बाल कटवा दिए जाए और कपडे फाड दिए जाए। उसे इतनी यातनाए दी जाए कि उसके पेट का बच्चा जाता रहे। मैं नही चाहता हू कि सियावुश की नस्ल इस धरती पर बाक़ी बचे।"

पीरान के पास जब सियावुश के कत्ल का समाचार पहुचा तो वह सिहासन से गिरकर बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो दुख की पराकाष्ठा से दीवाना हो अपने कपडे फाडने लगा और मुह पीटने लगा। सियावुश के शोक मे उसकी आखो से आसुओ का बरसाती नाला ही बह रहा था और मुख से दर्दनाक शब्दो का झरना झर रहा था।

लोगो ने पीरान के पास जाकर कहा कि फौरन अफरासियाब को फिरगीस की हत्या करने से रोको, वरना यह दुख उनकी कमर तोड देगा। पीरान फौरन अफरासियाब के समीप पहुचा और उसे बुरा भला कहा—"तुमने निर्दोष सियावुश की हत्या से अपनी ख्याति को मिट्टी मे मिला दिया है। जिस पापी ने तुम्हें यह मार्ग दिखाया है, खुदा उसको गारत करे। तुम एक दिन अपने इस आचरण पर रोओगे और हाथ मलोगे। फिर भी, नरक के इधन से अपना दामन बचा नही पाओगे बल्कि खुद उसी ईंधन म परिवर्तित हो जाओगे। सियावुश के बाद तुम अब अपने जिगर के टुकडे फिरगीस के वध की तयारी कर रहे हो? तुम वास्तव मे पागल हो गय हो वरना यह भयानक खूनी दश्य कभी भी सामने न आता।"

पीरान ने अफरासियाब से अन्त मे कहा कि "तुम फिरगीस को मेरी सुरक्षा मे दे दो। जब उसके बच्चे का जन्म हो जाएगा तो मैं फिरगीस को दोबारा तुम्ह लौटा दूगा। उस समय जो चाहो वह सजा दे देना।'

अफरासियाब को अन्त मे पीरान की बात माननी पडी। उसने फिरगीस को पीरान के हवाले कर दिया। पीरान फिरगीस को लेकर शहर 'खतन चला गया।

दास्तान-ए-बीजन और मनीज़ा

खुसरु बादशाह अपने पिता सियावुश की शत्रुता का बदला लेने और अक्वान दैत्य व अत्याचारी का नाश करने के बाद एक दिन राज सिंहासन पर बड़ा प्रसन्नचित्त बैठा था। इस शुभ अवसर पर एक वैभवपूर्ण समारोह आयोजित किया गया था। खुसरू याकूत के लाल प्याले में मदिरा पान कर रहा था और संगीत के आनन्द में डूबा हुआ था। उसके आस-पास बैठे नामी, शूरवीर, योद्धा और पहलवान इस संगीतमय ऐश्वर्यपूर्ण वातावरण से पूर्ण रूप में रस ले रहे थे। उनके हाथों में लाल शराब के प्याले थे और चारों तरफ ताज़ा खिले सुन्दर गुलाबों की सुगंध फैली हुई थी।

पहरेदार सावधानी की मुद्रा में बादशाह के आदेश की प्रतीक्षा में उनके चरणों में दृष्टि गड़ाये खड़ा था। अचानक संतरी बाहर से दौड़ता हुआ आया और पहरेदार को एक महत्त्वपूर्ण संदेश दिया कि अरमीनियों का एक जन समूह, जो ईरान और तूरान की सीमा के पास बसा हुआ है, न्याय माँगने आया है और बादशाह से मिलकर अपना दु:ख बयान करना चाहता है। पहरेदार फौरन बादशाह के समीप पहुँचा। सारी घटना सुनकर खुसरू शाह ने उन्हें दरबार में बुलाया।

अरमीनी सीना कूटते और शाह की दुहाई देते हुए अन्दर घुसे— "जहाँपनाह! हमारा शहर एक ओर से ईरान और दूसरी ओर से तूरान की सीमा से जुड़ा है। इस तरफ का हिस्सा वास्तव में हमारा जीवन है। हरे-भरे घास के मैदान और चरागाह, वृक्षों से भरे जंगल ही हमारे आधार हैं, जिसमें बेशुमार फलों के वृक्ष भरे पड़े हैं। मगर सुअरों ने अपनी थूथनी से ज़मीन खोद डाली है, मज़बूत खूंखार दाँतों से दरख्तों की जड़ों को काट डाला है। इनके आतंक से घरेलू जानवर तक घबराए हुए हैं और हम खेत, फसल और घास के मैदान के इस तरह रौंदे जाने से बर्बाद हो चुके हैं। अब आप हमारी मदद करें सरकार।"

खुसरू उनके नुकसान की जानकारी पाकर दुखी हो उठा। उसने आदेश दिया कि एक सोने का थाल लाया जाये और उसको तरह-तरह के हीरे-जवाहरात स भर दिया जाए। जब थाल भर गया तो उसने पहलवानो की ओर गर्दन घुमाकर पूछा—"तुममे से ऐसा कौन है जो मेरे इस दु ख का भागीदार बने, आगे बढकर इस साहसपूण जोखिम को अपने कधो पर ले, जगल जाकर उन सुअरो को मार डाले और मुझसे उपहारस्वरूप ये जवाहरात भरा थाल ले ?"

किसी पहलवान के मुह से आवाज़ नही निकली। इस खामोशी को तोडती हुई बीज़न की आवाज़ उभरी। बीज़न के पिता गिव पहलवान को उसके इस दुस्साहस पर क्रोध आया। उसने बेटे को बुरी तरह फटकारा—

बे फरजन्द गुफ्त इन जवानी चराअस्त
बे नीरुइ खीश इन गुमानी चराअस्त
जवान अर चे दाना बुअद ब गोहर
आवी आज़माईश नगीरद हुनर
बे राही कि हरगिज न रफ्ती, मापोइ
बर शाह खैरहा मबर आब रुइ

(तुझे अपने यौवन पर इतना घमण्ड है और अपनी ताकत पर इतना गुमान है ! युवक चाहे जितने भी बडे और अच्छे खानदान वाला क्यो न हो, मगर कला की दक्षता तभी प्राप्त होती है, जब वह अभ्यास कर और परीक्षा म सम्मिलित हो। तुम बिना किसी अनुभव के यू इस काम का बीडा उठाना चाहत हो ? शाह के सम्मुख अपना सम्मान खोना चाहत हो ? छोटा मुह और बडी बात !)

पिता की इस लताड को सुनकर बीज़न का मन दुखा, मगर वह अपने इरादे पर डटा रहा। उसका यह व्यवहार देखकर खुसरू शाह ने उसकी प्रशसा की और गुरगीन पहलवान को आदश दिया कि वह बीज़न का मार्गदशक बने।

बीज़न ने यात्रा की तैयारी आरम्भ कर दी। उसन अपने सग सधाये हुए बाज और चीते लिए और गुरगीन पहलवान के साथ जगल की ओर चल पडा। माग म वे शिकार भी खेलते जा रहे थे। जब जगल पहुचे ।

सबसे पहले उन्होंने एक बहुत बडा आग का अलाव जलाया। उस पर शिकार किया हुआ गूरखर (जगली गधा जो जेब्रा की तरह होता है) भूना और पेट-भर खाया। खाने के बाद गुरगीन न कहा—"मुझे सोने के लिए कोई स्थान चाहिए।"

यह सुनकर बीज़न ने कहा, "भला यह कोई सोने का समय है? हम तो जागकर सुअरो का मुकाबला करना है। तुम तालाब के किनारे बैठकर प्रतीक्षा करो। यदि कोई सुअर मेरी तलवार से बचकर भागे तो तुम उसका सिर अपनी गदा से कुचल देना।"

बीज़न की बात गुरगीन को पसन्द नही आई। वह इस महत्वपूर्ण काम मे बीज़न का हाथ नही बटाना चाहता था सो उसने उत्तर दिया "देखो! इस महान काम का बीडा तुमने उठाया है, मैंने नही। इस काम के बदले मे तुम्हें हीरे-जवाहरात मिलेंगे, मुझे नही। मेरा काम तुम्हें रास्ता बताना है। वही करूगा, समझे!"

बीज़न गुरगीन की यह बात सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। एक तेज खजर लेकर वह अकेला ही जगल की ओर चल पडा। सुअरो ने वास्तव मे जगल का बुरा हाल कर डाला था। इस समय भी वे ऊधम मचाए हुए थे। एक सुअर ने बीज़न पर आक्रमण कर उसका जिरह-बख्तर फाड डाला। बीज़न ने खजर निकालकर उस सुअर के दो टुकडे कर डाले। अन्य सुअर भी उसके हाथो मारे गए। बीज़न न उनके सिर काटकर एक किनारे जमा कर लिये ताकि वह ईरान मे शाह को अपना कारनामा दिखाकर अपनी वीरता और पराक्रम की दाद ले सके।

इधर जब गुरगीन को इस घटना का पता चला तो वह ईर्ष्या से पेच व ताव खाने लगा। अपनी बदनामी और बीज़न की वीरता की चर्चा के बारे मे सोचकर वह तरह-तरह के षड्यत्र रचने लगा। मगर ऊपर से उसने बीज़न पर अपनी प्रसन्नता ही व्यक्त की।

रात को जब दोनो पहलवान मदिरा पी रहे थे तो गुरगीन ने कहा कि "यहा से, कुछ दूर पर एक जगल है। वहा के पानी से गुलाब की सुगध आती है और वातावरण इत्र और लोबान से मदमाता रहता है। घास ऐसी हरी और मुलायम है जसे रेशम बिछा हो। इस ऋतु मे वहा पर सदा

मेला लगता है। वहा पर सुन्दर कन्याए जमा होती हैं। उनकी अठखेलिया और अगड़ाइया, मुस्कान और अन्दाज ऐसे होते हैं कि आदमी का दिल बेकाबू होकर उसके सीने से निकल जाए। इन्ही कन्याओ म अफरासियाब की लड़की मनीजा भी होती है जो सितारों के बीच चन्द्रमा की तरह जगमगाती है। उसकी सौ कनीजें भी साथ होती हैं।

हमे दुख्ते तुर्कान पोशीदेह रुइ
हमे सर व क्द व हमे मुश्क बुइ
हमे रुख पुर अज गुल, हमे चश्मे ख्वाब
हमे लब पुर अज मेइ, बे बूए गुलाब

(हर तुर्की लड़की का चेहरा नकाब से ढका रहता है और उनका तन इत्र से गमकता रहता है। उनके कपोलो पर फूल खिले होत हैं और होठो से गुलाब की गध भरी मदिरा टपकती रहती है। उनकी आखो मे एक मस्त खुमार छाया रहता है।)

"यहा से केवल दो रोज का सफर करके हम वहा पहुच सकते हैं। हम वहा चलें, उनमे म कुछ लडकिया पसन्द करके खुसरू शाह के पास लौट जाए।"

बीजन इस खबर से प्रसन्न हुआ। दोनो यात्रा पर निकल पडे। एक दिन बाद व उस हरे भरे स्थान पर पहुचे और वहा दो दिन विश्राम किया।

इधर मनीजा अपनी सौ कनीजो के साथ आई हुई थी। लगभग चालीस अम्बारी पर सोना चादी और सगीत के साज भरकर आए थे। कार्यक्रम आरम्भ हुआ। शोर-हगामा नृत्य गाना और सगीत-खुशी का दरिया उमड पडा। गुरगीन को मनीजा के आने की खबर मिल चुकी थी। उसने फौरन बीजन को बुलाया कि वहा सगीत और नृत्य की महफिल शुरू हो गई है। बीजन न जब यह सुना तो तय किया कि वह आगे चलकर उसके समीप पहुचेगा और तूरानी समारोह के रीति रिवाज को समीप से देखेगा। साथ-ही-साथ उन अप्सराओ के रूप-लावण्य का रस-पान भी करेगा।

यह सोचकर बीजन ने अपने आपको शाही मुकुट और वस्त्र-आभूषण से सुसज्जित किया और घोडे पर बैठकर हवा से बातें करने लगा। मैदान के समीप पहुचकर उसने सब के घने वृक्ष के नीचे अपना घोडा रोका ताकि

धूप की गर्मी से बच सके। पूरे बाग मे सगीत का शोर फैला हुआ था। खूब सूरत कनीजें इधर से उधर आ जा रही थी। बीजन छुपता छुपाता आगे बढ़ा और घोडे से उतरकर एक ओर खडा हो गया। अचानक उसकी दृष्टि मनीजा पर पडी तो उसके होश उड गए। क्या ऐसा अद्भुत सौदय स्वग के *अतिरिक्त धरती पर भी हो सकता है* !

उधर मनीजा की दृष्टि वृक्ष के नीचे खडे बीजन पर पडी। ऐसा सजीला जवान उसने पहले कभी नही देखा था। शाही वस्त्र और मुकुट म उसका मुख मण्डल सूय के समान दमक रहा था। मनीजा ने अपनी दाया को समीप बुलाया और आदेश दिया कि वह इस युवक के पास जाए और पूछकर आए कि वास्तव मे वह कौन है ? इसान है या जिन्न ? उसका नाम क्या है ? वह कहा का रहने वाला है ? कहा से आया है ? और उसने इस बाग मे क्योकर प्रवेश किया है ?

दाया लपकती हुई बीजन के समीप पहुची और अपनी शहजादी के प्रश्न पूछने लगी। बीजन इन जिज्ञासा भरे सवालो को सुनकर खुश हुआ। उसने बताया, "मैं गिव पहलवान का बेटा हू। यहा पर सुअरा का नाश करने के लिए आया था। उन सबके सिर काटकर छोड रखे हैं ताकि ईरान के शाह के सम्मुख पेश करू। इधर से गुजरते हुए जब मैंने यह 'जश्नगाह' सजा धजा देखा तो वापस जाना टाल दिया। मैंने सपने मे भी नही सोचा था कि मैं कभी अफरासियाब की पुत्री का दीदार करूगा।'

इतना कहकर बीजन ने बहुमूल्य वस्त्र और जवाहरात स जडा हुआ एक जाम दाया को दिया और कहा कि वह इस काम म उसकी सहायता करे। काम अजाम देने पर वह उसको इनाम से मालामाल कर देगा।

दाया न बीजन की बातें मनीजा को जाकर बताई। मनीजा न जवाब मे कहलवाया—

> गर आई खरामा बे नजदीके मन
> बर अफरुजी इन जाने तारीके मन
> बे दीदार तो चश्म रौशन कुनम
> दर व दश्त व खरगाह गुलशन कुनम

(यदि तुम मेरे नजदीक आने की तकलीफ उठाओ तो इस अधेरे दिल

मे खुशी की धूप छिटक जाए। तुम्हारे दीदार से आँखों के दीप जल उठेंगे और तुम्हारे वजूद से मैदान व जगल लहलहा उठेंगे।)

बीज़न को बिन मागी मुराद मिल गई थी। वह पैदल ही मनीज़ा के खेम की ओर चल पडा। मनीज़ा ने देखते ही उसे अपने बाहुपाश मे भर लिया। फिर उसके पैर गुलाब और इत्र से धोकर स्वादिष्ट व्यजनो से भरा 'दस्तरखान' बिछाया।

पूरे तीन दिन और तीन रात हर क्षण बीज़न और मनीज़ा एक-दूसर मे डूबे पडे रहे। वे खेमे से निकलना भी भूल गए थे। चौथे दिन जब मनीज़ा को राजमहल लौटना था तो उसका मन बीज़न के वियोग से विह्वल हो उठा। उसका दिल बीज़न के दीदार स भरा नही था। अन्त मे उसने कनीज़ो को आदेश दिया कि बीज़न की मदिरा मे नीद की दवा मिला दो। बीज़न मदिरा पीत ही बेहोश हो गया। इत्र की सुगन्ध से भरी अमारी मे बीज़न को सुला दिया गया।

मनीज़ा की सवारी जब शहर क नज़दीक पहुची तो बीज़न को चादर म लपेटकर रात क अधेरे म शहज़ादी के महल मे ले जाया गया। वहा उसके कानो म होश आने की दवा डाली गई। जब बीज़न को होश आया तो उसने अपने-आपको मनीज़ा क बाहुपाश म पाया। अब बीज़न समझ गया कि गुरगीन न उसको एक हसीन जाल मे फसा दिया है। मनीज़ा उसको होश म आता देखकर फौरन उठी और शराब का जाम पश करत हुए बोली—

बे खर मइ, म खूर हीच अन्दूह व ग़म
कि अज़ ग़म फजूनी न यावद न कम

(शराब पी, गम न कर, अब दु ख से क्या हासिल ?)

अगर शाह यावद ज़े कारत खबर
कुनम जान शीरिन बे पीशत सपर

(यदि अफरासियाब को तरा पता चल गया और उसने तुम्ह हानि पहुचानी चाही तो मैं अपनी जान कुर्बान करके तेरी रक्षा करूगी।)

इस तरह से बीज़न ने कुछ दिन हसीना के झुरमुट म गुज़ारे। मगर मस्ती से भरे ये दिन जल्दी ही समाप्त हो गए। महल के दरबान को सब-कुछ पता चल गया। वह मृत्युदण्ड के भय स दौडा हुआ शाह अफरासियाब

के समीप पहुचा और बताया कि "शहज़ादी ने एक ईरानी आशिक को महल मे छुपा रखा है।"

यह सुनकर अफरासियाब गुस्से से इस तरह से कापने लगा जैसे हवा के तेज बहाव म बेदे मजनू वृक्ष की शाखाए। उसकी आखो म खून उतर आया। उसे अपनी शहजादी की इस हरकत से गहरा दु ख पहुचा। उसने सोचा—"लडकी की जात बुरी होती है। क्या फकीर, क्या अमीर, सबको अपनी बेटी की पवित्रता की चिन्ता खाए जाती है।" उसके बाद उसने गरसिवज़ को आदेश दिया कि "शहज़ादी के महल को चारो तरफ स घेर लिया जाए और बीज़न को बन्दी बनाकर मेरे सामने पेश किया जाए।"

गरसिवज़ जब शहज़ादी मनीज़ा के महल के समीप पहुचा तो उसे बाहर से ही सगीत, नृत्य और साज़ की आवाजें सुनाई पडने लगी। उसने अन्य सवारो को महल की छत, दरवाज़ो, खिडकियो पर सावधान रहने को कहा और स्वय ऊपर से महल के अन्दर कूदा तो क्या देखता है कि बीजन सुन्दर लडकियो के झुरमुट म बैठा शराब पी रहा है और सगीत का भरपूर आनन्द ले रहा है। गरसिवज़ के शरीर का खून उबलने लगा। उसने चीखकर कहा कि "ओ ज़लील इसान ! तू आज शेर के पजे मे आ फसा है। अब देखता हू कि यहा से कैसे बचकर जाता है !"

बीज़न उस समय निहत्था था। अचानक इस आक्रमण और ललकार से घबरा उठा मगर दूसरे ही क्षण अपने पर काबू पा लिया और मोजे म छुपे खजर को शीघ्रता स खीचकर निकाला और बोला, "आज तुझे मैं नही छोडूगा।"

गरसिवज़ ने जब उसका यह रूप देखा तो अपनी चाल बदल दी। उसने सौगन्ध खाई कि वह किसी प्रकार का कष्ट बीजन को नही पहुचायगा। फिर विनम्र चापलूसीपन की बातों स बहला-फुसलाकर उसने यह खजर बीज़न के हाथों से ले लिया और उसे बन्दी बनाकर शाह के सम्मुख पेश किया।

अफरासियाब ने उससे पूछा, "तुम हमारी सीमा म कैसे दाखिल हुए ?" बीज़न ने कहा, "मैं अपनी इच्छा स आपकी सीमा म दाखिल नहीं हुआ हू, बल्कि लाया गया हू। मैं सुअरो क नाश के लिए इधर आया था। उसी

बीच मेरा बाज़ खो गया। उसकी खोज मे निकला। रास्ते मे थककर एक सव के दरख्त के नीचे थोडी देर सुस्ताने के लिए ठहरा। नीद आ गई, और मैं सो गया। उधर से एक परी का गुज़रना हुआ। मुझे सोता देखकर उस शरारत सूझी और उसने मुझे उसी हालत मे जादू के जोर से उठाकर शहज़ादी मनीजा के महल की ओर लौटती अमारियो मे से एक म डाल दिया। जब मुझे होश आया तो मैंने अपने को महल मे पाया। इस घटना म न मैं दोषी हू और न मनीजा। सारा दोष उस शैतान परी का है।"

अफरासियाब ने उसकी बातो को झूठ समझा और बोला—"तू मक्कारी और फरेब का जाल बिछाकर तूरान पर कब्जा करना चाहता है और तूरानियो को तबाह करना चाहता है।"

बीजन ने कहा, "वीर हथियारो स लैस होकर रणक्षेत्र मे जाते हैं। मैं निहत्था युद्ध की कल्पना भी नही कर सकता। यदि बादशाह मेरी वीरता और शूरता का ही देखना चाहत है, मुझे घोडा और गदा दें। अगर मैं हज़ार तुर्कों मे से एक को भी जिन्दा छोडू तो मेरा नाम बीजन पहलवान नही।"

अफरासियाब बीजन की इस चुनौती से क्रोधित हो उठा और आदेश दिया कि 'शहर के चौराहे पर बीजन को फासी पर लटका दिया जाए।"

सिपाही बीजन को घसीटते हुए महल से बाहर लाए। बीजन की आखो से आसू की धारा बह रही थी। वह अपनी इस तरह की मौत से दुखी था। उसने इतनी दूर रहकर भी अपने देश के बुजुर्गों और पहलवानो को, अपने परिवारजनो को याद किया और पवन द्वारा उनके पास सदेश भेजा—

आया बाद बे गुज़र बे ईरान जमीन
प्यामी जे मन बर बें शाहे गुज़ीन
बे गर्दान ईरान रसानम खबर
व अज़ आन जा बे ज़ाबुलिस्तान बरगुजर
बे गुयश कि बीज़न बे सख्ती दुरुस्त
तन्श जीरे चगाले शीर नर अस्त
ब गुरगीन बेगू एइ यल सुस्त राइ
बे गुइ तो ब मन बे दीगर सराइ

(ओ पवन! मेरे देश जाकर शहशाह से मेरा हाल कहना कि मैं यहा

कैद हू। पहलवानो को मरी फासी के बारे मे बताना और जाबुलिस्तान जाकर रुस्तम से कहना कि वह प्रतिशोध के लिए कमर कस ले। उससे कहना कि बीजन पर मुसीबतो का पहाड टूटा है। वह वास्तव म एक खू ख्वार शेर के पजे मे फमा तडप रहा है। गुरगीन से कहना कि अरे षडयत्री ! परलोक मे तू कौन सा मुह लेकर जाएगा !)

बीजन को विश्वास हो गया था कि उसकी जिन्दगी की अन्तिम घडिया निकट आ गई हैं।

अकस्मात उधर स पीरान पहलवान का गुजरना हुआ। उसने दखा कि कुछ सिपाही फासी का तख्ता ठीक कर रहे हैं और फासी पर लटकाने क लिए लम्बा सा रस्सी का फदा भी लटका रहे हैं।

समीप जाकर उसन जाना कि यह सब कुछ बीजन क लिए है। उस धक्का लगा। वह बीजन के करीब पहुचा और उससे कारण जानना चाहा। बीजन ने सारी घटना विस्तार से बयान कर दी जिसे सुनकर पीरान का दिल पसीज गया। बीजन का नगा बदन, कमर के पीछे बधे-बधे दोनो हाथ, पीला मुख, सूखे पपडी पडे होठो को दखकर पीरान ने जल्लादो को आदेश दिया कि वे इस सिलसिले मे जल्दबाजी स काम न लें बल्कि उसकी दूसरी आज्ञा तक रुके रह। इतना कहकर वह बादशाह के समीप पहुचा और बीजन को क्षमा कर देने क लिए कहा। उसकी बाता को सुनकर अफरासियाब ने अपनी ख्याति और मर्यादा पर बटटा लग जाने की बात उठात हुए कहा कि 'मेरी नासमझ बटी ने मुझे इस बुढापे मे कही का नही रखा। जनता शाही अन्त पुर की महिलाआ पर उगली उठा रही है। फौज मरे ऊपर हस रही है। मैं अपन देशवासियो की दष्टि म गिर गया हू।"

सब कुछ सुनकर अफरासियाब को पीरान ने सान्त्वना दी और बीजन को क्षमा कर देन की विनती बार बार दोहराई। पीरान के निवेदन को अफरासियाब एकाएक ठुकरा न सका और उसने बीजन का मत्युदण्ड कम करके उसे कारावास म बदल दिया। उसन गरसिवज को आदश दिया कि "बीजन को हथकडी बेडी पहनाकर, जजीरो से बाधकर किसी अधे गहरे कुए म फेंक दो। उसके मुह को पत्थरा से ढक दो ताकि वहा सूय और चन्द्रमा की एक भी किरण का प्रवेश न हो और उस अधकार मे सिसक सिसककर वह

मर जाए। इसके बाद मनीज़ा को उसके महल से बिना मुकुट और राजसी ठाट के बाहर खीचकर लाया जाए और उसको इस कुए पर छोड दिया जाए ताकि वह देख सके कि जिस आशिक के साथ उसने रगरलिया मनाई थी, अब वह अधे कुए म सिसक सिसककर दम तोड रहा है। और उस गम मे तडप तडपकर मनीज़ा भी दम तोड दे।"

गेरेमिवज ने आदेश का पालन किया। मनीज़ा को नगे सिर, नगे पाव घसीटता हुआ कुए तक लाया और वीराने मे मनीज़ा को छोड दिया। मनीज़ा उस बियाबान मे आसू बहाती बीज़न के लिए तडपती रहती। फिर इधर उधर से भीख मागकर लाई रोटी को वह सूराख से हज़ार कठिनाइयो को तय करके किसी प्रकार बीज़न तक पहुचाती थी।

□□

इधर गुरगीन ने हफ्ते-भर तक बीज़न की प्रतीक्षा की। मगर जब वह नही लौटा तो वह उसको खोजने के लिए चल पडा। बहुत ढूढने पर भी बीज़न उसे नही मिला। अब उसे अपने किए पर बडा पछतावा हो रहा था। चलते-चलते वह उस स्थान पर पहुचा जहा पर बीज़न उससे बिछुडा था। वहा पर उसे बीज़न का घोडा मिला। जिसकी लगाम टूटी और जीन पलटी हुई थी। यह देखकर गुरगीन समझ गया कि उसके साथी पर कोई मुसीबत टूट पडी है। वह दु खी मन से ईरान लौट गया।

जब गिव को पता चला कि उसका पुत्र आ रहा है तो वह उसके स्वागत के लिए पहुचा। गिव ने देखा कि गुरगीन के साथ उसका बेटा बीज़न नही है, बल्कि उसका घोडा सिर झुकाए चला आ रहा है। गिव इस दृश्य को सहन न कर सका और मूर्च्छित होकर गिर पडा। जब उसे होश आया तो दु ख की पराकाष्ठा से अपना मुह और बाल नोचने लगा। सिर पर मिट्टी डालते हुए वह सिसकने लगा—"इस ससार मे वह मेरा इकलौता बेटा था जो मेरी आज्ञा का पालन करता था। मेरे दु ख-सुख का भागीदार था। मेरे दुर्भाग्य ने उसे मुझसे छीन लिया और मुझे जीते जी मौत के मुह मे धकेल दिया है।"

यह करुण विलाप सुनकर गुरगीन को झूठ बोलना पडा—"हम सुअरो के साथ शेर की तरह लडे और एक एक करके सबको समाप्त कर दिया।

उनके दाता को जबडे समेत उनके मुख से निकालकर हम खुश खुश शिकार गाह से घर को लौट रहे थे, तभी गूरखर दिखे। बीजन ने अपने घोडे शबरंग को गूरखर के पीछे दौडाया। जैसे ही गूरखर की गर्दन में कमन्द का फन्दा कसा, बीजन उसके पीछे भागा और दोनो एकबारगी मेरी आखो से ओझल हो गए। मैंने पर्वत, मैदान एक कर दिए, मगर इतना खोजने पर भी बीजन का पता न चला।"

उसके इस बयान पर गिव को विश्वास न हुआ और वह रोता हुआ उसे साथ लेकर बादशाह के दरबार में गया और बादशाह से निवेदन किया कि वह स्वय गुरगीन से प्रश्न करे। जब बादशाह ने प्रश्न किए तो गुरगीन ने मुअर के दात दिखाते हुए उल्टे-सीधे जवाब दिये। सच और झूठ को मिलाकर कुछ ऐसी खिचडी पकाई कि शाह समझ गया कि दाल में कुछ काला है। उसने आदेश दिया कि गुरगीन को कारागार में डाल दिया जाए और गिव को सान्त्वना देने लगा—"मैं सवारो को चारो दिशाओ में भेजता हू कि बीजन का पता लगाए। यदि वे इस उद्देश्य में कामयाब नही होते हैं तो तुम इससे दिल छोटा न करना बल्कि बहादुरी और सब्र से उस दिन की प्रतीक्षा करना, जब सारी धरती हरा लिबास पहनेगी, फूल और फलो से वृक्ष लद जायेंगे। उस समय जामे जहानुमा' में मैं तेरे बीजन को देखूगा कि आखिर वह कहा छुपा हुआ है। तुम्हे तो मालूम है कि उसमे मैं सात देशो को देख सकता हू और ससार की कोई चीज ऐसी नही है जो उस जाम मे मुझसे छुपी रहे।' गिव प्रसन्न मन दरबार से बाहर आया। जो सवार बीजन को ढूढने निकले थे, वे ईरान-तूरान को छानकर आ गए। उन्हे बीजन का कुछ पता न चला।

नौरोज का दिन। वसन्त ऋतु का आगमन। पूरी धरती हरियाली से भर गई। गिव पीला चेहरा और उदास-दुखी मन लेकर शाह के सम्मुख उपस्थित हुआ और उन्हे जाम की बात याद दिलाई। बादशाह ने मोतियो से जडे उस जाम को मगवाया और स्वय रूमी कबा पहनी और खुदा के सामने खडे होकर गिडगिडाया और प्रार्थना की। इसके पश्चात उसने जाम मे देखा। पूरा ससार, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पहाड, मैदान अर्थात पूरा भूमण्डल चलचित्र की तरह उस जाम मे झलकता हुआ खुसरू शाह की

आखो के सामने घूम रहा था। एक-एक करके सात देशो को जब वह देख चुका तो उसके सामने से तूरान गुजरा। वहा पर उसे बीजन एक अधे कुए म कैद नजर आया। कुए के समीप बडे खानदान की एक लडकी को बैठे देखा जो दु खी और उदास थी। उसने फौरन गिव को बीजन के जीवित होने की खबर दी।

"मैं उसके दु ख को देखकर तडप उठा हू। वह भी उस अधे कुए मे कैद अपने सगे सम्बन्धियो से पूरे रूप से निराश होकर दु ख मे डूबा किसी बेंत की शाख की तरह काप रहा है। उसकी आखो मे आसुओं का सैलाब उमड रहा है। उसको महसूस हो रहा है कि ऐसी जिन्दगी से तो मौत अच्छी है।"

जब सबको सत्यता का पता चला तो वे बोले कि बीजन की स्वतत्रता केवल रुस्तम के हाथ म है। खुसरू ने फौरन रुस्तम को एक पत्र लिखा और गिव को रुस्तम के समीप जाबुलिस्तान भेजा। गिव दो रोज की यात्रा एक ही दिन म तय करके जाबुलिस्तान में रुस्तम के समीप पहुचा। रुस्तम को जब सारी घटना का पता चला तो वह बीजन के लिए गम और गुस्से से व्याकुल हो उठा और उसकी आखो से खून के आसू टपकने लगे। गिव की पत्नी रुस्तम की बेटी थी और बीजन उसका नवासा था। गिव की बहन भी रुस्तम की पत्नियो म से एक थी। गिव न रुस्तम से कहा—"मैं उस समय तक घोडे स जीन नही उतारूगा, जब तक बीजन का हाथ अपने हाथो म स्पर्श न कर लू और उसकी सारी जजीरो को तोडकर दूर न फेंक दू।" इस प्रण के बाद गिव चन्द दिन रुस्तम का मेहमान रहा और फिर वे दोनो खुसरू बादशाह के सम्मुख उपस्थित हुए।

खुसरू शाह न रुस्तम के स्वागत मे एक वैभवपूर्ण भोज और समारोह के आयोजन का आदेश दिया। शाही बाग मे एक दरख्त के नीचे तख्त बिछाया गया और रुस्तम को सोने का ताज पेश किया गया।

रुस्तम के तख्त के ऊपर जो वृक्षनुमा छत्र था, वह मुकुट और सिंहासन पर छाया किए हुए था। उसका तना चादी का, शाखाए सोने और पत्तिया पन्ने की थी और उनसे लटकते गुच्छे मोतियो के थे। अकीक से बने लाल फूल वृक्ष मे पत्तियो के बीच खिले थे जो किसी सुन्दरी के कानो के बालो की तरह हिल रहे थे। पेड के तने म सुगन्धित मदिरा भरी हुई थी। शाह के

आदेश से रुस्तम उस सिंहासन पर बैठा। इसके बाद शाह ने बीजन की स्वतन्त्रता के बारे मे पूछा कि यह जोखिम कसे उठाया जाएगा। रुस्तम के अलावा दूसरा कोई नहीं है, जो बीजन को तूरान की सीमा से स्वतन्त्र कराके ला सके। रुस्तम ने इसको अपना कतव्य समझा और यह जोखिम उठाने क लिए राजी हो गया। "मैं शाह के आदेश का पालन करने के लिए हर प्रकार से कमर कसे हुए हू चाहे मुझे इस राह म कितनी ही कठिनाइया क्यो न उठानी पडें।"

गुग्गीन रुस्तम के कहने स स्वतन्त्र कर दिया गया। शाह खुसरु के पूछने पर कि "किस प्रकार फौज और योद्धाओ का वह ले जाएगा?" रुस्तम ने उत्तर दिया—"सीधी उगली मे घी नही निकलेगा बल्कि झूठ और फरेब से ही यह समस्या हल होगी। यह काम इतनी खामोशी से होना है कि किसी को पता न चले ताकि बीजन को किसी प्रकार की हानि पहुचे। इसलिए मैं सौदागर बनकर तूरान जाऊगा। बडे मलोप के साथ वहा रहूगा। इसके लिए मुझे बहुत सारा धन-दौलत व हीरे जवाहरात की आवश्यकता पडेगी क्योकि मैं उन्हें बेचूगा भी, सौदा भी करूगा और कभी-कभी इनाम के रूप मे किसी को दूगा भी।"

रुस्तम अपन साथ शूरवीरो और एक हजार दक्ष घुडसवारो को लेकर तूरान की ओर चल पडा। सीमा के पास घुडसवारो को रोककर स्वय सात वीर पहलवानो के साथ तूरान म दाखिल हुआ। उसका रूप सौदागरो वाला था। उनके साथ सौ ऊट सामान से भरे थे और दस ऊटो पर मोती भरे हुए थे।

जब वे खतन नगर म दाखिल हुए तो उनकी मुलाकात पीरान से हुई जो शिकार खेलकर लौट रहा था। रुस्तम मोतियो से जडा एक बडा जाम लेकर उसके पास गया और अपना परिचय देता हुआ बोला—"मैं सौदागर हू। यहा पर मोती बेचने और जानवर खरीदने आया हू। यदि आपकी कृपा-दृष्टि मेरे उपर पड जाए तो मैं अपना काम सुचारु रूप से कर सकूगा।"

इतना कहकर उसन वह जाम पीरान को भेंट किया। मोतियो जडे उस जाम को जब पीरान ने देखा तो दग रह गया। उस भेंट को कबूल करके उसने रुस्तम को प्रेमपूवक घर आने की दावत दी और कहा कि वह उसके घर में

अतिथि बनकर रहे मगर रुस्तम ने धन्यवाद देते हुए उसका अतिथि बनने से इनकार किया और बताया कि मैं शहर से बाहर ही ठहरूगा। पीरान ने उसकी रक्षा के लिए कुछ रक्षको को आदेश दिया। रुस्तम ने एक मकान किराये पर लिया और अपनी सौदागरी के साथ साथ वह वहा रहने लगा। काफी दिन तक लोग रेशमी कपडा, दीबा, मोती आदि खरीदने उसके यहा आते-जाते रहे।

एक दिन मनीजा परेशान हाल रुस्तम के पास पहुची। सलाम-दुआ करने के बाद उसने बडी बेताबी से रुस्तम से पूछा, "ए सौदागर! तुम तो ईरान से आ रहे हो। वहा के कुछ हाल बताओ। शाह, पहलवान गिव और गुरदज कैसे हैं? क्या बीजन के बारे मे कोई समाचार ईरान पहुचा है? बीजन अधे कुए मे जजीरों से बधा कैद है। उसे छुडाने के लिए क्या उसके पिता गिव ने कोई तरकीब सोची है?"

रुस्तम के कान उसकी बातो को सुनकर खडे हुए मगर बनावटी क्रोध दिखाते हुए कहा—"न तो मैं खुसरू शाह को जानता हू, न गिव और गुरदज को। जिस नगर म खुसरू शाह रहता है, वहा का मैं नही हू।"

रुस्तम ने उसका सिसकना और बिलखना देखकर उसके लिए भोजन मगाया और प्रश्न करना आरम्भ किया। मनीजा ने बीजन के बारे मे सारी घटना आरम्भ से लेकर अत तक बताई फिर उसके बाद अपना परिचय दिया

मनीज़ा मन्म दुख्त अफरासियाब
बरहना न दीदेह तन्म अफताब
कनून दीदेह पुर खून व दिल पुर ज़े जद
अज इन दर बेदान दर, रुखसारे जर्द
हमी नान कशकीन फराज़ आवरम
चनीन रा द इज़द व कजा बर सरम
बराए यकी बीज़न शूरे बख्त
फतादम ज ताज व फतादम ज़े तख्त

(मैं अफरासियाब की लडकी हू जिसके नगे तन का स्पर्श सूय की किरण ने भी कभी नही किया था। मगर आज मेरे नैन सावन भादो के

बादल की तरह मूसलाधार बरस रहे हैं। मुख पीला और चेहरा मुर-झाया हुआ है। सीने म दद का तपन और दिल तडप रहा है। मैं दर-दर की ठोकरें खा रही एक शहज़ादी हू। जो कभी मोतिया मे खेलती थी वही आज दो रोटी के लिए दूसरो के आगे हाथ फैला रही हू। खुदा ने मेरे भाग्य मे यही लिखा था। बीजन के प्रेम ने मुझसे राज-पाट भी छीना और मेरा सम्मान भी। अन्त मे मनीज़ा ने कहा कि सौदागर ! अगर तुम ईरान लौटना तो शाह के दरबार मे गिव और रुस्तम से बीजन का हाल ज़रूर कहना।)

रुस्तम ने अधिक भोजन लाने का आदेश दिया। फिर एक भुने मुर्गे को रोटी मे लपेटा और उसके अन्दर अपनी अगूठी छिपा दी। फिर मनीज़ा को वह पोटली देता हुआ बोला—"बेचारे को यह भोजन दे देना।" मनीज़ा भागती हुई आई और वह पोटली कुए के अन्दर डाली। तरह-तरह के व्यजन देखकर बीजन आश्चय से बोला—"यह सब कहा से ले आई हो ?" मनीज़ा ने कहा —"एक बहुत अमीर सौदागर ईरान से व्यापार की खातिर आया हुआ है। उसी ने तुम्हारे लिए यह खाना भेजा है।"

बीजन ने जैसे ही खाने के लिए कौर लेना चाहा, उसकी अगुलिया अगूठी से टकराईं। फीरोज़े की अगूठी की वह बनावट देखते ही बीजन पहचान गया और प्रसन्नता से हसने लगा। उसकी हसी की आवाज़ मनीज़ा ने जब सुनी तो वह आश्चय से पूछने लगी कि उस अधकार मे रहते हुए भी तुम्हे ऐसा क्या याद आ गया कि आज यू हसी आ गई ?

पहले उसने मनीज़ा से वफादारी की सौगन्ध ली, फिर उससे कहा कि वह उस सौदागर के पास जाए और पूछे कि क्या वह 'रख्श' घोडे का स्वामी है ?"

मनीज़ा भागती हुइ रुस्तम के पास पहुची और बीजन का प्रश्न उसके सम्मुख दोहरा दिया। रुस्तम समझ गया कि बीजन न लडकी से भेद कह दिया सो उसन अपना परिचय देते हुए कहा—"रात बढ रही है। तुम लौटो और कुए क ऊपर आग जलाओ ताकि मैं उस आग को देखता-देखता वहा ३ ।"

ी र तज़ी से इधन जमा करने लगी ताकि आग जला

सक। इधन के पवत म मनीज़ा ने आग लगा दी। रात की कालिमा लाल शोलों स कोलतार के समान पिघल पिघलकर समाप्त होन लगी।

रुस्तम ने जब आकाश को चूमत शोले भडकत देखे तो उसने खुदा के आगे सिजदे म सिर झुकाया और सातो पहलवानो को लेकर उस बियाबान की ओर चल पडा। जब व कुए के पास पहुचे तो सातो पहलवानो ने कुए पर रखी भारी शिलाओ को हटाना चाहा मगर वे अपने स्थान से टस से मस न हुइ। यह देखकर रुस्तम रक्श से उतरा, आगे बढा और खुदा का नाम लेकर उन शिलाओ को दाहिने हाथ से उठाया और चीन के मैदान की ओर लुढका दिया। उन शिलाओ के गिरने स सारी धरती काप उठी। फिर उसने कुए म कमन्द डाला ताकि बीज़न को अन्दर से निकाल सके। मगर निकालने से पहले उसने गुरगीन को क्षमा कर देने का वचन लिया। जब बीजन को रुस्तम ने ऊपर निकाला तो उसका नगा बदन बढे हुए बालो से और उगलिया लम्बे लम्बे नाखूनो से ढकी थी। उसके बदन पर हथकडी-बेडी के कारण जगह-जगह घाव थे जिनसे खून रिस रहा था। चेहरा पीला पडा हुआ था।

सब तजी स घर लौटे। वहा पर नहा धोकर सामान बाधने लगे और ऊटो पर लादन लग। रुस्तम ने मनीज़ा को पहलवानो के सग भेज दिया और स्वय बीज़न के साथ अफरासियाब की फौज से युद्ध करता सीमा पार निकल गया।

जस ही पहलवानो के पास रुस्तम और बीजन के आने की खबर मिली, वे सब उनक स्वागत क लिए चल पडे और उन्ह सम्मानपूवक खुसरू शाह के दरबार मे लाए। रुस्तम ने बीजन का हाथ पकडकर शाह के हाथा म दे दिया। बीजन से शाह खुसरू ने कहा कि "उस पर जो भी गुज़री है, कह सुनाए।' बीज़न ने कैद, प्रेम, अत्याचार और उस लडकी के बारे म विस्तार से बताया जो सार कष्ट की जड थी।

शाह ने सब कुछ सुनकर रोम की दीबा के सौ जोडे जिन पर हीरे जवाहरात टके थे, एक मुकुट और दीनारा स भरी दस थालिया, कनीज़ें, कालीन और अन्य बहुमूल्य चीज़ें बीजन को बख्शी और कहा कि ये सारे उपहार ले जाकर वह मनीज़ा को दे। इसके बाद शाह खुसरू ने बीजन को

उपदेश देते हुए कहा कि

वे रंजिश मफरसाइ व सर्दश म गोइ
निगर ता चे आउरदी उ रा बे रुइ
तो बा उ जहान रा बे शादी गुजार
निगाह कुन बर इन गर्दिश रुज़गार

(मनीजा को कभी दुख न पहुंचाना और न कभी उस की तरफ से लापरवाही बरतना बल्कि हमेशा उसका ख्याल रखना कि कहीं दुख से उसका चेहरा कुम्हलाने न पाए। बेशक उसके साथ हंसी-खुशी से भरे दिन गुजारना, मगर जमाने की गर्दिश से बेखबर मत होना।)

सिकन्दर और कैद-ए-हिन्दी

किसी जमाने मे हिन्दुस्तान म कद नाम का एक बादशाह हुकूमत करता था। एक बार दस दिना तक वह लगानार अजीबो गरीब सपने देखता रहा। अन्त मे चिन्तित हो उसने दश के सारे बुद्धिमानो को जमा किया। जब व आ गए तो उसने वे दसो सपने उन्ह कह सुनाए। मगर किसी ने भी उन सपनो की व्याख्या नही की, और न अथ बताया। एक दरबारी ने शाह स कहा—"बादशाह सलामत! यहा पर 'मेहरान' नाम का एक ज्ञानी रहता है जो शहर म कभी नही ठहरता है और हम नगरवासियो को तो मनुष्य ही नही समझता है। जगल मे रहता है, कद मूल फल खाकर गुजारा करता है और जगली जानवरो से बातें करके मन बहलाता है। केवल वही आपके इन सपनो की व्याख्या अर्थपूण ढग से कर सकता है। किसी और स कहने से कोई लाभ नही।"

कद बहुत खुश हुआ। घोडे पर बैठा और मेहरान की खोज मे जगल की ओर निकल पडा। अन्त मे शाह कैद ने मेहरान को ढूंढ ही लिया। कैद ने मेहरान से कहा—"जगल मे रहने वाले, जगली जानवरो के बीच जीवन बिताने वाले महात्मा! आपसे निवेदन है कि मेर सपनो को ध्यान स एक-एक करके सुनें और उनका अथ मुझे बताए।" यह कहकर शाह ने अपना पहला सपना बताना आरम्भ किया—

"रात को मैं तन्हा बडे आराम से भय, चिता, दु ख, उत्तेजना मे मुक्त सोया था। आधी रात गुजर चुकी थी कि मैंने सपने म एक घर देखा जिसम कोई दरवाजा नही था। केवल एक रोशनदान भर था जिसमे स एक बडा-सा हाथी निकल रहा था। हाथी निकल गया मगर उसकी सूड उसी रोशनदान मे फस गई थी।

"दूसरी रात को मैंने सपना दखा कि एक राजसिंहासन है जिस पर एक अनजान आदमी मुकुट लगाए बठा है।

'तीसरी रात मैंने टाट का एक टुकडा सपने म देखा जिसे चार लोग अपनी अपनी तरफ खीच रहे हैं। मगर वह टाट का टुकडा न फटता है और न लोग थकते हैं।

'चौथी रात मैंने सपना देखा कि एक प्यासा नदी के किनारे बैठा है। मछली उस पर पानी डाल रही है और वह उससे बचकर पीछे हट रहा है। वह आगे-आगे भागता है और पानी उसके पीछे दौडता हुआ बहता है।

"पाचवी रात का सपना कुछ यू था कि एक छोटा नगर है जिसके सारे नगरवासी अधे थे, मगर अधेपन से वे दु खी न थ। खरीदने व बेचने का कारोबार नगर मे अपनी सम्पूर्ण चहल-पहल के साथ चल रहा था।

"छठी रात मे एक दूसरा नगर सपने मे दिखा जहा के लगभग सभी लोग रोगी हैं। वहा का रिवाज ऐसा था कि वे लोग जो मृत्युशय्या पर दम तोड रहे है, तन्दुरुस्त लोगो को देखने जाने के लिए तडप रहे हैं।

"सातवी रात को मैंने जगल मे एक घोडा देखा जिसके दो हाथ, दो पर और दो मुह थे। वह दोनो तरफ से चर रहा था, मगर मल त्यागने का कोई प्रयोजन न था।

"आठवी रात को मैंने सपना देखा कि तीन मटके रखे हैं। दो मटके पानी से भरे हैं और एक खाली है। दो लोग भरे मटके मे पानी निकालकर खाली मटके म भर रहे थे। न खाली मटका भरता था, न भरा मटका खाली हो रहा था।

'नवी रात को मैंने सपना देखा कि एक मोटी-ताजी गाय धूप मे लेटी है। पास म उसका दुबला-पतला मरियल बछडा पडा है। गाय इतनी मोटी-ताजी होने पर भी उस बछडे से दूध पी रही थी।

"दसवी रात को मैंने एक विस्तृत चश्मा देखा जो हर ओर स फूट-फूटकर सारे जगल को भिगो रहा है, मगर स्वय उसका दहाना सूखा पडा है।'

जब मेहरान ने कद के सारे सपने सुन लिए तो उसे दिलासा देते हुए कहा कि इन सपनो से न तो तुम्हे हानि होने का सकेत मिलता है, न ही तेरे सम्मान को बट्टा लगता है। हा, यूनान से सिकन्दर एक बडी फौज लेकर

आ रहा है। वह ईरान से चल चुका है। यदि तुम अपना मान रखना चाहते हो तो सिकन्दर से युद्ध की न सोचना क्योकि तुम्हारी निबल फौज उसका मुकाबला नही कर सकती। तुम्हारे पास जो चार बहुमूल्य वस्तुए है, वे ससार मे किसी भी राजा महाराजा के पास नही हैं। तुम उन्ह सिकन्दर को भेंट करके अपनी मित्रता का हाथ बढ़ा सकत हो। पहली वस्तु है तुम्हारी कन्या जो सौदय मे स्वग की अप्सराओं से भी अधिक लावण्यमयी है। दूसरी चीज वह दाशनिक है जो तुमसे ससार भर का भेद कहता है। तीसरी चीज वह वैद्य है जो हर रोग की ओषधि जानता है। चौथी चीज वह प्याला है जिसका पानी न आग से, न धूप से गम होता है और न पीन से समाप्त होता है। अब मैं तुम्हारे सपनो का अथ बताता हू। वह शानदार घर छोटे से झरोखे के साथ यह ससार है। उस तग छेद से हाथी गुजर जाता है मगर सूड रह जाती है। यह इशारा उस राजा की तरफ है जो लालची और दुष्ट है और मत्यु के बाद बदनामी छोड जाता है।

"दूसरा सपना जिसमे सिंहासन पर अजनबी बठा देखा, उसका अथ है कि यह ससार नश्वर है। यहा की हर चीज नश्वर है। एक आता है और दूसरा जाता है।

"तीसरा सपना जिसमे टाट के टुकडे को चार लोग घसीट रहे हैं, वास्तव मे वह टाट का टुकडा खुदा की अटूट निष्ठा है जिसको चार विभिन्न धर्म के अनुयायी अपनी ओर खीचते हुए दीन ए खुदा को बचाने के लिए एक-दूसरे को जान के भूखे हो रहे हैं। इनमे पहला जरदुश्ती मत रखने वाला ईरान के आतिशकदा की पूजा करने वाला हैं। दूसरा मूसा के अनुयायी यहूदी है। तीसरा यूनान के दाशनिको मे से है और चौथा आदमी इस्लाम धम का मानने वाला है।

"चौथा सपना जिसमे प्यासा आदमी और पानी डालनी मछली देखी है उसका अथ है कि एक ऐसा समय आएगा जब लोग विद्या प्राप्त करेंगे, मगर उन्ह तिरस्कार मिलेगा और अनपढ को विद्या अपनी ओर बुलाएगी और वह उससे भागेगा। मगर इसके बावजूद ससार मे सम्मान अनपढ को मिलेगा और विद्वान दुखी एव निराश फिरेगा।

"पांचवें सपने म जो तुमने प्रसन्नचित्त अधे देखे हैं, वह इस बात क द्योतक हैं कि इस ससार मे कल बुद्धिहीन राज करेंगे और एक दूसर की खूब प्रशसा करेंगे। लोग एक-दूसरे के लिए मन मे घृणा रखेंगे, मगर ऊपर स शहद उगलेंगे। बगल मे छुरी होगी और मुह मे मुस्कान। कथनी-करनी, कहनी-सुननी मे फक होगा। भले लोग दुखी होंगे और अपमानित होकर घूमेंगे।

"छठी रात का सपना, रोगी का निरोगी के पास जाकर कुशल-क्षेम पूछने का अथ है फकीर अमीरो की खुशामद करेंगे। मगर उनसे उन्हें कुछ मिलने का नही, सिवा गुलामी और गरीबी के।

"सातवी रात का सपना जिसमे तुमने एक घोडा दो मुह और बिना मल त्याग के अग वाला देखा है, वह आदमी की लालची मनोवत्ति दिखा रहा है कि इसान को किसी प्रकार से धन-दौलत से सतोष नही होता है। और अधिक, और पाने की हविश उसे परेशान किए रहती है। जो मिलेगा उसका अश भर भी दान नही देगा, किसी दरिद्र पर कोई दया नही करेगा।

"आठवा सपना, जिसमे खाली और भरे मटके देखे हैं, वह भी उन भले इसानो और पण्डितो की ओर इशारा है जो सदा उपकार करते हैं मगर बदले मे उन्हें कुछ नहीं प्राप्त होता। यहा तक कि बारिश की बूदें धरती के हर कण को भिगोती हैं, मगर ये साधु उससे भी वचित रहते है।

'नवा सपना जिसमे मोटी ताजी गाय कमजोर बछडे का दूध पी रही है, वह भी उन्ही लोगो की ओर इशारा कर रही है कि जो वास्तविक हकदार हैं, उनका हक व ले रहे हैं जो वास्तव मे इसके अधिकारी नही है। यहा पर सुस्त और कमजोर बछडा वही है जो अपने दामन से सारे फूल चुन चुनकर दूसरो को देता है।

'दसवें सपन म वह चश्मा और फुटाव इस बात की ओर इशारा करत हैं कि उस देशका बादशाह सिकन्दर—जिसकी आख वह चश्मा है, वह अक्ल से अधा है मगर पूरे ससार पर विजय पाने का लालच रखता है।

"संक्षेप मे तुम सिकन्दर को प्रसन्न करो। दुख की छाया छट जाएगी।'

जब कद ने यह सुना तो उसका मन-मस्तिष्क सतोष से भर गया। मेहरान

की आखा और सिर का चुम्बन ले वह बहुत प्रसन्न और सतुष्ट भाव से लौटा।

□□

सिकदर ईरान के बाद हिदुस्तान आया। ऊबड खाबड रास्त से गुजरने लगा। जब नगरो तक पहुचता तो उसके पहुचने से पहले ही नगर का दरवाजा उसके स्वागत के लिए खुला मिलता। चलत चलते अन्त मे वह कैद के नगर मिलाद मे दाखिल हुआ। फ़ौज ने वहा पडाव डाला और सिकदर ने कैद को पत्र लिखा—"बुद्धिमान और सफल शाह वही है जो ऐसा काय न कर, जिससे चिन्ता बढे या उसका अन्त दु खद हो। शाह को ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए क्योकि आशा और निराशा का स्रोत वही है। उसी की कृपा स हम राजसिहासन पर बठे हैं और वास्तव में हम उसी की इच्छा और कपा से ससार पर हुकूमत कर रहे है। मैं तुम्हे यह पत्र लिख रहा हू ताकि बिना देर किए तुम मेरी खिदमत मे हाजिर हो। यदि तुमने देर की या लापरवाही बरती तो मैं धुन का पक्का हू। तुम्हारा तख्त व ताज रौंदकर रख दूगा।"

सदेशवाहक ने कैद के दरबार म पहुचकर सिकदर का लिखा हुआ सदश दिया। कद राजा न बडे आदर और सम्मान से सदशवाहक को समीप बुलाकर अपने पास बिठाया और कहा कि "मुझे सिकन्दर का फरमान पढकर बेहद खुशी हुई। मैं कभी भी उनके हुक्म से मुह नही मोडूगा। इस समय यदि मैं फौरन ही बिना किसी तैयारी के सिकदर के हुजूर मे पहुच जाऊ तो यह बात न सिकदर महान् को पसद आयेगी, न उस खुदा को जो हम सबसे महान् है।"

कद ने यह कहकर कलम-कागज मगवाकर सिकदर के पत्र का उत्तर लिखवाया जिसम खुदा की प्रशसा के बाद सिकदर को सम्बोधित करत हुए लिखवाया कि नेक इसान को यह शोभा नही देता कि वह अपने से बडे बादशाह का हुक्म न माने और उसके लिए यह भी उचित नही है कि वह कोई भेद उससे छुपाए। मैं उसको बताना चाहता हू कि मेरे पास चार चीजें है जो ससार मे किसी के पास भी नही है और न मेरे बाद किसी के पास होगी। मैं उन चीजो को एक के बाद एक सिकन्दर महान् को भेंट करना

चाहता हू । यदि उन्होने आज्ञा दी तो मैं स्वय उनकी खिदमत मे हाजिर हूगा।"

सिकन्दर ने जैसे ही पत्र पढा, उत्तेजित होकर सन्देशवाहक को दौडाया कि वह फौरन पूछकर आए कि वे चार चीजें क्या हैं ? मैंने ससार की हर अद्‌भुत वस्तु देखी है। कुछ भी मेरी नजरो मे छुपा नही है। आखिर मुझे विश्वास है कि खुदा न उस सब कुछ से अधिक कुछ भी नहीं रचा है।"

कैंद ने सदेशवाहक को बिठाया और बताया—

कि अगर बी न दश आफतावे बुलन्द
शवद तीराह अज रु-ए-अरजुमन्द
कमन्द अस्त गेसूअश हम रग-ए-कीर
हमी आयद अज़ दो लवश बू-ए-शीर
खम आरद वाला-ए-उ सर व वन
दर अफशान कुनद चुन सर आयद सुखन

(मेरी एक बेटी है जिसके तजस्वी मुख मण्डल को देखकर चढता सूय भी प्रकाशहीन हो जाता है। उसके काले कोलतार जसे केश कमन्द क समान लम्ब और बल खाए हुए है। होठ इतने निश्छल कि अभी तक उसमे दूध की बू आ रही है। उसके कद को देखकर सव का वक्ष भी लज्जा से झुक जाता है। जब वह बोलती है तो लगता है कि मुह से फूल गिर रह है। वह शात रहती है तो लाज और पवित्रता की मूर्ति लगती है। सक्षेप मे उसके समान ससार मे कोई दूसरी लडकी नही है।)

इस बयान के बाद कद राजा ने आगे बताया कि इसके अतिरिक्त मेरे पास एक प्याला है। यदि शाह उसको मदिरा या ठण्डे पानी से भर दें और दस वष तक अपने मित्रो के साथ मदिरा पान करते रह तो भी उसमे मदिरा कम नही होगी। तीसरे, मेरे पास एक एसा वद्य है जो आखो से बहे आसुओ को देखकर रोग पहचान लेता है। यदि वह सिकन्दर बादशाह के पास वर्षो रहा तो उसे कोई कष्ट कभी नही होगा। चौथा उपहार मेरे पास एक ज्ञानी के रूप मे है जो ग्रहो और उपग्रहो क बारे मे सब कुछ जानता है। वह ससार मे घटने वाली भविष्य की सारी घटनाए बता देगा। वास्तव म सिकन्दर को

उसकी भविष्यवाणी मे कोई चिन्ता या कष्ट नही होगा।

सन्देशवाहक जब कैद का सन्देशा लेकर सिकन्दर के पास पहुचा और उसने सब कुछ कह सुनाया तो उसे सुनकर सिकन्दर का मन प्रफुल्लित हो उठा। वह बोला—"यदि ये चारो वस्तुए उसने मुझे भेंट कर दी तो मैं शपथ उठाता हू कि उसके देश से जैसा आया था वैसा ही लौट जाऊगा।" इसके पश्चात् उसने दस बुद्धिमानो को पत्र देकर यह काम सौंपा कि वे सब अपनी आखो से ये सारी चीजें देखकर आए। जब उन्हे पूरा सतोष और विश्वास हो जाए तो वे आकर इस सत्यता की मुझे गवाही दें कि वास्तव मे उन्होंने ऐसी चार वस्तुए देखी है जो ससार मे न केवल दुर्लभ हैं बल्कि किसी और के पास ऐसी अदभुत चीजें नही हैं। इसके पश्चात उसने एक फरमान लिखवाया कि जब तक कद जीवित रहेगा वह हिन्दुस्तान का बादशाह रहेगा।

कद ने सिकन्दर के भेजे सज्जनो का आदर-सत्कार किया। फिर दूसरे दिन अपनी बेटी का उसने सोलह सिंगार के बाद सोने के सिंहासन पर बैठाया और बूढे बुद्धिमानो को समीप भेजा। उनकी निगाह जब उस अप्सरा पर पडी तो उन्होने पाया कि उसके लावण्यमयी प्रकाश से चारो दिशाओ की चमक फीकी पड गई थी। वे आश्चर्य से ठग रह गए। उनकी नजरें उसके मुख मण्डल से हटती ही न थी। पैरो को धरती ने जकड लिया था। जब काफी देर हो गई और बूढे बुजुर्ग लडकी को देखकर नही लौटे तो कैद शाह ने दासो को भेजकर देरी का कारण जानना चाहा। आकर उन्होंने बताया कि—"इससे पहले हमने इतनी सुन्दर लडकी राजमहल मे नही देखी है। हम सब उसके प्रत्येक अग की प्रशसा लिखेंगे।" वही हुआ। सबने उसके एक एक अग के बारे मे चन्द पक्तिया लिखी और उसी से पत्र पूरा-पूरा भर गया।

सिकन्दर ने उनका पत्र पढा और उनकी बातें सुनी तो चकित रह गया। पल भर की देर किए बिना उसने पत्र का उत्तर लिखा—"फौरन उन चार वस्तुओ को लेकर आ जाओ। इससे बढकर सबूत मुझे और क्या चाहिए। एलान कर दो कि इसके बाद कोई भी राजा को कष्ट न पहुचाए क्योंकि उसने मुझे वे चीजें भेंटस्वरूप दी हैं जो दूसरा कोई नही दे सकता है।"

राजा कद सिकन्दर महान का यह एलान सुनकर प्रसन्न हुआ कि वह सिकन्दर के आक्रमण से बाल-बाल बच गया और उससे पारिवारिक सम्बन्ध भी बन गया। इसके बाद उसने शाही खजाने को खुलवाया और उसमें से सबसे अधिक मूल्यवान हीरे-जवाहरात, मसनद, मुकुट चुना, फिर सौ ऊंटों पर यह सारा सामान लादा गया। दस खच्चर अपनी पीठ पर दीनारों का बोझ उठाए हुए थे। अन्य सौ ऊंटों पर चांदी और सोने के दरहम लदे हुए थे। दस हाथी शहजादी का सोने का तख्त उठाए हुए थे।

शहजादी आंसू बहाती हुई अपने मां-बाप से जुदा हो, उन चार उपहारों के संग सिकन्दर की ओर चल पड़ी। जब सजी धजी सिकन्दर के कक्ष में पहुंची तो उसके सफेद चेहरे पर काले केश अपना घेरा डाले हुए थे।

दो चश्मश च दो नरगिस अन्दर बेहिश्त
कि गुफ्ती कि अज़ नाज दारद सरिश्त
बे कद व बे वाला चू सर्वे खान
जे दीदार उ दीदेह व वद नतवान

(उसके नैन मानो स्वर्ग के नरगिस के फूल के समान खुमार और नाज व अदा के खमीर से बने हुए थे। कद सर्व के समान लम्बा था। उस पर दृष्टि टिक नहीं पा रही थी।)

सिकन्दर ने जब उस लड़की अर्थात शहजादी को देखा तो बरबस कह उठा—

सिकन्दर निगह कर्द - बाला ए-उ
हुमन मुए व रूए व सरापाए उ
हमी गुफ्त कायनात ए-चिराग ए जहा
हमी आफरीन, खानद अन्दर निहान
बर आन दाद गर कि स्पहर आफरीद
बर आनगूने वाला व चहर आफरीद

(यह लड़की नहीं, वास्तव में प्रकाश पिण्ड है। मन ही मन सिकन्दर खुदा की तारीफ़ करने लगा। शहज़ादी के बाल, कद, आंखों को निहारता

हुआ बोला—'जिस खुदा ने स्वर्ग और प्रकाश रचा है उसी ने यह शक्लो-सूरत भी गढ़ी है।")

इसके पश्चात् सिकन्दर ने पादरियों को आमंत्रित किया और ईसाई धर्म के अनुसार शहज़ादी से विवाह किया। उसके बाद खज़ाने का मुंह खोल दिया। शहज़ादी को सर से पांव तक आभूषणों से एेसा लाद दिया कि उसके लिए चलना तो दूर, पग उठाना भी मुश्किल हो गया।

सिकन्दर ने विवाह के बाद वैद राजा के भेजे दूसरे उपहारों को आज़माना शुरू कर दिया। सिकन्दर ने एक बर्तन गाय के घी में भरकर उसे दार्शनिक के पास भेजा कि वह उस तन पर मल ले ताकि उसकी थकन जाती रहे। दार्शनिक एक नज़र में सब कुछ समझ गया और हज़ार सुइयां उस घी में डालकर शाह को वापस भेज दिया। सिकन्दर ने लोहारों को बुलवाकर उन सुइयों से एक टुकड़ा बनवाकर उस दार्शनिक को भेजा। उसने फौरन उस काले लोहे से चमकता हुआ आईना बनाकर सिकन्दर के पास भेज दिया। सिकन्दर ने उसे गीला रखा ताकि उस पर ज़ंग लग जाए। फिर ज़ंग लगा दर्पण उसे वापस भेजा। इस बार दार्शनिक वैद्य ने उस दर्पण पर ऐसा मरहम लगाया कि वह ज़ंग रहित बन गया।

सिकन्दर ने उस दार्शनिक को समीप बुलाया और घी के उस बर्तन के बारे में पूछा। उसने उत्तर दिया कि "बादशाह सलामत! आपने घी से भरा प्याला भेजकर मुझ पर यह साबित करना चाहा था कि आप सब बुद्धिमानों व पण्डितों से हर दर्शन में महान हैं। मैंने उसका उत्तर दिया था कि पवित्र और बुद्धिमान लोग सदा इस बात के लिए तैयार रहते हैं कि वह हर कठिनाई को झेल लेंगे। दूसरे, मेरी बातें बाल से भी अधिक बारीक और आपका दिल लोहे की तरह ज़ंग लगा है। आपने मेरी बात का उत्तर दिया कि उम्र के इतने साल बीत गये और मैं ज़ंग लगा लोहा बन गया हूं। उस पर चढ़ी कालिमा कैसे उतरेगी? मैंने उत्तर में वह चीज़ भेजी जिससे कि लोहे पर ज़ंग नहीं लगता और कहलाया कि तेरे दिल को मैं ज्ञान और विद्या से चमका दूंगा।"

सिकन्दर ने दार्शनिक की बातें सुनी और खुश होकर उसे हीरे-जवाहरात से लाद दिया। मगर उसने वह सब कुछ लेने से इन्कार कर दिया और

कहा, "मेरे पास एक मोती है जो सोने चांदी से भी बहुमूल्य और प्रकाशमान् है। धन-दौलत तो शैतान की देन है, मगर यह खुदा का दिया उपहार है। इसको रखने के लिए न रात को पहरेदार की आवश्यकता पड़ती है, न यात्रा में डाकुओं से लुटने का डर रहता है। यह वह मोती है जिसका नाम विद्या ज्ञान है। इस सारगर्भित मोती के रहते मुझे किसी भी तरह के धन की आवश्यकता नहीं है।" दार्शनिक की सारी बातें सुनकर सिकन्दर चकित रह गया। आदर से उसके आगे नतमस्तक हो गया और उसकी भूरि भूरि प्रशंसा करता हुआ बोला—"मैं हृदय की गहराई से तुम्हारे ज्ञान की गरिमा और उपदेशों की महिमा का प्रशंसक हूं।"

उसके बाद सिकन्दर ने कैद राजा के उस वैद्य को अपने पास बुलाया और प्रश्न किया—"रोगियों में सबसे ज्यादा दुःखी कौन है?" वैद्य ने उत्तर दिया—"जो सबसे अधिक खाना खाता है। अधिक खाने से स्वास्थ्य गिर जाता है।" उसके पश्चात् वैद्य ने सिकन्दर से कहा कि "मैं आपको जड़ी-बूटियों से बनी एक औषधि दूंगा जिससे आप हमेशा भले चंगे रहेंगे। इस औषधि के खाने से भूख बढ़ती है और अधिक खाने से पेट खराब नहीं होगा। खून बढ़ेगा और ताक़त अधिक आएगी। चित्त प्रसन्न रहेगा। बुढ़ापा दूर भागेगा। मुख पर ताजगी रहेगी। बाल सफ़ेद नहीं होंगे। विचार पवित्र रहेंगे और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप जीवन से जल्दी निराश नहीं होंगे।"

औषधि का यह बयान सुनकर सिकन्दर ने कहा कि "आज तक मैंने ऐसी अनोखी औषधि के बारे में नहीं सुना है। यदि तुम मुझे वह औषधि ला दो तो मैं तुम्हें वचन देता हूं कि कभी भी तुम्हारी बुराई किसी के मुख से नहीं सुनूंगा। सदा तुम्हारे लिए अच्छा सोचूंगा।"

वैद्य वहां सघन जंगल में गया। उसे ज्ञान था इसलिए उसने ज़हरीली और बेकार की घास को अलग फेंका और मूल्यवान जड़ी बूटियां बटोरकर उनसे औषधि तैयार की और उससे सिकन्दर का शरीर धोया। वह ध्यानपूर्वक सिकन्दर की सेहत और तन्दुरुस्ती का ख्याल रखने लगा।

सिकन्दर चूंकि सोने की बजाय ऐश व मस्ती में रात गुजारता था जिसके कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। एक दिन वैद्य ने देखा कि

सिकन्दर की आखो से कमजोरी टपक रही है। उसका यह हाल देखकर वैद्य ने कहा—"रात-रात भर सभोग करने से जवान भी शीघ्र बूढा हो जाता है। मुझे लग रहा है, तुम तीन रात से सोए नही हो।"

सिकन्दर ने उसकी बात मानने से इनकार कर दिया। फिर भी वैद्य ने ताकत की ओषधि बनाकर रख ली। उस रात सिकन्दर बिना किसी सुन्दरी के अकेला सोया। सुबह जब वैद्य ने उसकी आखें देखी तो सतुष्ट होकर वह दवा फेंक दी। वद्य प्रसन्न था। उसकी सेवा देखकर सिकन्दर प्रभावित हुआ। इस खुशी म भोज और समारोह के आयोजन का हुक्म दिया। फिर वद्य से पूछा—"वह ओषधि जो इतनी मेहनत से बनाई थी तुमने फेंक क्यो दी ?" वैद्य ने उत्तर दिया कि "बादशाह ! कल अकेले सोए, यही उनके रोग की ओषधि है। इस कारण दूसरी ओषधि फेंकनी पडी।" सिकन्दर ने प्रसन्नता से कहा—"चन्द बोरे दीनार से भरे, सोने की जीन से सजा एक काला घोडा उसे इनाम मे दिए जाए।"

अन्त मे सिकन्दर ने उस अद्भुत जाम को मगाया और उसमे ठण्डा पानी भर दिया गया। सुबह तक पीने पर भी जब पानी समाप्त नही हुआ तो उसने उस बुद्धिमान् दाशनिक को बुलाया और पूछा—"हिन्दुस्तान जादू टोने का देश है। इस जाम का क्या भेद है जो इसका पानी कम नही होता ?"

उस बुद्धिमान् ने उत्तर दिया कि "इस जाम को बनाने मे कई साल लगे हैं। बडे-बडे ज्योतिषी कद बादशाह के दरबार मे जमा हुए थे जिन्होंने अपना मन मस्तिष्क निचोडकर ग्रहो की दशा, उपग्रहो का प्रभाव जानकर बडे मनोयोग स यह जाम गढा है। वास्तव मे यह जाम ज्योतिषियो के खून-पसीने स बना है। इसमे एक चुम्बकीय शक्ति है। जैसे चुम्बक लोहे को अपनी ओर खीचता है, उसी प्रकार से इसम कुछ ऐसी धातुए लगी हैं जो जाम में पानी के समाप्त होने से पहले ही प्रकाश म उपस्थित जलकणो को अपने म खीच लेती हैं। इसलिए यह सदा पानी से भरा रहता है। यह क्रिया हमारी आखो से छुपी हर पल, हर क्षण, मद गति से चलती रहती है।"

सिकन्दर को जाम की यह व्याख्या पसन्द आई और उसने प्रसन्नतापूर्वक एलान किया कि "मैंने जो वचन बादशाह कैद को दिया है, कभी नही

छोडूगा क्योकि उसने ऐसी चार चीजें मुझे भेंट की हैं, जो वास्तव म ससार म न केवल बहुमूल्य हैं, बल्कि किसी अन्य के पास नही हैं और उनका कोई जवाब दुनिया मे मौजूद नही है।"

इसके बाद सिकन्दर ने बहुत सारे उपहारो के साथ सौ सोने के मुकुट भेजे और जो सोना चादी उसके पास बच रहा था, उसको उसने वहीं पवत और मैदान म बिखेर दिया। यह सच है कि ससार म सिकन्दर के बाद किसी बादशाह ने इतनी धन दौलत नही देखी।

बहराम शाह और लम्बक सक्का

एक दिन बहराम बादशाह पहलवानों एवं बहादुरों के संग शिकार खेलने जा रहा था। राह में एक बूढ़ा आदमी लाठी टेकता हुआ, उसके सामने आन खड़ा हुआ और बोला—"जहांपनाह! हमारे शहर में दो आदमी रहते हैं। एक अमीर और दूसरा ग़रीब। अमीर का नाम बराहाम है, जो दरअस्ल कंजूस यहूदी है। जो ग़रीब है, उसको लम्बक सक्का के नाम से जाना जाता है। यह खुले दिल का हंसमुख इंसान है।"

बहराम शाह ने दोनों के बारे में विस्तार से जानना चाहा तो उस बूढ़े ने कहा कि लम्बक सक्का आधे दिन पानी बेचता है और उससे होने वाली आमदनी को मेहमानों के आदर-सत्कार में खर्च कर देता है और दूसरे दिन के लिए एक कौड़ी भी बचाकर नहीं रखता है। मगर बराहाम अपनी सारी धन-दौलत के साथ, सारे शहर में कंजूस यहूदी के नाम से जाना जाता है।

बहराम बादशाह ने पूरे शहर में मुनादी करा दी कि किसी भी आदमी को लम्बक सक्का से पानी खरीदने की इजाज़त नहीं है। शाम ढले बहराम शाह घोड़े पर बैठ अकेला ही सक्का के घर की तरफ चल पड़ा। दरवाज़े पर दस्तक दी और कहा कि मैं ईरानी फ़ौज से बिछड़ गया हूं। अब तुम्हारे दर पर पनाह लेने आया हूं। यदि तुम कहो, तो मैं रात यहीं गुज़ारूं, तुम्हें अपनी मर्दानगी की सौगंध, मुझे इजाज़त दे दो।

सक्का बहराम शाह की मीठी आवाज़ और बोलने के ढंग से प्रभावित हुआ और दरवाज़ा खोलकर कहने लगा—"ए सवार! अंदर आ जा, तेरे साथ दस आदमी और हों तो वे भी सर-आंखों पर।"

बहराम शाह यह सुनकर घोड़े से नीचे उतरा। सक्का ने बढ़कर घोड़े की लगाम पकड़ी और उसको एक किनारे ले जाकर बांधा। फिर बहराम को अंदर लाकर आदर से बिठाया और उसके आगे शतरंज की चौपड़ बिछाई ताकि अतिथि अकेलापन महसूस न करें। जब तक वह मोहरों को

इधर उधर करेगा, तब तक सक्का रात के भोजन की *तैयारी कर लेगा।* जब भोजन तैयार हो गया तो उसने बहराम शाह को 'दस्तरखान' पर बुलाया, शराब स उसकी आवभगत की और प्रेम से भोजन कराया। बहराम शाह सक्का के अतिथि-सत्कार स बहुत प्रभावित हुआ।

खाना खाकर बहराम बादशाह सो गया। जब सुबह उसकी आख खुली तो सक्का ने कहा कि "आज हमारे यहा और रहिए अगर कोई दोस्त हो जिसे आप बुलाना चाहें तो बुला लीजिए।" यह कहकर सक्का ने अपनी मशक उठाई और पानी बेचने चल दिया। सारे दिन सक्का इधर-उधर मारा मारा फिरा, मगर किसी ने उसका पानी नही खरीदा। थककर वह बाजार गया और अपना कुर्ता बेच दिया। मशक के नीचे रखने वाले कपडे से उसने अपना तन ढक लिया। खुशी-खुशी लम्बक सक्का ने उस पैसे से गोश्त खरीदा और घर आकर उसी आदर-सत्कार से अतिथि सेवा मे जुट गया और इस तरह से दूसरा दिन भी गुजर गया।

तीसरे दिन सक्का ने फिर बहराम शाह से रुकने को कहा। बहराम मान गया। सक्का बाजार की तरफ गया और उसने अपनी मशक एक बूढे आदमी के पास गिरवी रखी और उस पैसे से गोश्त खरीदकर जल्द घर लौट आया और महमान से कहा कि आज तुम भी खाना पकाने मे मेरी मदद करो। दोनो ने मिलकर खाना पकाया। फिर ईरान के शाह के नाम पर शराब का जाम मुह को लगाया।

चौथे दिन लम्बक सक्का ने बहराम शाह से कहा कि अगरचे मेरी इस झोपडी म तुमको कोई आराम नही पहुचा, फिर भी, तुम्हें अगर शाह ईरान का भय न हो तो दो सप्ताह मेरे यहा मेहमान रह जाओ। बहराम शाह ने इकार करते हुए कहा कि मैं तीन दिन तेरा अतिथि रहा, अब आज्ञा दे! अलबत्ता मैं तेरी महमाननवाजी का जिक्र किसी ऐसी महफिल मे जरूर *करूगा कि जिसस तुझे खुशी भी होगी और फायदा भी पहुचेगा।*

यह कहकर बहराम शाह शिकारगाह की ओर लौटा और सारे दिन शिकार खेलता रहा। जब शाम ढली तो वह चुपके से बराहाम यहूदी के यहाँ पहुचा। कुडी खटखटाई और कहा—"मैं शाही फौज से भटक गया हू। रास्ता जानता नही हू। इस अधेरी रात म फौज तक पहुचना मुश्किल

है। इजाजत हो तो मैं यही किसी कोने म रात बसर कर लू। तुझे कोई तकलीफ नहीं होने दूगा।"

नौकर ने बहराम गूर की बात कजूस यहूदी स जाकर कही। यहूदी ने इकार करते हुए कहा कि उसके घर मे कोई जगह नही है। बहराम बादशाह ने फिर अपना निवेदन दोहराया कि केवल रात भर ठहरने की जगह दे दो। मैं और कुछ नही मागता।

कजूस यहूदी चिढ़कर बोला—"बाबा, इस घर मे केवल एक नगा-भूखा यहूदी रहता है। तेरे लिए कोई जगह नही है। जा, लौट जा!"

बहराम शाह ने कहा—"अच्छा, अगर घर के अन्दर नही आने देते हो तो मुझे दरवाजे पर सोने की इजाजत दे दो।" कजूस यहूदी उसकी बात सुनकर पिघला और बोला—"तू दरवाज़े पर सोना चाहता है। अगर तेरी कोई चीज चोरी चली गई तो तू मुझी को तग करेगा। अच्छा अन्दर आ जा। लेकिन ख़बरदार जो मुझसे कुछ मागा। यह भी याद रख कि अगर तू मर गया तो तेरे कफन-दफन की जिम्मेदारी मुझ पर नही है।"

बहराम शाह दरवाजे के पास बैठ गया। अब कजूस यहूदी को तरह-तरह की चिन्ताए सताने लगी। आखिर इसके घोडे की रखवाली कौन करेगा! अजीब बेशर्म-बेहया आदमी है। वह फिर उत्तेजित सा बोला—"देख अगर तेरे घोडे ने लीद की या खुरो से फर्श की कोई इट तोड दी तो यह तेरी जिम्मेदारी होगी कि लीद को मदान मे फेंककर आए और टूटी इट के बदले नई इट लाकर दे।"

बहराम शाह न कजूस यहूदी की हर शत मान ली। घोडे को एक तरफ बाधा। म्यान स तलवार निकाली। नम्दे का बिस्तर और जीन का तकिया बनाया और टागें पसारकर सो गया।

कजूस यहूदी ने उसको सोया जानकर पहले घर का दरवाजा बन्द किया। उसके बाद दस्तरखान बिछाकर भोजन करना आरम्भ किया। बहराम शाह की तरफ मुह करके बोला—"मेरी बात ग़ौर से सुन, दुनिया मे जिसके पास होता है, वह मेरी तरह खाता है और जिसके पास नही होता है, वह तेरी तरह टुक-टुक ताकता रहता है।"

बहराम शाह ने करवट बदलकर कहा—"मैंने यह बात पहले भी

थी। मगर आज आखो से देख रहा हू।" खाना खाकर यहूदी ने शराब का जाम भरा और बहराम शाह को सम्बोधित करता हुआ बोला—

कि हर कस दारद दिलश रौशन अस्त
दरम पीश ए उ चुन यकी जौशन अस्त

(जिसके पास दौलत है, उसके दिल मे गर्मी है। दौलत कवच के समान आदमी की रक्षा करती है।)

कजूस यहूदी ने शराब का दूसरा घूट भरा और बडी मस्ती मे कहा

कसी को नादारद बुअद ख ुश्क लब
चुनान चुन तुई गुरसने नीम शब

(जिसके पास पैसा नही, उसके होठ सूखे रहते हैं और ठीक तेरी तरह वह आधी रात को भूखा सोता है।)

बहराम शाह ने कहा—"तुम्हारी दिलचस्प बातें मुझ याद रहेंगी।"

सुबह हुई तो बहराम शाह ने घोडे पर जीन कसी और चलने की तैयारी करने लगा। यहूदी कजूस लपकते हुए बहराम शाह के समीप पहुचा और बोला—"तुझे याद नही कि तूने वायदा किया था कि घोडे की लीद साफ करके जगल मे फेंक आएगा। मुझे तेरा जैसा मेहमान बिल्कुल पसन्द नही है।"

बहराम शाह ने कहा—"तुम इस लीद को किसी से साफ करा दो, मैं उसको पैसा दे दूगा।"

यहूदी कजूस बोला—"मेरे पास कोई आदमी नहीं है जो लीद साफ करके फेंक आए।"

बहराम शाह ने जब उसका जवाब सुना तो उसके दिमाग़ मे एक तरकीब आई। उसने अपना रेशमी रूमाल जो इत्र से बसा हुआ था, निकाला और उससे लीद उठाकर दूर फेंक दी। यहूदी कजूस रेशमी रूमाल के पीछे भागा और लीद झाडकर वह रूमाल उठा लिया। बहराम शाह उसकी यह हरकत देखकर ठगा-सा रह गया।

"अगर तुम्हारी इस हरकत के बारे मे ईरान के शाह को पता चला तो वह तुम्हें दरबार मे जरूर ऊची पदवी देकर इतनी धन-दौलत देंगे कि तेरा दिल दुनिया की हर चीज से भर जाए।" इतना कहकर बहराम शाह महल

लौट आया। सारी रात वह चिन्ता मे डूबा रहा। मगर इस भेद को किसी पर जाहिर नही किया।

सुबह हुई तो उसने लम्बक सक्का और बराहाम यहूदी कजूस को अपने दरबार म बुलाया। साथ ही यह हुक्म भी दिया कि एक ईमानदार आदमी यहूदी के घर जाए और उसका सारा माल जो उसके घर मे मौजूद हो उसे तथा यहूदी कजूस को लेकर दरबार मे हाज़िर हो।

जब वह ईमानदार आदमी यहूदी के घर पहुचा तो घर के हर कमरे को सोने चादी, कालीन और कीमती वस्तुओ से भरा पाया। माल-असबाब इतना ज्यादा था कि उसकी गिनती करना मुश्किल था। उसने हज़ार ऊटो पर वह सारा सामान लदवाया और बादशाह के हुज़ूर मे लाया। फिर बहराम शाह को बताया—"हुज़ूर! इतनी दौलत तो आपके खज़ाने मे भी नही है। अब भी जो कुछ वहा रह गया है, उसको दो सौ गधो पर लादा जा सकता है।"

बहराम शाह इतनी धन दौलत देखकर आश्चयचकित रह गया और सोच में पड गया। उसने सौ ऊटो पर लदा सामान लम्बक सक्का को इनाम में दे दिया और यहूदी कजूस को सम्बोधित करता हुआ बोला कि रात तुम्हारे घर म जो सवार मेहमान था, उसने मुझे तुम्हारी बातें बताई थी कि—

कि हर कस कि दारद फजूनी खुरद
कसी को नदारद हमी पश मुर्द

(जिसके पास होता है वह शेर होकर खाता है और जिसके पास कुछ नही होता वह यू ही तरसता है।)

बहराम शाह ने इतनी बात कहकर यहूदी कजूस के चेहरे को देखा और कहा कि—

कनून दस्त याअज़ आन जे खूरदन बेकश
बेबीन जीन सपस खूरदन आब कश

(अब तुम खाने से अपना हाथ खीच लो और आज मे सक्का के खाने को ताकते रहो।)

इसके बाद बहराम शाह ने यहूदी कजूस को रात की एक-एक बात याद दिलाई और उसके हाथ पर चार दरहम रखते हुए बोला—"जाओ इससे अपना गुजारा करो।"

बेचारा यहूदी कजूस वहा से रोता-पीटता हुआ चल दिया।

शतरंज की पैदाइश

भारतवर्ष के नगर सन्दल में जमहूर नाम का एक राजा राज करता था। उसका साम्राज्य बसंत व कश्मीर से लेकर चीन तक फैला हुआ था। राजा के पास अथाह धन और बड़ी फौज थी। हर जगह उसके नाम डंका बजता था।

हुमान बादशाह बूद, बर हिन्दुआन
खिरदमन्द व बीना व रौशन खान

(हिन्दुस्तान का यह बादशाह बहुत बुद्धिमान, सूक्ष्म दृष्टि और खुले विचार रखने वाला था।)

प्रजा उसका बहुत आदर करती थी। आखिर राजा के यहां एक पुत्र ने जन्म लिया जिसका नाम उसने गव रखा। कुछ दिनों बाद राजा बीमार पड़ा और उसने महारानी से अपनी अंतिम इच्छा कही कि मेरे बाद मेरा बेटा राजा होगा।

राजा के देहान्त के बाद फौजी और सरकारी लोग जमा हुए। औरत, मर्द, बूढ़े, जवान सभी सलाह मशविरे के लिए बैठ गए। सबकी एक ही राय थी कि छोटा-सा बच्चा कुछ नहीं जानता, न फौज को काबू में रख सकता है और न न्याय कर सकता है और न खुद राजसिंहासन पर बैठ सकता है और न सिर पर मुकुट रख सकता है। इसलिए सब लोग इस परिणाम पर पहुंचे कि अगर किसी उचित व्यक्ति को राजा न बनाया गया तो सारे राज्य में अशान्ति फैल जाएगी। अन्त में तय पाया गया कि राजा के भाई 'माय' को, जो नगर दनबर का शासक है, बुलाया जाए और उसे राजगद्दी दी जाए। माय अपने शहर से सन्दल आया और राज्य की बागडोर संभाली। उसने अपने मृत भाई की पत्नी को अपनी रानी बना लिया। कुछ समय पश्चात् माय से भी एक पुत्र तलहन्द नाम का पैदा हुआ। माय उससे बहुत प्रेम करता था लेकिन अभी तलहन्द दो साल और गव

साल सात का हुआ था कि माय बीमार पडा और दो हफ्ते बाद ही उसकी मत्यु हो गई।

सदल के लोगों को माय की मौत का बहुत दुख हुआ। एक मास तक सब उसकी मौत का दुख मनाते रहे। इसके पश्चात् फौज के अफसर और शहर के बुद्धिमान लोग जमा हुए और नये राजा के बारे मे परामर्श करने लगे। आखिरकार सबने यह तय किया कि जब तक दोनो राजकुमार छोटे है, खुद रानी राज्य का काय सम्भालेगी। सारे लोग रानी के न्यायप्रिय स्वभाव के प्रशसक थे और उसे राजसिंहासन के लिए योग्य भी समझते थे, इसलिए लोग रानी के सम्मुख उपस्थित हुए और कहा कि यह साम्राज्य आपके दोनो बेटो का है, लेकिन जब तक वे बडे नही होते, तब तक आपको ही राज-काज देखना पडेगा। जब वे बडे हो जाएंगे तो राज पाट उनके हाथ सौंपकर स्वय उनकी मत्री बन जाइएगा। रानी ने प्रजा की बात मान ली और राज-पाट सभाल लिया।

बदोशान सिपुर्द आन दो फरज़न्द रा
दो मेहतर निजाद खिरदमन्द रा

(उसने दो चतुर ब्राह्मणो को अपने बेटो की शिक्षा-दीक्षा के लिए नियुक्त किया।)

समय गुजरता गया। धीरे धीरे उसके बेटे बडे हो गए। कभी-कभी वे अपनी मा से पूछते कि हममे से कौन अच्छा है? मा जवाब देती—"तुममे से जो ज्यादा बुद्धिमान्, पवित्र और ईमानदार है, वही अच्छा और महान् है।" फिर वे यह पूछते कि यह देश किसका है? यह धन-दौलत, यह तख्त-ताज किसके हिस्से मे आएगा। मा दोनों से अलग-अलग कहती—"यह देश, यह तख्त व ताज तेरा है।" इस उत्तर से दोनो बेटे अपनी अपनी जगह प्रसन्न हो जाते परन्तु धीरे धीरे उनके दिलों मे ईर्ष्या की आग भडकने लगी और वे तख्त-ताज के लिए अधिक चिन्तित रहने लगे। कभी कभी मन-ही मन उदास भी हो जाते। आग पर तेल का काम उनके साथी करते थे। वे भड़काते हुए कहते कि अपनी मा से जाकर पूछो कि तुममे से कौन अच्छा और लायक है और बुरे-भले समय मे सतोष, शांति और सद्बुद्धि से काम ले सकता है?

आखिर एक दिन मा न कहा, "शहर के बुद्धिमान और सहृदय लोगो को बुलाकर परामर्श करो कि इन दोनो बेटों मे से कौन तख्त ताज का अधिकारी बनने के लिए न्यायप्रियता एव अन्य गुणो से युक्त है। यू तो हिसा से राज का नाश ही हो जाएगा।" मा की बात सुनकर बडा बेटा गव बोला—"मा, सच-सच बताओ—बहाने मत बनाओ। अगर मैं राज की बागडोर, सम्भालने के लायक नही हू तो राजा तलहन्द को दे दो। मैं छोटे भाई की तरह उसकी सेवा करूगा। लेकिन यदि मैं आयु और बुद्धि म तलहन्द से बडा हू और अपन पिता का सच्चा बेटा हू तो तलहन्द से कह दो कि वह राजगद्दी पर नजर न लगाए और इस बात को दिल पर अधिक न लगाए।"

मा ने समझाते हुए कहा—"राजकाज के लिए ज्यादा दुखी न हो। यह नश्वर ससार किसी का नही है। तुम्हारा बाप राजा जमहूर कितना अच्छा आदमी था, पर वह मर गया। उसके बाद तेरा चाचा तख्त पर बैठा। कुछ समय पश्चात् वह भी चला गया। तू बडा है, ज्यादा सूझ-बूझ वाला है, फिर क्यो बिना वजह कुढ़ता है।" मा ने दुखी होकर उससे आग कहा कि "मेरी मजबूरी यह है कि अगर तुममे से एक को राजपाट दती हू तो दूसरा मेरा शत्रु बन जाएगा और फिर खून खराबे पर उतर आएगा। लेकिन मरा कहना है कि इस नश्वर ससार के लिए खून-खराबा करन स क्या लाभ है।'

इधर तलहन्द यह सोचता कि मा गव का साथ दती है। वह मा स कहता—"ठीक है, गव मुझसे आयु मे बडा है। लेकिन मुझसे अच्छा नहीं। अफसोस कि मेरा पिता जवानी म मर गया और मुझे तख्त-ताज का स्वामी न बना सका। मा, तरा मन तो गव म लगा है और तू उसी को आग बढ़ाना चाहती है।"

मा ने सौगन्ध खाई कि उसके मन म एसी कोई बात नहीं है। लेकिन उसने देखा कि समझाने-बुझान से कोई लाभ नही है। इस कारण उसने दूसरी राह अपनाई। उसने देश भर के बुद्धिमान् लोगो को इकट्ठा किया। उनके सामने दोना राजाओ म खजान की कुजिया रख दीं और उन्ह बताया कि दोनों बेटे राज-पाट के बार मे क्या सोचते हैं। गव न तलहन्द स कहा—"तुम्हें मालूम है कि मेरा बाप जमहूर तुम्हारे बाप 'म.म' स उम्र और असर

मे बडा था, लेकिन माय भी सज्जन आदमी था, क्योंकि बड़े भाई के जीते-जी उसने कभी तख्त-ताज की ख्वाहिश नही की और बडा बनने की कोशिश नहा की। लेकिन अगर तुम राजसिंहासन पर बठोगे और मैं छोटे भाई की तरह तुम्हारी सवा करूगा तो यह उचित नही होगा। अच्छा यही है कि हम च द अक्लमन्दो को इकट्ठा करें और व जो फसला करें, उसे हम मान लें, क्योंकि वे लोग हमसे अधिक बुद्धिमान् है।"

इसके पश्चात गव और तलह्‌द की तरफ से एक एक विद्वान् चुने गए। दोनो वार्तालाप करने लगे। गव की तरफ का विद्वान् बोला कि सदल का तख्त-ताज गव को मिलना चाहिए। मगर तलह्‌द की तरफ का आदमी तरह-तरह की दलीलें पेश कर रहा था। परिणाम यह हुआ कि परामश की जगह व एक-दूसर स लडने लगे।

आखिरकार महल मे दो तख्त बिछाए गए। गव और तलह्‌द उन पर बैठे और उनका अपना अपना विद्वान उनकी दाहिनी तरफ विराजमान हुआ। उन्होंने राज्य के सार बुद्धिमानो को जमा किया और तख्त के दाहिनी और बायीं ओर बिठाया। विद्वानो ने पूछा कि आप लोग दोनो राजकुमारों म स किस राजा बनाना चाहत है ?

सबन कहा कि किसी एक को राजा बनाना मुश्किल है। इससे बात लडाइ तक पहुँचेगी और राज्य के दो टुकडे हो जाएग जिससे लोगो का नुकसान होगा। इसलिए उन्होंने तय किया कि एक सस्था बनाकर परस्पर इस गुत्थी को सुलझा लेंगे। जो तय होगा उसी के अनुसार दोनों राजकुमारो में स एक को राजा बना दिया जाएगा।

यह कहकर विद्वान् और बडे-बूढे लोग महल से बाहर निकले। उनके मन उदास और चेहरे उतरे हुए थे। वे लोग सारी रात परामश करते रहे लेकिन किसी परिणाम पर नहीं पहुचे। सुबह को सारे नगर मे इसी बात का चचा थी।

एक तरफ कुछ लोग गव को राजा बनाना चाहते थे तो दूसरे तलहन्द को। तलहन्द क मानने वाल गव को गाली दे रह थे और गव के तरफदार उस पर बात दन को तैयार थ। इस प्रकार सार सन्दल राज्य म अशांति फैल गई। सच है, जब किसी घर म दो हुक्म चलने लगें तो घर बरबाद हो

जाता है।

कुछ लोगो ने यह उपाय निकाला कि दोनो राजकुमारो को अलग-अलग राज दे दिया जाए ताकि वे अपने लालच और अह की खातिर देश को बर्बाद न करें। परन्तु दोनो राजकुमारो का मस्तिष्क तो युद्ध की गर्मी से उबल रहा था और मुखो पर नफरत की छाया मडरा रही थी। दोनो एक-दूसरे से सधि करने और नम्रता का व्यवहार करने के लिए कह रहे थे। अन्त में सलाह-मशविरा कुछ काम न आया और युद्ध के अतिरिक्त कोई दूसरी राह नही बची।

अब गव और तलह्द के तरफ्दार तेजी से युद्ध की तैयारिया करने लगे। तलहन्द ने पिता के खजाने का मुख खोल दिया, सिपाहियो को सोना और कवच दिए और स्वय भी हथियारो से सुसज्जित लडने के लिए तैयार हो गया। गव ने भी फौजी वस्त्र पहने, बाप की आत्मा का पुण्य स्मरण किया और रणक्षेत्र के लिए तैयार हो गया। हाथिया पर हौदे रखे गए। युद्ध का नगाडा बज उठा।

गव और तलह्द दोना ने दो मील के फासले पर अपनी अपनी फौजें आमने-सामने खडी कर ली। दोनो राजकुमार हाथी पर सवार होकर रण-क्षेत्र मे आए। उनके आगे-आगे पैदल सिपाही भाले और ढाल लिए हुए थे। गव को यह सोचकर बडा दुख हो रहा था कि रणक्षेत्र म कितने बेगुनाह मारे जाएगे। इस विचार के आते ही उसने फिर भाई के पास सन्देश भेजा—"अब भी समय है, युद्ध का विचार छोड दे। बहकावे म आकर सत्य माग को छोडकर ऐसा काम न करो जिससे हमारे पूवजों की धरती वीरान हो जाए और शेर-गीदड आ बसें। अगर तू सधि कर ले और यहां से दूर जा बसे तो मैं तुझे अपार धन व दौलत दूगा और तुझे जान से अधिक प्यार करूगा। यदि तू युद्ध पर तुला है तो इसाना की बरबादी और दुख और पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं लगेगा।"

तलह्द को भाई का जब यह सन्देश मिला तो उसने कहलवाया—"युद्ध मे बहानेबाजी से काम नही चलता। तू न मेरा भाई है, न मेरा मित्र और न मेरे परिवार का सदस्य। युद्ध तूने शुरू किया है, मैंने नहीं। इसका पाप तेरी गर्दन पर होगा। बदनामी और पछतावा तेरे हिस्से मे आएगा। रह

गई तेरे दान की बात कि तू मुझे तख्त और ताज देगा तो सच्चाई यह है कि अगर तरे राज्य मे से कोई जागीर या इनाम स्वीकार करू तो भगवान मेरा अन्त शीघ्र करे।"

तलहन्द ने सन्देशवाहक से कहा—"मैं योद्धाओ को लेकर रणक्षेत्र मे उतार रहा हू ताकि गव को हाथ बाधकर बन्दी बनाऊ और योद्धाओ को मौत के घाट उतारू।"

भाई की बात सुनकर गव के मन को दुख पहुचा और बुद्धिमान् सलाहकारो के कहने के बाद भी उसने कोई सख्त कदम नही उठाया और भाइ को समझा बुझाकर युद्ध से विरत करने की कोशिश की। उसने दोबारा सन्देश भेजा कि "भाई भाई का लडना ठीक नही है। हमारे चारो तरफ शत्रु हैं। अगर हमने युद्ध किया तो चीन से लेकर कश्मीर तक के बादशाह सब ही हमे बुरा भला कहगे। अब भी तू मेरे पास आ जा। मैं तुझे हीरे जवाहरात, घोडे-हाथी सब कुछ दूगा। मुझे तुझसे युद्ध करने की इच्छा नही है।"

लेकिन तलहन्द ने फिर कडा उत्तर दिया—"मैंने तेरी बकवास सुन ली है। तू कौन है, जो मुझे धन-दौलत देने का वायदा कर रहा है ! खजाना और बल मेरे पास है। धरती और आकाश पर मेरा राज है। लेकिन तू जो यू बढ-बढकर बातें बना रहा है तो लगता है—चीटी के पर निकल आए हैं। चूकि तू खाई मे गिरने वाला है इसलिए चिकनी-चुपडी बातें करके मुझे युद्ध से रोकना चाहता है। अब युद्ध की तैयारिया कर, विलम्ब ठीक नही।'

लाचार गव युद्ध के लिए तैयार हो गया। प्रात जब सूरज निकला तो दोनो फौजें आमने-सामने खडी हो गई। दोनो राजकुमार अपनी-अपनी फौज के बीच मे थे। उनके करीब उनके बुद्धिमान् सलाहकार थे। गव ने कहा—"मेरी फ़ौज का कोई वीर आक्रमण मे पहल न करे बल्कि जहा खडा है, वहीं अलम (पताका) को उठाए खडा रहे, युद्ध मे जल्दी करना बुद्धिमानो का काम नहीं है। हम यहीं ठहरकर देखेंगे कि तलहन्द अपनी फौज को लेकर कसे आगे बढता है। हमने उसे समझाने बुझाने मे कोई कोर-कसर नही छोडी। मगर अफसोस, उसने हमारी बात न सुनी। यदि इस युद्ध मे भगवान् की कृपा से हमने विजय प्राप्त की तो खबरदार कोई योद्धा केवल

धन के लालच म किसी योद्धा को न मारे। अगर हमारे वीरो म स कोई फौज क बीच मे पहुच जाए और तलह्न्द पर काबू पा ले तो हरगिज उसे हानि न पहुचाए।"

सारी फौज ने गव को अपनी आज्ञाकारिता का विश्वास दिलाया। इधर तलह्न्द अपनी फौज स कह रहा था— 'यदि भाग्य से हम इस युद्ध मे विजय मिलती है तो तुम लोग एक-एक योद्धा को मौत के घाट उतार देना। गव यदि बन्दी बन जाए तो न तो उसे मारना, न बुरा भला कहना, बल्कि उसे घसीटते हुए मेरे पास ले आना।" युद्ध आरम्भ हो गया। आखिर दोनो राजकुमार अपने-अपने वीरो के बीच से बाहर निकले और सध्या तक खून-खराबा करते रहे। सध्या को गव ने तलहन्द के सिपाहियो से कहा—"तुम लोगो म से जो भी मेरी तरफ आ जाएगा उसको मैं जीवन दान द दूगा।"

यह एलान सुनकर तलह्न्द के बहुत सारे सिपाही गव की ओर आ गए। बहुत मार गए, बहुत सारे इधर उधर भाग गए। तलहन्द अकेला रह गया था। गडरिया रह गया था, जानवर भाग गए थे।

तलह्न्द को तन्हा दखकर गव ने फिर कहा—"भाई अब भी तू अपने महल वापस हो जा और अपनी जागीर की देख भाल कर, जहा तक मेरा सम्बन्ध है, मैं तुझे कोई दु ख नही दूगा।"

तलह्न्द भाई की इस बात को सुनकर मन ही-मन क्रोध से उफन गया। अन्त म वह रणक्षेत्र से भाग खडा हुआ। एक सुरक्षित स्थान पर पहुचकर, उसने फिर अपने सिपाहियो को जमा किया, उन्हे इनाम दिए। उनकी तरफ से जब उसे सतोष हो गया तो उसने गव को फिर पगाम भिजवाया कि यदि हिम्मत है तो शेर की तरह दोबारा रणक्षेत्र म आओ। इस चुनौती को केवल गीदड भभकी मत समझना।

गव को दोबारा तलह्न्द का यह कडा सन्देश मिला तो उस बहुत कष्ट पहुचा। फिर भी उसन नम्रता का परिचय दिया। प्रेमपूवक वार्तालाप किया और भाई को सन्धि के लिए आमन्त्रित किया। परन्तु साथ-ही-साथ कहलवाया भी कि 'यदि तू अब भी युद्ध के लिए हठ करता है तो मैं तयार हूँ लेकिन इस बार हम लोग दूर समुद्र के किनारे युद्ध करेंगे और फ़ौज के चारो तरफ खन्दक खोदेंगे ताकि फौज घिराव म रहे और पराजय

के बाद भाग न सके।"

तलहन्द ने अपनी फौज के जनरलों को बुलाया। उनके सामने गव का नक्शा रखते हुए बोला—"जब लड़ना ही है तो क्या जंगल और क्या बियाबान, क्या दरिया और क्या सहारा, क्या पहाड़ और क्या मैदान। अगर हमारी जीत हुई तो मैं तुम सबको धन से मालामाल कर दूंगा।"

तलहन्द और गव की फौजें समुन्दर की तरफ चलीं। दोनों भाई आमने-सामने पंक्ति बांधकर खड़े हो गए। खन्दक खोदकर उसमें पानी भर दिया गया। राजकुमारों ने अपनी अपनी फौज की कमान संभाली। वह घमासान लड़ाई हुई कि धूल से वातावरण धुंधला गया। समुन्दर में भूकम्प-सा आ गया। रणक्षेत्र का अजीब दृश्य था। कहीं किसी का पेट फटा पड़ा था तो कहीं किसी का सर कटा पड़ा था। चारों ओर मानव के कटे अंगों का बिखराव था। धरती खून के कीचड़ से लथपथ थी, घोड़ों की टापें इस खूनी कीचड़ से सनी हुई थीं।

तलहन्द ने अपने हाथी पर बैठे हुए दूर-दूर तक दृष्टि डाली तो सारा मैदान खून में डूबा दिखा। अब उसके पास न तो भागने की कोई राह थी और न बचने की कोई तरकीब। उसने समझ लिया कि वास्तव में वह फंस गया है और उसका समय निकट आ गया है। यह सोचकर उसका दिल डूब गया और इसी दुःख में वह अपने हौदे के तख्त पर लेट गया, लेटते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।

गव ने देखा कि तलहन्द का झण्डा नजर नहीं आ रहा है। उसने एक सवार को भेजा कि आगे बढ़कर पता लगाए कि तलहन्द कहां है। सवार ने वापस आकर बताया कि राजकुमार का कहीं पता नहीं है। यह सुनकर गव घोड़े से उतर पड़ा और रोता हुआ शत्रु की फौज की तरफ पैदल चल पड़ा। वहां जाकर उसे मालूम हुआ, तलहन्द मर चुका है और उसके सिपाही शोक में डूबे हुए हैं। गव ने सुना तो एक हृदय विदारक चीख मारी और कहने लगा कि—

हमी गुफ्त जार एइ नबर्दह जवान
बे रफ्ती पुरअज दर्द व खस्ते रवान
तोरा गर्दिशे अख्तर बद बे कुश्त
व गरना निजदे बर तो बादी दरुश्त

वे पेचीद अज़ आमूज़गाराने मरत
तो रफ्ती व मिसकीन दिले मादरत
बख़ूबी वसी रा देहअम व तो पन्द
नयामद तोरा पन्दे मन सूद मन्द

(ए बहादुर, तू इस ससार स इस तरह गया कि तेरे दिल पर घावो का बोझ और आत्मा पीडा से बोझिल थी। तरे ग्रह खराब थे जो तुझे मौत आ गई, वरना जीते-जी तुझे हवा का तेज़ झोका भी न लगा था। अफसोस ! तूने समझान बुझान वालो की बात पर ध्यान न दिया। आज तेरी मा का दिल कितना दुखी होगा। आह, मैंने तुझे कितने उपदेश दिए परन्तु तूने मेरा एक भी शब्द न माना।)

इतने मे गव का परामशदाता आ गया और राजकुमार को तसल्ली देने लगा। गव ने आज्ञा दी कि तलह्न्द के लिए हाथी-दात और हीरे-जवाहरात का एक ताबूत तयार किया जाए। इस पर चीनी रशम की चादर डाली जाए और उसका दरवाजा इत्र व काफूर स बन्द किया जाए। इससे निबटकर उसने तलह्न्द के सार सिपाहियो को क्षमा कर दिया।

□□

इधर रानी ने जब सुना कि दोनो राजकुमार फिर युद्ध कर रहे हैं तो उसने अन्न-जल छोड दिया। उसने एक सन्देशवाहक को नियुक्त किया ताकि वह रणक्षेत्र क समाचार लगातार लाता रहे। जब वातावरण की धूल कुछ कम हुई तो सन्देशवाहक ने देखा कि गव की पताका तो दिख रही है परन्तु तलह्न्द का कही पता नही है। उसने रानी के समीप एक सवार को दौडाया कि तलह्न्द शायद रणक्षेत्र मे काम आ गया है।

जब रानी को यह समाचार मिला तो वह खून के आसू रोई। उसने अपने कपडे फाड डाल और बाल नोच डाले। सार महल म कोहराम मच गया। रानी न आज्ञा दी कि एक चिता तैयार की जाए ताकि वह हिन्दू रिवाज के अनुसार सती हो सके।

गव को जब पात हुआ कि उसकी मा सती होने जा रही है तो वह हवा से बातें करता मा के पास पहुचा और रो रोकर कहा—"मा ! पहले

मेरी बात तो सुन लो। तलह्‌द को न मैंने मारा है और न मेरे किसी सिपाही ने, बल्कि उसको उसकी बदकिस्मती ने मारा है।"

मा को गव की बातों पर तनिक भी विश्वास न हुआ। उसने कहा—"तू दुष्ट है और अपने भाई का हत्यारा है।" गव ने सफाई देते हुए कहा—"मा! जरा धीरज से काम लो, तुझे ले चलकर रणक्षेत्र दिखाऊंगा और साबित करूंगा कि तलह्‌द की मृत्यु मे मेरा कोई दोष नही है। बस उसके दिन पूरे हो गए थे लेकिन यदि तुझे विश्वास नही है तो मैं इस आग मे जलकर स्वयं को भस्म कर दूंगा ताकि मेरे शत्रुओ का कलेजा ठण्डा हो जाए।"

रानी ने बेटे की बात सुनी तो सोचने लगी—"एक बेटा तो गया। अब दूसरा भी चला जाएगा तो मैं कही की नही रहूंगी और वह भी ऐसा बहादुर जवान है।" ठहरकर गव से बोली—"तलह्‌द हाथी पर कैसे मरा, चलकर दिखा ताकि मुझे विश्वास हो जाए और मेरे मन को शान्ति मिल।" गव अपने महल मे गया। उसने अपने दूरदर्शी सलाहकार को बुलाया और उसको अपनी बातें बताई। आखिर देश-भर के बुद्धिमान्, क्या जवान, क्या बूढे, जमा हुए ताकि वे रणक्षेत्र का नक्शा बना सकें। गव ने युद्ध का सारा विवरण दिया। उन लोगो ने सारी रात विचार किया। इसके बाद आबनूस की लकडी का एक तख्ता बनाया जिसमे सौ खाने थे और उन खानो मे आमने सामने दो बादशाहो की फौजें हरकत करती हुई दिखाई गई थी। दोनो फौजो मे से एक के योद्धा सागौन की लकडी के बने थे। दूसरे हाथी दांत के बने थे। बादशाह, वजीर, घोडा, हाथी और प्यादा आमने-सामने रखे गए। हर बादशाह अपनी फौज के बीच मे था। उनके पहलू मे उनका मन्त्री था और उनके दायें-बायें एक-एक ऊंट, एक एक घोडा था। मानो उनमे सिर्फ दो मर्द थे।

प्यादा बे रफ्ती जे पीश व जे पस
कि उ बुअद दर जंग फरियाद रस
चू बेगुजश्ती ता सर आवुरदेह गाह
निशस्ती चू फरजाने वर दस्ते शाह
हुमान मर्द फरजाने एक खाने पीश
नरफ्ती वे जंग अज्ज वर शाहे खीश

(प्यादा आगे भी चलता और पीछे भी क्योंकि युद्ध मे उसकी स्थिति सदेशवाहक की-सी थी। लेकिन जब वह हाथी के दूसरे कोने तक पहुच जाता तो मत्री की तरह बादशाह के करीब स्थान पा जाता है। फिर यही मत्री बादशाह के पास से युद्ध के कारण एक खाने से ज्यादा नही जाता।)

इस तरह से ऊचे सर वाला हाथी तीन खान चलता था और जसे दो मील की दूरी से सारे रणक्षेत्र पर नजर दौडाता था। इसी तरह से ऊट भी तीन खाने चलता था और घोडा भी तीन खाने चलता। मगर एक मे वह बेगाना-सा रहता। हाथी शत्रुता से सारे रणक्षेत्र मे धावा बोलता हुआ चारो तरफ चलता था। हर मोहरा अपने-अपने मैदान मे चलता था और उसमे कोई कमी या ज्यादती न करता था। जब कोई बादशाह क मुकाबले मे आता तो चिल्लाकर कहता कि ए बादशाह! मैंने बाजी जीत ली है। तब बादशाह अपने खाने से आगे बढ जाता और उसी तरह ऐसी जगह भी पहुच जाता जहा से आगे बढने का कोई रास्ता न रहता। इसके बाद हाथी, घोडा, मत्री और प्यादे मिलकर बादशाह की राह रोक लेते हैं। अन्त मे थक-हार कर बादशाह की मौत हो जाती है और वह ससार के चक्करा से स्वतन्त्र हो जाता है।

शतरज के इस खेल का अथ था कि रणक्षेत्र मे तलहन्द की स्थिति और उसकी मृत्यु को समझाया जा सके। रानी ने ध्यान से खेल देखा मानो उसने अपनी आखो के सामने तलहन्द की मौत को देख लिया हो। इसके पश्चात वह रात दिन शतरज की चौपड पर मोहरो को देखती रहती। उसकी आखें मूसलाधार बरसती। तलहन्द की मौत ने उसको गहरा दुख पहुचाया था, जिस पर शतरज का खेल मलहम का काम करता था।

□□